सफ़र-दर-सफ़र

धर्मेन्द्र गुप्त

सफर वह नही है, जो
मील के पत्थरो को
गिनते हुए
किया जाये,
सफर वह है, जो
किन्ही आत्मीय क्षणो से जुडकर
बार-बार जीने की
प्रेरणा दे।

शाम का अंधेरा धीरे धीरे घना होता जा रहा। गंगा पार है झूसी कस्बा। कटाव को रोकने के लिए झूसी कस्बे के किनारे किनारे ऊंचा बांध, बांध दिया गया है। इसी बांध के किनारे किनारे रोप दिये गये सदेफे के पेड, जो देखते ही देखते आकाश को छूने लगे। दूर से एक हरी दीवार सी बांध पर खडी दिखाई देती। दूर दूर तक गंगा का चौडा पाट फैला हुआ है। गर्मी का मौसम शुरू होने से पहले ही मीलो फैली इस रेती मे ककडी, खरबूज तरबूज की बेलें फैल जाती। जगह-जगह खेत के रखवाले छोटी छोटी फूस की झोपडी डाल लेते। अधिकतर गंगा शहर के किनारे को छूकर ही बहती, लेकिन कहने वाले कहते हैं कि बारह साल मे एक बार गंगा झूसी के किनारे को छूकर भी बहने लगती हैं। तब झूसी कस्बे के निवासियो को सुविधा हो जाती। गंगा नहाने के लिए चार कदम ही चलना पडता। हां, शहर वालो को ऐसी अवस्था मे एक मील से ज्यादा गंगा की रेती मे पैर धसाते हुए गंगा के पवित्र जल मे स्नान करने के लिए आना पडता। गंगा नहाने के लिए आते-जाते भक्तगण थक जाते बूढे हांफने लगते, मन-ही मन झुंझलाते, लेकिन गंगा माता को कोई दोष नही देता। यह तो गंगा माता की मर्जी है चाहे जहां बहे। चाहे शहर के किनारे को छूकर बह, चाहे झूसी के बांध को छूकर कल-कल करती हुई आगे बढती जायें। कही भी बहे गंगा, मनुष्य के लिए तो हर हालत म वह पूज्य हैं।

झूसी से कस्बे को जोडने के लिए बरसात के तीन महीना को छोडकर शेष पूरे साल म नगर निगम की ओर से लोहे के पीपा का पुल बना दिया जाता है। पुल पर चलने म तो बडा आनन्द आता है। जरा सा दबाव पाकर पीपे पानी म धस जाते हैं फिर दबाव हटने म ऊपर उठ जाते हैं। सी-सा

का खेल होने लगता है ।

प्रात गगा किनारे अच्छा शोर मच जाता है। गर्मियो मे तो विशेष रूप से भक्तो की भीड दिखाई देती है। पण्डे अपने-अपने तखत डाल कर बैठ जाते है। हर तखत के साथ ही एक झण्डा विशेष भी लगा होता है। अपने-अपने जजमान को बुलाते हैं, या जजमान खुद ही झण्डे की पहचान से खिचा चला आता है। लेकिन यह सब तो बाहर से आने वाला के लिए है। शहर का स्नानार्थी तो कही भी रेत पर धोती कुर्ते उतार के रख देता है और जै हो गगा मइया कहकर गगा के जल मे घुस जाता है। सूय उगने से पहले तक तो पक्षी भी झुण्ड के-झुण्ड आ जाते है, खास तौर पर कौवे। पिण्ड दान करके छोडे गये आटे के गोल गोल लुगदो को खाने मे पक्षियो को बहुत आन द आता।

शाम के समय गगा किनारे सुबह की तरह शोर नही होता। दो चार नहाने वाल आते भी है, तो दिन छिपने स पहले ही घर को लौट जाते। पण्डो के तख्त भी खाली पडे रहते। एक आध कल्पवासी अवश्य गगा किनार झापडी डाले रहत। लेकिन उनका होना न-हाना कोई मान नहीं रखता, क्याकि वह कल्पवासी है, मौन रहना कल्पवास का पहला गुण है। शाम का अ धरा जब धीरे धीरे चारा ओर छाने लगता तो गगा का किनारा और भी शा त हो जाता। बस लहरा का हल्की आवाज मे उठना गिरना, या फिर धार का तेज रूप म कल कल करते हुए बहना ही सुनाई देता।

इस समय भी शाम का हल्का अ धेरा चारो ओर छाने लगा था। दूर बाध पर खडे पेड अस्पष्ट होते जा रहे थे। मोहन को अपने आसपास छाता जा रहा धुधलका अच्छा लग रहा था। बार-बार गगा की रेत को मुट्ठी मे ब द करने के लिए मुट्ठी ब द करता, मगर रेत तो हर बार अपने निकलने का रास्ता खोज लेती, मुट्ठी खाली ही रह जाती। रेत से खेलते हुए मन मे ताजगी आ जाती। शा त गगा का किनारा दिन भर की थकावट दूर कर देता। रेती पर से उठने को मन नहीं करता, मगर उठना तो होगा ही। रात घिर जाने से पहले ही मोहन को अपनी कोठरी म पहुच जाना चाहिए।

शाम के समय गगा किनारे बठने का यह सुख भी मोहन को रोज

नसीब नही होता। बस मगलवार की शाम को ही आ पाता है। मगलवार को बाइण्डिग हाउस बन्द रहता है। शाम का समय खाली रहता। पैसा जेब मे हो तो शाम का खाली समय बिताने के लिए सिविल लाइन्स के किसी रेस्त्रा, किसी थियेटर, किसी पार्क, या ऐसी ही किसी दूसरी जगह की शरण ली जा सकती है, पर जब जेब खाली रहती है तो फिर गगा का किनारा ही सुख दे सकता है।

झूसी की तरफ से एक कार आई और पीपो के पुल पर से गुजरती चली गई। पीपो का पुल कार की बोझ से गगा जल मे धसा, जल उठकर पीपो से टकराया, और फिर सब शान्त हो गया। गगा पुन अपनी रफ्तार से बहने लगी। मोहन उठकर खडा हो गया। कपडो पर लगी रेत झाडी चप्पल पहनी, वापस अपनी कोठरी की तरफ चल दिया। कई फर्लांग रेत म चलना होगा तब कही जाकर गगा का चौडा पाट खतम होगा और शहर के छोर की आबादी शुरू होगी। बरसात मे गगा के विकराल रूप के कारण ही किनारे पर दुमजिले ही नही तिमजिले मकान बने हुए हैं। पहली बरसात म ही, मकानो की पहली मजिल में पानी घुस आता है। दूसरी और तीसरी मजिल पर रहने वाले सुरक्षित रहते है। सुरक्षित ही नही आनन्द उठाने की स्थिति मे भी आ जाते हैं। अपने कमरे के आगे छज्जे पर खडे होकर सामने मील से भी ज्यादा चौडे गगा के पाट का देखना अपने म एक नया अनुभव होता है, एक रोमाच। बाहर से आने वाला व्यक्ति तो आखे फाडे बरसाती गगा के इस रूप को देखता रह जाता है। विश्वास ही नही होता कि बरसात बीतने के बाद गगा फिर एक छोटी नदी का रूप ले लेगी जिसके दोनो ओर लम्बा-चौडा रेत का मदान नजर आयेगा। बरसात म तो समुद्र के समान लहरें उठती गिरती रहती हैं। और पीपो का पुल हट जाने से जो बडी बडी नावो पर लोगो को इधर से उधर ढोया जाता है वह तो और भी आश्चर्य जनक है। डर नही लगता, बरसाती गगा म नाव से गगा पार करना?

गगा किनारे का स्थायी निवासी हस पडता है। यह तो यहा का स्वाभाविक जीवन है। गगा जिस भी रूप मे रहें, उसी रूप मे मनुष्य उनके निकट बना रहेगा।

बरसात शुरू होते ही किनारे पर बने मल्लाहो के कच्चे मकानो की

शामत आ जाती है। अपना सामान उठाकर पीछे की ऊंची सड़क के किनार झोपड़ी बनानी पड़ती है। गंगा के उतरते ही फिर वापस आकर अपनी जगह पर जम जाते हैं। हर वर्ष का यह बंधा टका क्रम है।

गंगा किनारे से दुमंजिला, तिमंजिला दिखने वाले मकान पीछे सड़क की सतह से मिले हुए हैं। सड़क तो असल में बांध की ऊंचाई पर बनाई गई है। सड़क से गंगा तक आने के लिए कई गलियां हैं। इन गलियों के किनार भी मकान खड़े हैं ज्यादातर कच्चे, पुराने टूटे फूटे। क्या कहा जाय। शहर के छोर पर बसी यह बस्ती सदियों से इसी तरह जी रही है। इस बस्ती में या तो राजा महाराजाओं या फिर कल्पवास करने आये सेठ साहूकारों द्वारा बनवाये महलनुमा बड़ी हवेलियां हैं या फिर पण्डे-पुजारियों, क्लर्कों, छोटे व्यापारियों फेरी लगाने वाले के छोटे बड़े सर छुपाने वाले मकान हैं। राजा महाराजा नहीं रहे, सो उनकी बनवाई हवेलियां भी खंडहरों में बदल गयी हैं। सेठ-साहूकारों की श्रद्धा अब कल्पवास में नहीं रही सो उनके वारिसों ने अपने पुरखों की बनवाई हवेलियों को टुकड़ों में बांट कर किराए पर उठा दिया। गंगा किनारे बसी बस्ती धीरे धीरे घनी होती जा रही है, क्योंकि शहर में यही वह स्थान बचा है जहां अब भी सस्ते में सर छुपाने की जगह मिल जाती है।

मोहन ने अंगड़ाई लेकर बदन को कसा। दूर बस्ती के मकानों के किनारे लगे बिजली के खम्बों पर बल्ब रोशनी देने लगे। उसी के साथ टेढ़ी-मेढ़ी लाइन में खड़े ऊंच-नीचे मकान भी दिखाई देने लगे। इन्हीं में सबसे ऊंचा जो मकान है, उसे गंग महल' कहते हैं। दो सौ वर्ष से भी अधिक पुराना होगा गंगमहल। किसी सेठ का बनवाया हुआ। अब तो एक वकील साहब इसके मालिक हैं। जो गंगमहल के साबुत हिस्सों में रह रहे किरायेदारों से रहने लायक जगह खाली न करा पाने के कारण, गंगमहल में बनी बारहदरी को चारों तरफ से बन्द कराकर खुद रहने लगे। वकालत कभी चली नहीं, किराया आता है तो गुजारा होता है। लड़की की शादी का बड़ा खर्चा आया तो शहर का मकान भी बेचना पड़ा। अब रहने के लिए गंगमहल की बारहदरी सहारा बनी। बारहदरी की बायीं ओर दो कमरों और एक बरामदे के साथ खूब खुली जगह को घेर कर पोस्ट ग्रेजुएट कालेज

के प्रोफेसर रामसिंह रहते हैं। उनके सामने रहते हैं नगर निगम के वैद्यजी। और वैद्य जी के ठीक सामने दूसरी ओर हैं एक रिटायर्ड पोस्टमास्टर। बारहदरी के ऊपर बरसाती को घेर कर अध्यापिका सविता देवी के रहने के लिए जगह तैयार हो गई। एक कमरा, छोटा-सा बरामदा और रसोई। अपनी अधेड़ मां मनकी के साथ सविता देवी पिछले कई सालों से इस बन्मानी में रह रही हैं। गगमहल के बायीं ओर गली है जो बड़ी सड़क से निकल कर गगा तक आने का रास्ता है। इस गली के एक ओर गगमहल का जो हिस्सा आता है उसमें नगरनिगम की ओर से लड़कियों का स्कूल चल रहा है। गली की ओर जो कमरे थे वह ढह गये, उनका मलवा हटवा दिया गया, वहां छोटा सा सहन निकल आया सहन के सामने के पांच कमरे ही स्कूल कहलाते हैं। गली में गुजरता हुआ आदमी एक नजर से देख सकता है स्कूल के किस कमरे में कौन पढ़ा रहा है पढ़ा भी रहा है, या पढ़ाने का बहाना ही कर रहा है। बड़ी परेशानी होती है नई अध्यापिकाओं को। चलते चलते कई मनचले गली में एक मिनट को ठहर कर सिगरेट जलाते हैं, अध्यापिकाओं को घूरते हैं। कई बार निगम से कहा गया कि एक छोटी सी दीवार खड़ी करवा दें ताकि गली की तरफ से पर्दा हो जाय, पर आज तक सुनवाई नहीं हुई। रोज की बात है इसलिए सब आदी हो गये हैं, पढ़ाने वाली अध्यापिकाएं भी और पढ़ने वाली लड़कियां भी।

स्कूल के ठीक सामने, गली पार एक लाइन में आठ कोठरियां बनी हुई हैं, उसमें से तीन में तो आढ़तियों का माल भरा है। एक में एक बुढ़िया छोटी-सी दूकान लगाती है। एक की छत ठीक न होने से खाली पड़ी है, और आखरी कोठरी में मोहन को रहने की जगह मिल गई है। यह भी गगमहल में रहने वाले प्रोफेसर रामसिंह की कृपा से। वरना पण्डे-पुजारियों के मुहल्ले में कोई हरिजन को रहने को कोठरी देता है? प्रोफेसर साहब का छोटे से छोटा काम मोहन कर देता है। इसीलिए प्रोफेसर साहब ने अपने पास मोहन को रहने के लिए जगह दिला दी। गगमहल में मोहन का आना जाना है। दूसरे भी अपने दो एक काम करा लेते हैं।

गगा की ओर गगमहल की दूसरी मंजिल पर पुजारी शिवराम रहते हैं। गगमहल में कब से रह रहे हैं कोई नहीं कह सकता। नीचे हनुमान की

विशाल प्रतिमा स्थापित है। उसी की सेवा म जीवन क शेष दिन काट रह हैं। मुहल्ले वाले चन्दा करके पुजारी जी को प्रतिमाह कुछ रुपय जुटा दत हैं। कुछ मन्दिर के सामने से गुजरने वाल राहगीर, मूर्ति को प्रणाम करके पैस फेंक देत है। कुछ इधर उधर स चढावा आ जाता ह, जैस तैस दिन बीत रहे है। दिन म एक समय भोजन पकात हैं। रात्रि को सत्तू घोलकर पी लेते है। आखा मे मोतियाबिन्द उतर आन स कुछ दिखाई नही देता। यही बहुत कष्टदायक स्थिति ह। सब अभ्यास से काय करते है। लाठी टकन हुए गगा नहान पहुच जाते है। चाहते हैं कोई लडका एसा मिल जाय जो साथ रहे, हनुमान जी की भक्ति करे और सहारा बन, लेकिन कहा मिलता ह आज भागवान का भक्त।

मोहन अपने कपडो का बहुत ध्यान रखता। दो पेन्ट और दा ही कमीजे हैं। इन्हे ही धोकर, और खुद ही प्रेस करके पहनता है। कन्धे से शान्ति निकेतनी झोला लटकता रहता है। झोले मे हर समय एक, दो पुस्तकें और पत्रि पडी रहती हैं। खाली वक्त मे पुस्तक निकालकर पढना शुरू कर दता है। रग काए सावला है, मगर नाक नक्श सुन्दर होन से व्यक्तित्व म दूसरे का प्रभावित करने की क्षमता पैदा हो गई है। कालेज म पढन स बात करन का सलीका भी आ गया। यो भी मोहन इस बात के लिय बहुत सजग रहता है कि कोई उसकी बातचीत स और उसके पहनावे स उस असभ्य न कह। मोहन केव्यक्तित्व का ही यह प्रभाव है कि उसके सामने उसकी जात को लकर कोई भी कुछ कहने की हिम्मत नही करता। कानून भी इस बात की इज्जात नहीं देता कि किसी को उसकी जात के कारण दुतकारा जाय, या अपमानित किया जाय। मगर पीठ पीछे तो बात होती ही थी। हनुमान मन्दिर के पुजारी शिवराम न माथा पीठ कर कहा अच्छा नही किया प्रोफेसर साहब न इस हरिजन लडके को यहा बसा कर। अरे इनका भी कोई चरित्र होता है। इन पर तो एक मिनट को भी विश्वास नहीं किया जा सकता। इन्ह तो मुहल्ल से एकदम दूर रखना चाहिये।'

इस टीका-टाकी पर प्रोफेसर रामसिह ने कोई ध्यान नही दिया। उन्ह घर-बाहर क काम करने के लिये एक आदमी की जरूरत थी, सो मिल गया। बेकार के किसी पचडे म पडने से क्या फायदा। मोहन को भी समझा

दिया। "ज्यादा किसी से बात करने की जरूरत नही। अपने काम से काम रक्खो। तुम्हें यहा रहना ही कितना है। ला का पहला साल चल रहा है, दो साल की पढाई और बाकी है फिर प्रेक्टिस शुरु करो। इस मुहल्ले की पालिटिक्स से क्या लेना।"

मोहन ने प्रोफसर साहब की बात को अच्छी तरह समझ लिया। ठीक कहत हैं प्रोफेसर साहब। उसका लक्ष्य तो किसी तरह एल० एल० बी० की डिग्री लेना है, ताकि काला कोट पहन कर कचेहरी म कानून की बहस कर सके। यही इच्छा गाव मे रह रहे उसके अधेड बाप और ताऊ की है। कम-से कम कोई तो अपनी बिरादरी मे पढ लिख जाये। गाव मे रोज मुकदमेबाजी होती है। सम्पन्न किसान के खेतो म मजूरी करते और घर मे चमडे का काम करते हुए मोहन के रिश्तदार इसी आशा में दिन बिता रहे हैं कि लडका जल्दी म जल्दी वकील बनकर घर का दरिदर भी दूर करे और ऊची जात वालो की हेकडी से भी बचाये। मोहन इसी लक्ष्य को लेकर चल रहा है। कस्बे मे इटर पास किया, फिर इस शहर मे आकर कालेज में नाम लिखवाया, बी० ए० पास किया और अब लॉ कर रहा है।

यहा आने से पहल मोहन स्टेशन के पास एक कोठरी में रहता था। वह जगह रास नही आइ। एक तो शोर बहुत था, दूसरे गन्दगी इतनी कि खाना खाना कठिन हो जाता। उस जगह को छोडकर दो महीने एक साथी के साथ रहा, फिर यहा गगमहल के पास जगह मिली तो इस कोठरी मे आ गया। इस जगह एक साल होने को आया है, पर सब उखडा उखडा-सा है। प्रोफेसर रामसिंह न इस जगह आकर रहने को कहा था तो मोहन मन ही मन बहुत प्रसन्न हुआ। मन म उत्साह भी था चलो अब ठीक जगह रहन को मिल रही है। गगमहल म सब पढे लिखे लोग हैं। इन सब के बीच एक नया वातावरण मिलेगा, कुछ नया सीखने को मिलेगा। वैसे भी अब शहर म किराये की दर दिन ब दिन ऊची होती जाने से बहुत से बाबू तबके के लोग यहा गगा किनारे रहने लग हैं। उन सब मे भी निकटता मिलेगी।

मगर यह सब मृगतृष्णा समान ही रहा। गगमहल मे ही मोहन को किसी न मुह नही लगाया। काम पडता तो सभी आवाज दे लेत, काम हो

जो ये बात साथ मुंह बात तक नहीं करते। [illegible] परम्परागत या [illegible]
मुताबिक जैसे वह उसका गरीब हुआ मुताबिक था और उसका हर बात को
मानना उसका परम कर्तव्य था। शुरू शुरू में तो मन को बड़ा धक्का लगा।
कैसे है यह मान! इंसान की तरह बात ही नहीं कर सकते!! [illegible]
प्रारम्भ से ही आदमी छुआछूत ऊंच-नीच एवं अलगाव के वातावरण में
पलता है। परम्परागत संस्कार अभाव में रहते हैं जो मनुष्य इस सब को
अपने भाग्य की नियति मान कर सामना जाता है। पर शहर में रहने वाले
लोग भी जब छुआछूत ऊंच-नीच स्वर्ण-अस्वर्ण का भेदभाव दिखाते हैं तो
मन नफरत से भर जाता है। शहर में दौड़ती भागती बस में एक ही सीट
पर सब बैठते हैं, उसमें तो जाति और धर्म पूछा नहीं जाता। मन में सवाल
का सागर लगा होता है सभी बड़े होटलों पानी पी जाते हैं उसमें भी धर्म पूछा
नहीं होता। तब फिर घर के सामने रहने वाले व्यक्ति को नीच जाति कह
कर क्यों दुत्कारा जाता है। पर इसमें ज्यादा बहस नहीं हो सकती। ज्यादा
उलझने और तर्क करने में अपना ही नुकसान होगा। कोठरी भी खाली
करनी पड़ सकती है। रहने को इतनी सस्ती जगह दूसरी नहीं मिलती।

मोहन ने अपने को अपने तक ही सीमित कर लिया था। किसी ने बात
की तो ठीक नहीं की तो ठीक। कोई हंसकर बोला तो उसका हंसकर उत्तर
दे दिया। मगर किसी ने मुंह चिढ़ाना चाहा तो उसकी ओर से नजरें घुमा
लीं। हालांकि मोहन के अन्दर का जवान खून कई बार जोर मारता कि चिढ़ाने
वाले का मुंह नोच ले मगर फिर वह अपने को रोक लेता। जिन्दगी बहुत
लम्बी है, इसे पार करने के लिये मन को काबू में रखना होगा। समझौता कर
कर ही आगे बढ़ा जा सकता है।

प्रोफेसर साहब के यहां भी जो उपेक्षा और तिरस्कार मोहन को मिला
उसको उसने जहर की तरह पी लिया। कभी प्रोफेसर साहब लिखने पढ़ने
का ऐसा काम भी अपने घर करवाते जिसमें एक दो घण्टे लग जाते।
औपचारिकता के लिये, या काम में तेजी लाने के लिए मोहन को चाय
पिलाई जाती। एक खास तरह का शीशे का गिलास मोहन के लिए सुरक्षित
कर दिया गया था। उसी में हर बार चाय पीने के लिए दी जाती। चाय
पीने के बाद मोहन को खुद ही गिलास को धोकर दीवार में रख देना पड़ता।

शीशे का गिलास आगन म अपनी जगह उस समय तक रखा रहता जब तक दुबारा मोहन को चाय पीने का अवसर नही मिलता। तीज त्योहार पर प्रोफेसर साहब के यहा से पूडी भी खान का मिल जाती थी। प्रोफेसर साहब का दस साल का लडका मोहन की कोठरी मे ही खाना द आता। घर पर बुलाकर मोहन को अपने बतनो म खिलाना सम्भव नही। प्रोफेसर रामसिह की पत्नी तो कट्टर धार्मिक विचारो की हैं ही, उनकी मा तो इतनी ज्यादा रूढिवादी कि अशुद्ध हो गई धरनी को गगाजल से धोती थी।

रामसिह इस सब को देखकर कई बार सकोच मे भी पड जाते, मगर मोहन उन्हें अधिक शर्मिन्दा होने का मौका ही नही देता। कमरे के कोने म पडे स्टूल पर चुपचाप बैठ जाता, और बात खतम होने पर उठकर चला आता। एक समझौता सा हो गया था स्वण, अस्वण के बीच। इसी से दोनो के बीच निकटता बनी हुई थी।

स्थितियो को शान्तिपूण ढग से निपटन की जो समय मोहन मे पैदा हो गई थी, उसने उसमे एक नई चेतना भर दी थी। मस्ती मे जीवन जीना है, यही मत्र था मोहन का। इसके लिये ढग म जीना उसने सीख लिया था। शीशे के सामने खडे होकर मोहन सोचता जब उसन स्वस्थ शरीर पाया है अच्छी कद काठी है, आकपक चेहरा है तो वह क्यो किमी हीन भावना म जिये उस इस तरह रहना चाहिये, जैस दूसरे समाज के पढ लिखे लोग रहते हैं। इस तरह चलना चाहिए जैस दूसरे स्वाभिमानी लोग चलत ह और इस तरह व्यवहार करना चाहिय जस दूसरे सम्मानित व्यक्ति करते हैं। वह किसी से किस बात मे कम ह ? वह दिखा देगा कि वह भी समाज म ऊचे दर्जे का इसान बन कर रह सकता है।

पहली लडाई उसने अपन घरवाला से ही लडी थी। दसवी पास करते ही घर में शादी की बात उठी। मोहन न साफ मना कर दिया। अगर मुझे पढा लिखा कर अच्छा बनाना चाहते हो तो शादी अभी नही करूगा। उसके हठ के आगे किसी की नही चली। बाद म घरवालो ने कहना छोड दिया। घरवाले अपन बेटे को पहले वकील के रूप मे देखना चाहते है बाद म कुछ और।

कोठरी मे बसते ही केशव को गगमहल के रहने वालो के सार अ तरग

रहस्य मालूम हो गये। इसमे सहायक बनी पास की कोठरी मे दुकान लगा कर अपनी जीविका चलाने वाली बूढी सुग्गा ताई। बुढिया को सब सुग्गा ताई के नाम से ही पुकारते हैं। बुढिया भी शायद मोहन को मुह न लगाती। लेकिन मोहन ने तो कोठरी म बसते ही ताई को सहारा दे दिया। सामने स्कूल की लडकिया ही दिन म बुढ़िया की मुख्य खरीदार होती थी। उनके लिय खट्टी मीठी गोलिया आम पापड, नमकीन चने कापी पेन्सिल, स्लेट बत्ती रखनी होती। इसी के साथ दूसरी रोज के काम आने वाली सस्ती चीजे भी दूकान पर बिक्ती। गली म से गुजरता आदमी ठहर कर सिगरट बीडी माचिस भी माग बठता। इस भी रखना जरूरी होता। यह सब थोक भाव से कटरा स लाना पडता। महीन म दो दिन ताई के कटरा आने जान मे ही बीत जात। किराया भाडा लगता सो अलग अब जब से मोहन आया है, सारा सामान घर बठे बैठे आ जाता है। जो भी चीज खतम होती मोहन दूसरे दिन कटरा स ले आता। रोज ही कालेज जाना पडता, लौटत हुए अगर ताई के काम की चीजें ले आया तो क्या हुआ। ताई हाथ हाथ उठाकर आशीष देती, जुग-जुग जियो बेटा। ताई का अपना लडका बहुत छोटी उम्र मे मर गया। दो लडकी हैं सो ब्याह कर अपने अपने घर चली गयी। अब ताई को दो जून की रोटी के लिये दुकान चलानी पडती है। जब तक हाथ पाव चलते हैं, किसी के आगे हाथ नही पसारेगी दिन दुकान पर कट जाता, रात को हनुमान मन्दिर के पास की एक कोठरी म जाकर पड रहती। जो बाकी जिन्दगी है, गगा किनारे कट जायेगी। खाली समय मे मोहन कोठरी के बाहर चटाई बिछाकर बैठ जाता। ताई से बातचीत करने मे अच्छा मनोरजन होता है। इससे ताई का भी जी बहलता है और मोहन को भी नई-नई बातें मालूम होती हैं। आज भी कुछ नया जानने की उत्सुकता म मोहन न पूछा यह सविता और उसकी मा कहा चली गयी हैं।"

'वे कहा जायेंगी, कही ठौर ठिकाना है जो जायें। यही कही काशी, अयोध्या म मडरा रही होगी। लौट कर ढोल पीटेंगी, हम तो गाव गये थे। पूछो, जब घर गाव है तो यहा क्यो पडी हो। साल की दो बडी छुट्टियों म य इसी तरह ढोग रचाती फिरती हैं।"

"हा ताई, ठीक कहती हो। दशहरा दीवाली की पन्द्रह दिन की छुट्टी चल रही है। यहा रहती तो दस जने दस बातें पूछते। यहा से चली गयी तो घूमना भी हो गया और मुहल्लेवालो को जवाब देन का भी बहाना मिल गया। यह समझ मे नही आता दो अकेली औरते बाहर घूम फिर कैसे लेती है। सविता की मा तो आधी उम्र पार कर गयी, पर सविता तो जवान है उम डर नही लगता ?"

"तू भोला है तू नही समझता।" सुग्गा ताई ने मोहन को समझाया। जिसकी आख का पानी मर जाता है, उसे किसी बात का डर नही लगता। डर होता तो इतनी दूर घर से आकर न पडतीं। मनकी बत्तीस घाट का पानी पिये हुए हैं, दुनिया को चरा दे। तू क्या जाने ?"

"ठीक कहती हो ताई।" मोहन को हसी आ गई।

"देखता नही चन्द्रभान के साथ कसी रास लीला रचा रही है सविता।' सुग्गाताई ने सर झुकाकर धीमी आवाज मे कहा, "वह मरा चन्द्रभान इसे ले डबेगा। मनकी ने आखो पर पट्टी बाध ली है ऐसे दिखाती है जैसे उसे कुछ पता ही नही।

मोहन की आखो के आगे चन्द्रभान का चेहरा घूम गया। शरीफ दिखने की लगातार कोशिश मे चन्द्रभान ने अपन को अजब उजबक बना-डाला। कितना ही बन ठन के रहे आखों से धूतता हर समय टपकती रहती है। अकड के इस तरह चलता है जैसे किसी बहुत बडे खानदान का बेटा है। दुनिया जानती है खाने के लाले पडे रहते हैं। पिछले तीन साल से इसी मुहल्ले मे अपने गवई—गाव के चाचा चाची के साथ बस्ती के बिल्कुल आखिर म एक छोटा-सा मकान लेकर चन्द्रभान रह रहा है। एम० ए० पास कर लिया है अब राजनीति मे पीएच० डी० करना चाहता है, लेकिन नम्बर कम होने के कारण अभी तक जुगाड नही बैठ पाया। जीविका के लिए शहर की एक प्रकाशन सस्था मे मामूली सी क्लर्की करते हैं हजरत। साथ मे ट्यूशन भी करनी पडती है। इधर एक दो ट्यूशन ा मोह छोडकर सविता को पढाना शरू कर दिया है। कहते हैं सविता मे बडा टेलेंट है। *सविता को बी० ए० बी० एड० कराकर किसी सरकारी स्कूल* मुख्यअध्यापिका बनायेंगे। नगर निगम की नौकरी भी कोई नौकरी है।

चन्द्रभान कुछ भी कहे, सविता का पढाई म रत्ती भर मन नहीं लगता। बारहवी की परीक्षा जरूर दी लेकिन फेल होने के डर स बीच म ही छोड दी। अब फिर बारहवी की तयारी चल रही है। मनकी न बेटी का पक्ष लेते हुए कहा था दिमाग से ता सविता तेज है, पर शरीर म जान नहीं है। जरा सा खासी जुकाम होने से खाट पकड लेती है। परीक्षा पूरी द पाती तो जरूर पास हो जाती। पर क्या करें ईश्वर को मजूर ही नहीं था।"

चन्द्रभान स पहली बातचीत बाइडिंग हाउस म ही हुई थी। अपन साथियो के साथ मोहन किताबो की जिल्द बाध रहा था। चन्द्रभान अपन प्रकाशन की पुरानी किताबो को रिक्शे पर लाद आ धमके। मोहन को देखा तो सकपका गय। कुछ सोचने की मुद्रा बनाकर बोले तुम तो शायद नगमहल के पास रहत हो।'

मोहन ने समथन मे सर हिलाया।

कही पढते हो न ?"

कालेज म ला का पहला साल है।" मोहन न अपना काम करत हुए टालन की गरज से बहुत कम शब्दो म उत्तर द दिया।

'ओह ।' चन्द्रभान कुछ सकपकाय ठीक है। मेहनत स ही अच्छा फल मिलता है। पर तुम्हारे जैसे मेहनती आदमी को और भी अच्छा काम मिल सकता है। मैं ख्याल रखूगा। मेरी प्रकाशन सस्था म अक्सर जगह खाली होती रहती है। तुम्हे वही जगह दिला दूगा।

धन्यवाद। मोहन ने घूर कर चन्द्रभान को देखा 'म यहा पाट टाइम काम करता हू। फुल टाइम काम करना होता ता और भी बहुत-सी जगह हैं। ला कर रहा हू इतना टाइम नहीं है जो पूर दिन की नौकरी करू।' मोहन को गुस्सा आ गया। अजब आदमी है। बकार म ही अहसान लाद जा रहा हैं।

हा हा भाई हम भी पाट टाइम मे और अच्छा काम बतायेंगे। खर अब तो तुम यहा हो ही, जरा किताब अच्छी बनें, ध्यान रखना।

चन्द्रभान ने जल्दी-जल्दी किताबें गिनायी और तेज चाल से चले गये।

चन्द्रभान से पहली मुलाकात ही मोहन के लिए भारी हो गई। बहुत ही धूत आदमी है। अपना काम निकालन के लिये कितनी बातें बना गया। मोहन के मन मे दुबारा चन्द्रभान से मिलने की कोई इच्छा नही रही। मगर चन्द्रभान ने मोहन का पीछा नही छोडा। शाम को रंगमहल म सविता को पढाने के लिए आते हैं हजरत। अगर मोहन अपनी कोठरी के बाहर बैठा दिखाई दिया या प्रोफेसर रामसिंह के घर के बाहर खडा मिल जाता, तो खुद ही ऊची आवाज मे बोल पडत, "अरे मोहन, अपन मालिक से कहना, किताबो म जरा मोटा गत्ता लगाया करे। हमारी सस्था म अच्छी बाइडिग चलेगी।

मोहन समझ गया। यह आदमी अपना रोब गालिब करने के लिए ही उसे डाउन कर रहा है। मोहन को कालेज का स्टूडैंट होने का गव था। चन्द्रभान ने अपने कमीनेपन से सारे मुहल्ल म उसे एक मामूली पुस्तक बाइण्डर के रूप मे मशहूर कर दिया। इसे सीधा करना होगा। मौका दख कर मोहन ने एक दिन चन्द्रभान को फटकार दिया, "यह श्रीमान जी आप हर समय क्या बाइडिग बाइडिग की बातें करते है। मतलब क्या है आपका। मुझे क्या अपनी तरह प्रकाशन सस्था का टुकडची नौकर समझ रक्खा है जा हुक्म चलाते हो। जो कुछ कहना हो बाइडिग हाउस के मालिक से कहना, समझे।"

मोहन की ऊची आवाज से चन्द्रभान हक्का बक्का रह गये। इस तरह मोहन बिगड खडा होगा, इसकी उम्मीद चन्द्रभान का नही थी। अटकत हुए बोले 'अरे रे रे, तुम तो ऐसे बोल रहे हो जैस मैंने गाली दी हो।'

'जी हा गाली ही है यह जब देखा बाइडिग बाइडिग करते हो ? हर समय मेरे काम का रिफरेंस देने का मतलब क्या ?"

"अगर इतना डर लगता है तो छोड क्या नही देते हो इस छाटे काम को। कोई बडा काम करके दिखाआ।" चन्द्रभान न हाथ हिलाकर ताना देते हुए कहा।

'मेरे लिए हाथ की मेहनत का कोई काम छोटा नही है। खुशी म करता हू बाइडिग का काम, कोई चोरी नही है।" माहन की आखे गुस्मे

स जल रही थी, "वसे आप प्रकाशन सस्था म क्या अफसरी करते हैं? मालिक न एक मेज कुर्सी द रखी है, उसी के सहारे दिन भर कलम घिसते हैं। इसके एवज म दो चार सौ क नोट मिल जाते हैं। यह क्या है श्रीमान इस क्या कलक्टरी कहते हैं?"

रात और बड़े इमम पहन नी अपने पैजामे का नाडा ठीक करत हुए प्रोफेसर रामसिंह घर के बाहर निकल आये, 'यह आप दोना क्या कर रहे हैं। क्या इतना शोर मचा रहे हैं?'

रामसिंह को देखकर चन्द्रभान जोर से चिल्लाया, "प्रोफेसर साहब, इसे रोक लीजिए। मैं छोटी जात के मह नही लगना चाहता। ठीक नहीं होगा।'

"जात की बात जबान पे न लाना। औकात मे रहो अपनी।' इस बार मोहन चिल्लाया।

रामसिंह दोनो के बीच मे आ गये, "शर्मा तुम चुप रहो।" रामसिंह ने चन्द्रभान को चुप कराते हुए कहा। फिर मोहन की तरह घूम कर बोले, 'और मोहन तुम अपनी कोठरी म जाओ सुना नही, मैं कहता हू तुम अपनी कोठरी म जाओ।"

प्रोफेसर रामसिंह के सामने मोहन कुछ बोल नही सकता। एक बार जलती आखो से चन्द्रभान का देखा, फिर धीरे धीरे अपनी कोठरी की तरफ चल दिया।

अपनी कोठरी मे पहुचकर भी मोहन को चैन नही आ रहा था। गुस्से म सारा शरीर खोल रहा था। सबसे ज्यादा गुस्सा तो इस बात पर था कि प्रोफेसर रामसिंह उसे और चन्द्रभान को लेकर इतना भेद क्यो बरतते है। रामसिंह के सामने तो दोनो ही विद्यार्थी हैं। दो साल की पढाई का ही तो फक है उसमे और चन्द्रभान म। वह लॉ मे पढ रहा है और चन्द्रभान एम० ए० कर चुका है। फिर भी रामसिंह उसे मोहन कहकर और चन्द्रभान को शर्मा जी कहकर सम्बोधित करते हैं। यहा भी स्वण और अस्वण का भेद सामने है। कितना काम करता है प्रोफेसर साहब के घर का मगर कोई इज्जत नही। एक मिनट म दुतकार कर अलग कर दिया।

सुग्गा ताई न भी आज दुकान नही खोली नही तो उनसे ही दो बातें

करके मन बदल जाता। दो-तीन दिन से साईं की तबियत खराब चल रही है। कल देखने गया था दवा की दो गोली भी दे आया। आज शाम भी जायगा। पर इस समय क्या किया जाय। रह रह कर चन्द्रभान पर गुस्सा आ रहा था। रह रहकर मोहन के माथे की रगनिया कसमसा उठतीं। मन में आता चन्द्रभान को जाने से पकड़कर पटक दे। अगर दो-चार मानव बीच में न आ जाते तो आज चन्द्रभान का [illegible] न छोड़ता।

आया परसाद लेन म मना कर "। फिर वही बात बेमार म झगडा बढान से क्या फायदा। मनकी इस तरह क किस्स बनाकर फलायगी। कोठरी म जाकर मोहन [एक तश्तरी ले आया। मनकी ने उसी म मुट्ठी भर खील बताशे डाल दिये।

कमरे म दायी ओर वाली खिडकी खोल देन पर हवा के इतन तेज झोके आन लगते कि खिडकी पर खडा होना कठिन हो जाता। खिडकी स मीलो दूर तक का दृश्य दिखाई देता। सामने गगा का चौडा फाट, झूसी का किनारा, उसी से लगा बाध, बाध पर एक लाइन म खडे सफदे के पेड कोई भी मौसम हो, खिडकी म बाहर देखन पर बहुत सुख मिलता है। सुबह बाध पर खडे इन्ही सफेद के पेडा क पीछे से धीरे धीरे सूरज उगता और शाम को एक बार [फिर डूबता सूरज इन पेडो की फुनगी पर अपनी रक्तिम लालिमा बिखेर जाता। इसी खिडकी के कारण अपने कमरे को सविता हवा महल का नाम देती।

मन ऊबता तो सविता घण्टा खिडकी पर खडी रहती। आखिर किसी तरह वक्त तो काटना ही है। पिछने चार साल से इस जगह है। यही एक कमरा और कमरे मे सिर्फ यही एक खिडकी। दिन स्कूल म कट जाता, लेकिन सुबह शाम काटे नहीं कटती। छुट्टियो के दिन भी तो रहते हैं। गगमहल म रह रहे परिवारो से निकटता हो ही नही सकती। बहुत ओछी मनोवृत्ति के लोग हैं। पुरुषो स तो खर बात ही क्या हो सकती है, औरतो म भी बैठना उठना नही हो पाता। लौट फेर के वही घर गृहस्थी की बात ले आती हैं इसम भी खोद खोद के पिछली बातें पूछन लगती हैं, फिर एक बात का बतगड बनाकर प्रचार करेंगी। इसी से सविता को नफरत हो गई है सबस। अपन कमरे म ही बन्द रहना पडता है। उस समय यही खिडकी मन बहलान का साधन बन जाती है। खिडकी से नीचे पहली मजिल पर रहने वालो के चेहरे साफ देखे जा सकते है। अगर कोई जोर से बोले तो वह भी सुनाई देता है। पुजारी जी दूसरी मजिल पर ही रहते हैं। सुबह शाम हनुमान की पूजा करने नीचे जाते हैं बाकी समय अपनी

कोठरी के आगे बैठे रहते हैं। आंख कमजोर हो जाने से रामायण पढ नही पाते ऐसा वह जोर देकर कहते है। पर लोगो का कहना है कि उ हे पढना लिखना आता ही नही। इस आलोचना स पुजारी जी के भक्ति भाव म कोई अन्तर नही आया। जो भी थोडी बहुत रामायण रटी हुई है, उसे वह बातो के बीच म दोहराते जाते है। चौपाई हो या दोहा, सस्वर कहने का प्रयत्न करते हैं। अगर सोचने वाले व्यक्ति पर उनकी बात का कोई असर नही होता तो गुस्से मे आ जाते हैं, "मैं शर्त लगाकर कहता हू तुलसीदास ने जो लिखा है वह सोलह आने सही है। उसमे मीन मेख निकालने वाला नरक को जायगा।"

नीचे पहली मजिल पर आने के लिये एक ही जीना है। पहली मजिल पर रहने वाले नीचे जाने के लिये इसी जीने का इस्तेमाल करते है। जो नीचे से ऊपर आता, वह भी इसी जीने से आता। सविता को खिडकी स ही दिखाई दे जाता कि कौन पहली मजिल पर आया और कौन गया। इस समय भी वह देख रही थी, मोहन जीना चढकर ऊपर आया और जीने के पास ही खडे खडे ऊची आवाज म कहा, "पुजारी जी, आपकी चिटठी आई है।"

"क्या!" पुजारी जी चौक गये, 'चिटठी, लाओ।" फिर जसे कुछ याद आया हरिजन को अपनी कोठरी के द्वार तक कैसे बुला ले, हडबडाकर बोले, "वही ठहरो मैं आया।"

पुजारी जी ने दीवार के सहारे टिकी लाठी उठाई और एक एक कदम सम्हाल कर रखते हुए मोहन के पास आ गये। मोहन ने पोस्टकाड पुजारी जी के हाथ से छुआ दिया। पोस्टकार्ड को एकदम झपट लिया पुजारी जी ने। उलट-पुलट कर देखने की कोशिश की, लेकिन उनसे तो पढा नही जा सकता, आखो से लाचार हैं। झुझलाकर बोले, "खडे क्या हो, यहा मुडेरी पर बैठ जाओ, पढकर सुना दो। मेरी आखें कमजोर है, पढा नही जाता। तुम्हे चिटठी कहा मिली?'

"महल के फाटक पर और चिटठियो के साथ इसे भी पोस्टमैन फेंक गया था। मैंने सोचा आपको लाकर दे दू।" मोहन ने मुडेरी पर बैठते कहा।

अच्छा किया अच्छा किया।' पुजारी जी बोले, "डाकिय की हरामखोरी देखो, यहा तक आकर नही न सकता। सरकार तखाह किस बात की दती है ? काम करत सुसरा की नानी मरती है।'

इन बातो का कोई जवाब नही हा सकता। पुजारीजी स जान छुटानी है तो पोस्टकाड पर लिखा मजबून पढकर सुनाना होगा। मोहन न पढ़ना शुरू किया। गाव से आया था पोस्टकाड, पुराने ढग पर लिखा गया, सबस पहले सारे गाव भर की पुजारी जी को राम राम, फिर भगवान स सुख चन की कामना रामजी की कृपा से अपनी कुशलता का समाचार, आग एक लाइन म काम की बात इतनी कि बिरजू का भेज रहे हैं। इस अपन पास रख कर योग्य बनायें।

पुजारी जी ने मोहन स पोस्टकाड लेकर अपनी बण्डी की जेब म रख लिया। लम्बी सास लेकर बोले 'क्या योग्य बनायें। धरम करम मे किसी का विश्वास नही रहा। घोर कलयुग आ गया है। कोई क्या योग्य बनेगा। हमारे पास जा विद्या है, वह हम सब का देना चाहते है, पर सुसरा काइ ले तब न। पुजारी जी उठकर अपनी कोठरी की तरफ चल दिये।

मोहन न सर उठाकर सामने की तरफ देखा। सविता खिडकी स झाकते हुई दिखाई दी। सविता को देखकर मोहन चौक सा गया। सविता मोहन की ओर ही देख रही थी, जब मोहन से नजरें मिली तो मुस्कुराई, "कौन आ रहा है पुजारी जी के यहा।' सविता न पूछा।

"गाव से एक लडका आ रहा है बिरजू।' सविता को मुस्कुरात देख कर मोहन को खुशी हुई। सविता को मुस्कुराते देखना अच्छा लगता है। इस पर अगर सविता बात कर ले तो लगता है न जाने क्या पा लिया, आपकी यात्रा कसी रही ?"

'अच्छी रही थाडा चेञ्ज हो गया। सविता ने उत्तर दिया।

शायद मोहन कुछ और पूछना, लेकिन इसी बीज पीछे स मनकी का चेहरा आग बढ आया। मनकी ने पहले उत्साह से दखा, कौन बात कर रहा है। फिर मोहन को देखकर तीन काने का मुह बना लिया। मोहन न भी बात बदलन की गरज से पुजारी जी से पूछा, 'चिटठी का उत्तर तो नही लिखाना है आपको।'

"अरे उत्तर क्या लिखाना, जिसे आना होगा वह तो आ ही जायेगा।' पुजारी जी ने टालते हुए कहा।

अब और ज्यादा नही रुका जा सकता। मोहन जीना उतर कर नीचे आ गया। एक क्षण के लिये जो सविता स बात हुई वही बहुत है। सविता दिल की बुरी नही है, लेकिन उसकी मा बहुत कपटिन है। हर बात अपने स्वाथ से सोचती है। सविता चन्द्रभान के चक्कर म अपनी मा के कारण ही आ गई। वह धूत आदमी इसे कही का न छोडेगा। मगर समझाया भी कैसे जा सकता है। जब आदमी अपना खुद ही सवनाश करने पर उतारू हो जाये तो उसे रोका नही जा सकता। दोषी तो मनकी है जो जान, बूझकर अपनी बेटी को कुए मे ढकेल रही है। उसी की शह पर चन्द्रभान घर मे पैर रख पाता है।

सविता ने रगरूप कुछ खास नही पाया। शरीर भी हड्डियो का ढाचा। हाथ कुछ ज्यादा ही बेडौल। माथा चौडा होने से चेहरा और भी लबा दिखाइ देता, खास तौर पर उस समय जब सविता बाल पीछे की ओर खीचकर बाध लेती। लेकिन इस सब के बाद भी सविना की मुस्कुराहट बहुत प्यारी लगती। उसके पतले होंठ मुस्कुराते हुए कुछ इस तरह खुल जाते कि देखने वाला देखता ही रह जाता। शायद खद सविता को भी पता नही कि उसके होठ इतने सुदर है। मन करता सविता मुस्कुराती ही रहे। उसे अपने हाठो का ख्याल रखना चाहिए। इतन सुदर हाठ भाग्य स ही मिलत हैं।

मोहन से बात करके सविता भी खुश थी। चलो कोइ तो मिला जिसस दो बात हो सकी। वरना तो बस हर समय सामने मा ही रहती है। मा या तो मुहल्ले भर की निन्दा करती रहती है, या अपन भाग्य का रोना रोती रहती है। मा जब किसी काम से बाहर चली जाती है तो सविता को बडी शान्ति मिलती है। लगता घर अपना है जिधर चाह उधर घम फिरें उठे-बठें। अकेले कमरे मे हल्के स्वर म कुछ गुनगुना भी सकती है। या कोई बात सोचते हुए मुस्कुरा सकती ह। अकेलापन भी कभी कभी कितनी राहत देता है। पर मा के आत ही सब समाप्त हो जाता। सोचा था अपना भी एक छोटा-सा घर होगा। उसे इस तरह सजायेगी, उस तरह सजायगी।

जीवन म किसी पुरुष का साथ आवश्यक है। अगर चन्द्रभान का ही साथ मिल जाय तो बहुत कुछ पा लेने जैसा ही होगा।

कभी कभी सविता को डर भी लगता। कही किसी बडे धोखे मे तो नही फम रही है। चन्द्रभान की बडी बडी बातो के बीच भी कुछ खालीपन सा दिखाई देता। सविता न जब भी चन्द्रभान से भविष्य की बात की तो वह हसकर टाल गया। अपनी चुपडी बातो से सविता का मन भरने की कोशिश करता। चन्द्रभान सविता के लिए नदी की एक ऐसी तेज धार बन गया जिसम बहते जाना ही उसकी नियति हो गयी। जरा भी पाव टिकाने की कोशिश की तो पैर के नीचे से रेत खिसकने लगती। धार के साथ बहते रहने की मजबूरी फिर सामने आ जाती।

मोहन की चन्द्रभान से तुलना नही की जा सकती। मोहन की किसी से भी तुलना नही हो सकती। वह तो रेखा के उस पार खडा है, जहा उसकी कोई गिनती ही नही है। वह एक ऐसे वग का प्राणी है जिस वग का निकटता आज भी कोई स्वण सोच नही सकता। हा, मोहन देखन मे अच्छा लगता है, उसस बात करके मन जुडा जाता है। इसी से इधर-उधर आते जाते अगर मोहन मिल जाता है तो सविता उससे एक दो बात कर लेती है। आज भी ऐसा ही कुछ हुआ। पर मा का बीच मे टाग अडाना उसे खल गया। सीधी बात का भी गलत अथ लेती है। न जाने मा ने कौन से सस्कार पाये है।

"तुझस दस बार कहा, मोहन से न बोला कर। तू फिर भी बोलती है।" मनकी ने गुस्से से कहा।

'बोलने से क्या हुआ। क्या छूत लग गई।" सविता को भी गुस्सा आ गया। बेकार मे मा हर समय टोकती रहती है।

'छूत अब तक नही लगी है तो लग जाएगी। नीची जात वाले से हस-हसकर बात करेगी तो देखने वाले शाबासी नही देंगे।"

'तुम्हे भी कसम है जो अब किसी नीची जात वाले से बात करो। न मोची से चप्पल टकाना, न जमादार से सफाई कराना। और मोहन से अगर किसी काम को अब तुमने कहा तो ठीक न होगा, कहे देती हू।' सविता भी लडने के मूड मे आ गई।

लो और लो, तेरी अच्छाई बुराई का ध्यान भी न रखू " मनकी न हाथ नचाकर कहा "पता भी है, मुहल्ले मे मोहन से कोई भी हसी दिल्लगी नही करता। एक तू ही है जो हस हसकर बात करती है। चद्र भान भी माहन से बात नही करता।"

'चद्रभान को बीच मे क्या लाती हो। चद्रभान से क्या मतलब ?" सविता की आखे गुस्से से फल गयी, चद्रभान मुझे पढाने आते हैं इसके यह माने नही कि वह मेरे हसने बोलन के ठेकेदार हो गय। उनस भी तुम्ही ने कहा होगा।'

मैं क्यो कहने लगी किसी से। मेरी तरफ स तो सब भाड म जाओ।' मनकी ने थैला उठाया चप्पल पहनी और बाहर जान के लिए तयार हो गयी, "जब देखो तब बहस करती है। चभड चभड बोलना आता है बस। पूछो भला कह दिया तो क्या बुरा किया। तेरी भलाई के लिए ही कहा और क्या।' मनकी पैर पटकती हुई बाहर चली गयी।

मोहन की कोठरी से सविता का कमरा साफ दिखाई देता। कमरे से निकल कर सविता जब भी नीचे आती तो पता चल जाता। इसी तरह जीना चढकर कमरे मे जाते हुए भी सविता को साफ देखा जा सकता। कई बार मोहन सविता के कमरे की ओर दखता रहता शायद सविता दरवाजा खोलकर नीचे आये और वह एक नजर सविता को दख ले। पर ऐसा कभी कभी ही होता है कि मोहन सविता के कमर की ओर देख रहा है और सविता दरवाजा खोलकर प्रकट हो गई हो। ज्यादातर तो यह होता कि माहन सविता के बन्द दरवाजे और सूने जीने को ही दखता रहता अन्त म थककर अपनी कोठरी मे वापस चला जाता। कभी-कभी मोहन को अपने ऊपर ही पछतावा होता। अब वह बच्चा नही है न ही बच्चे दिमाग का किशोर। उसे अपने को समझना चाहिए अपने से जुडी सच्चाई को समझना चाहिए। बेकार की भावुकता मे क्या रखा है। क्या देखता है वह सविता की तरफ ? क्या रक्खा है मन को परेशान करने म ? जहां स्वप्न मे भी कुछ पाने की आशा नही है वहा सोचने से लाभ ही क्या है। लकिन इस सब को जानते हुए भी न जाने क्यो मोहन सविता क घर की तरफ देखने लगता है। बार-बार सविता के घर की ओर देखने का मन करता है।

प्रोफेसर राम सिंह का छोटा लडका बुलाने आया है। प्रोफेसर साहब ने याद किया है तो जरूर जाना होगा। कोई बाहर का काम हो सकता है तभी याद किया है। बगैर काम के लडके को क्या भेजते। राम सिंह के लडके ने यह नही बताया कि काम क्या है। पर इससे क्या काम कोई भी क्यो न हो, उसे करना ही होगा। राम सिंह के सहारे ही इस मुहल्ले म टिका हुआ है। कालेज म भी कभी-कभी मदद लेनी ही पडती है। फीस माफी मे भी रामसिंह ने ही कोशिश की थी। प्रोफेसर साहब के काम को सबसे पहले करना होगा।

प्रोफेसर रामसिंह का घर हर समय गुजायमान रहता। घर के सभी प्राणिया को जोर-जोर स बोलने की आदत है। रामसिंह की बीवी, जिन्हे सब आदर से प्रोफेसराइन कहते हैं या तो गुस्से मे मुह फुलाये कोप भवन म पडी रहती या फिर बच्चो पर चीखती चिल्लाती रहती हैं। अगर यह भी नही तो, पास-पडोस म ऊचे स्वर मे बात करती रहती। इससे भी मन नही भरता तो अपने पति को ही दो-चार खरी खोटी सुना देती। सबसे आनन्ददायक वह समय होता जब प्रोफेसर रामसिंह की कठीधारी मा गाव स आ जाती। बात-बात मे सास बहू म बज उठती। दोनो एक-दूसरे स बढ चढ कर हैं। बोलने पर आती तो एक-दूसरे के अगले पिछले सभी गुणो का बखान कर डालती। सारा रगमहल मजा लेता। इस सब के बीच प्रोफेसर रामसिंह तटस्थ होकर अपने कार्यों मे लगे रहते। उन्होने सास-बहू के झगडे को भी घर की दैनिक क्रिया कलाप का एक अग मान लिया था। इसी से वह खामोशी के साथ अपने लिखने-पढने के काम मे लगे रहते, भले ही घर मे ऊपर से नीचे तक भूचाल ही क्यो न आ जाता।

पर आज तो दृश्य दूसरा ही था। आज तो मा-बेटे म ठनी हुई थी। प्रोफेसर रामसिंह गुस्से मे चिल्ला कर बोले 'अम्मा जी, आपको मालूम भी है फादर स्मिथ कौन हैं?'

कौन हैं! अरे ईसाई हैं, और कौन है।" अम्मा जी अपने पुत्र के स्वर से जरा भी आक्रात नही थी।

'हा, फादर स्मिथ ईसाई है लेकिन हजार हिन्दुओ से अच्छे हैं। वह पेशे से पादरी हैं, गिरजाघर मे रहते है लेकिन सूरदास के पद गाते है,

कृष्ण काव्य पर किताबें लिखी हैं। समझी आप। जन्म उनका स्पेन में जरूर हुआ है पर आधी से ज्यादा जिन्दगी भारत में काट दी। गुजरात में रहकर आदिवासियों की जो सेवा की है वह भारत में जन्मा कोई हिन्दू भी क्या करेगा। यह सब आपके लिए कुछ नहीं है ?

'सूरदास के पद गा लेने से कुछ नहीं हो जाता। है तो वह ईसाई ही। साफ सुन लो घर के बर्तनों में खाना नहीं खिलाया जायगा। मैं घर के बर्तन खराब नहीं होने दूंगी। तुम अपना ज्ञान अपने पास रखो, मुझे न सिखाओ।" अम्मा जी अपनी ही कहे जा रही थी, पुत्र की बात का उन पर कोई असर नहीं हुआ।

'अम्मा जी ठीक कह रही हैं। घर के बर्तनों में कहीं ईसाई मुसलमानों को खिलाया जाता है।' रामसिंह की पत्नी ने सास का पक्ष लिया।

'तुम चुप रहो जी।" रामसिंह ने पत्नी को डाटा फिर सामने बहती गंगा की ओर उंगली उठाकर बोले 'यह जो गंगा बह रही है यह किस लिए है। अगर ईसाई के खाने से आपके बर्तन अपवित्र हो जाते हैं तो उन्हें गंगा में धो लीजिए, पवित्र हो जायेंगे। और अगर गंगा में इतनी शक्ति नहीं है कि अपवित्र बर्तनों को पवित्र कर सके तो फिर गंगा को पूजना छोड़ दीजिए।'

हम तुझसे बहस नहीं करनी है। अगर तुझे घर के बर्तनों में ही खिलाना है तो खिला हम घर से चले जायेंगे। हमसे अपना धर्म नहीं बिगाड़ा जायेगा, जिन्दा मक्खी नहीं निगली जाती।' अम्मा जी ने चटाई उठाई और आंगन के एक कोने में बिछाकर सर पर हाथ रखकर बैठ गयी। मुंह उनका अब भी चल रहा था 'हमारे भी कैसे भाग हैं, दो दिन को आओ तो चैन नहीं। अरे हमने तो सब माया मोह छोड़ दिया। अपने गांव के कच्चे घर में पड़े रहते हैं। अब तुमने बुलाया तो चार दिन को आ गये। हमारे पीछे चाहे नंगा नाच नाचो, हमें क्या, हम टोकने थोड़ी आते हैं पर अब आंखों के आगे नहीं देखा जाता। चार दिन की जिन्दगी रह गई है, अब हमसे अपना धर्म नहीं बिगाड़ा जाता।'

'तो हम कब कह रहे हैं धर्म बिगाड़ो। हमारी तरफ से जैसे बने वैसे धर्म निभाओ। मगर अम्मा जी धर्म के नाम पर ढोंग मत करो। धर्म

न हुआ मजाक हो गया। छुई मुई का पौधा है धम बस छू दिया और धम कुम्हाला गया।"

'हा हा हम तो ढागी हैं ढाग करत है। एक तुम्ही तो हा धम क रक्षक।"

रामसिह हाथ जोडकर अम्मा जी के आगे खडे हो गये बस करा अम्मा जी बस करो। बहुत बडी गलती हा गई जो स्मिथ को बला लिया। आगे से कभी ऐसी गलती नही होगी। सिवा ब्राह्मणो के और किसी को घर म खाने के लिए नही बुलायेंगे। अब स्मिथ को बुला लिया है ता वह आयेंगे ही और खाना भी खायेंगे। आपके बतन खराब नही होंगे विश्वास कीजिए। अभी बाजार से शीशे के गिलास और चीनी की प्लेटें मगवाता हू। उन्ही मे खिलाऊगा। अगर खाना बनाने म कोई आपत्ति हो तो उसे भी बाजार से मगवा लूगा।" रामसिह पैर पटकते हुए कमरे मे गये। दस-दस के दो नोट निकाल कर मोहन को दते हुए बोले, "लो, यह बीस रुपय हैं अभी बाजार जाओ। दा शीशे के गिलास एक पानी का मग और दो चीनी की बडी प्लेटें, चार छाटी प्लेटें ले आओ।" रामसिह एक मिनट को रुके, फिर बाले "और दखो स्मिथ साहब के जाने के बाद इन सब को यहा से ले जाना। चाहो तो इन्हे अपन पास रख लेना, या अपन पास न रखना चाहो ता किसी को द देना, अगर कोई भी लेने को तयार न हो तो उठाकर गगा म फेंक देना।"

मोहन बाजार जाने के लिए मुडा ही था कि रामसिह ने फिर टोका, देखो, जल्दी आना। तुम्हे अभी सिविल लाइन्स जाना है। ट्रिवोली होटल मे स्मिथ ठहरे हैं। उन्हे लेकर यहा आना है। मैं पत्र लिख रहा हू। पत्र लेकर जाना। कोइ दिक्कत नही होगी। स्मिथ साहब बहुत अच्छे आदमी है।'

स्मिथ साहब न बहुत आकषक व्यक्तित्व पाया है। पहली बार म जो दखता मुग्ध हो जाता। मोहन भी देखता रह गया। लम्बा शरीर, उस पर पादरी का लम्बा चोगा, सर पर छोटी सफेद टोपी। चेहरे पर दाढी और

आखा पर सुनहरी कमानी का चश्मा उनके व्यक्तित्व को निखार रहा था। स्मिथ रुक रुक कर धीरे धीरे बालते। बोलते समय हल्की-सी मुस्कराहट उनके चेहर पर उभर आती है। यह मुस्कराहट एक प्रकार से सम्मोहन का काम करती, जो सामन वाले को अपन वश मे कर लेती।

मोहन ने अपना परिचय दिया और चलने के लिए कहा। स्मिथ साहब पहले स ही चलन क लिय तैयार बैठ थे। मज पर एक बड़े लिफाफे म फल रक्खे थ इशारे स माहन का उन्ह उठा लन के लिए स्मिथ साहब न कहा। खुद हाथ म दो किताबें लकर होटल स बाहर आ गये। एक रिक्शा मोहन न पहल से ही तय कर लिया था उसी पर बठकर दोनो चल दिये। रास्ता लम्बा था, मगर दाना ही मौन रह। कोई बात नहीं हुई। माहन अपनी आर स बालन म पहल कर नही सकता था, और स्मिथ साहब स्वभाव स शायद अल्पभाषी थ।

गगभवन को दखकर स्मिथ साहब आश्चर्य म पड गय। 'सो आल्ड,' उनक मुह स निकला।

' जी हा तीन चार सौ साल पुराना है। शायद इसे किसी बडे सठ न बनवाया था। पर अब तो एक वकील साहब के हाथा म इसकी दुर्गति हो रही है। दसियो हिस्से म बाट कर किराया खा रहे हैं। मरम्मत तो इसकी भूल म भी नही करात। एक सास मे मोहन इतना कुछ कह गया मगर फिर महसा चुप हो गया। उस इतना नही बालना चाहिए स्मिथ साहब क्या सोचते होंगे।

घर के दरवाजे पर बहुत उत्साह स रामसिंह न अपन मित्र का स्वागत किया। दोना कृष्ण काव्य प्रेमी कृष्ण भक्त आत्मीयता स्वाभाविक थी। रामसिंह ने सबसे पहले अपनी मा से ही परिचय कराया। स्मिथ ने झुक कर अम्मा जी के पैर छू लिए। सभी देखत रह गये। एक पादरी भारतीय परम्परा का पालन कर रहा है, आश्चर्य होना ही था। मोहन ने दखा, अम्मा जी क चेहरे पर खिसियाहट का भाव उभर आया। जिसे अछूत माना उसने ही पर छू कर सम्मान दिया।। हाथ उठाकर जस तसे आशीर्वाद दिया।

जितनी देर स्मिथ साहब घर मे हैं माहन को भी घर म ही रहना

यह आपकी महानता है। लेकिन मेरा ऐसा विश्वास है कि हिन्दुस्तान की धरती पर जो भी पैदा हो जाता है, वह मनुष्य को विभाजित करके ही देखता है। यहां के कुछ संस्कार ही ऐसे हैं।'

'ऐसा सबके लिए नहीं कहना चाहिए।" स्मिथ साहब ने समझाना चाहा "हां इस बात पर आश्चर्य होता है जो धर्मसिद्धान्त में बहुत उदार और सर्वप्रिय और सर्वहित का व्याख्याकार है वह व्यवहार में कट्टर चलता है। मेरी बात को अन्यथा न लेना। मैंने हिन्दू धर्म और संस्कृति का गहरा अध्ययन किया है, और कृष्ण मुझे बहुत प्रिय हैं इसीलिए यह सब कह रहा हूं।

आप विद्वान ही नहीं, उदार भी हैं, और भारतीय संस्कृति से आपका प्रेम है इसी से मैं भी आपसे बात करके बहुत सुख पा रहा हूं। मगर क्षमा कीजिएगा हिन्दुस्तान की धरती पर सिर्फ हिन्दू ही बटकर नहीं चलता बल्कि ईसाई और मुसलमान भी अपने को खानों में बांटकर जीने में विश्वास करता है। अंग्रेजों ने इस देश को जीता और यहां ईसाइयत को फैलाया, मगर साथ ही उन्होंने अपने रक्त को भी बचाये रखने का उपाय खोज लिया। अगर कोई भारतीय ईसाई बन गया और उसने किसी अंग्रेज महिला से शादी कर ली या किसी अंग्रेज महिला के प्रस्ताव पर किसी भारतीय ने ईसाई बनकर उससे विवाह कर लिया तो वह अंग्रेज नहीं कहलाया उसे एंग्लो इण्डियन ही कहा गया। यानी एक नई जाति ने जन्म ले लिया। या भी सीधे-सीधे गोरी चमड़ी ने काले भारतीयों को अपने साथ नहीं लिया है। मुस्लिम धर्म ने भी काफिर का उद्धार करके उसे मुसलमान तो बना लिया पर ऊंची जाति के मुसलमान यानी पठान सैयद और शेख, ने उससे अपनी लड़की की शादी करनी कबूल नहीं की। उसे जुलाहा भिश्ती जैसे नीचे शब्दों से जोड़े रखा। जाति प्रथा वहां भी कायम है भले ही वह छिपे रूप में ही क्यों न हो। इसलिए दोष सिर्फ हिन्दू धर्म को ही क्या दिया जाये।"

स्मिथ साहब कुछ आश्चर्य से मोहन की ओर देख रहे थे। मोहन अपनी ही रौ में बोलता जा रहा था। 'अब देखिए, हिन्दुस्तान को आजाद हुए दस साल से भी ऊपर हो गया। दो आम चुनाव भी हमने देख लिए।

सविधान ने सभी को बराबर माना है लेकिन क्या व्यवहार म ऐसा है ?" नहीं, हम आज सदियो पीछे की दष्टि स मोचते ह । धम की सतह पर बराबरी की बात सिफ ऊपरी दिखावा है । हा, एक चीज़ न जरूर अपना रग दिखाया है, और वह है पैसा । पैसा अगर किसी के पास आ जाता हे तो उसकी जाति, धम, पेशा, सब गौण हो जाता है । वह कि पैसे वाला की ही एक ऐसी जाति है जो समान स्तर पर जीती है । जिसम काई भेद भाव नही है और यही पर लगता है धम की उपयागिता भी मनुष्य के लिए समाप्त होती जा रही है ।"

सहसा मोहन को ख्याल आया वह कुछ ज्यादा ही बोल गया है । कम से कम उसे स्मिथ साहब से यह सब नही कहना चाहिए था । उनसे पहली बार मिलना हुआ है, क्या सोचेंगे मन मे, "मैं शायद कुछ ज्यादा कह गया आप क्षमा करेंगे ।"

"कोई बात नही," स्मिथ साहब मुस्कुराये "मैं खुले दिल के आदमियो को बहुत पसन्द करता हू । तुमन मन की बात कही हमको अच्छा लगा ।"

होटल आ गया था । होटल के अन्दर जाने स पहले स्मिथ साहब न अपने चोगे की ऊपर वाली जेब से अपन नाम का काड निकाला और मोहन को देते हुए बोले हमारा पता रख लो, पत्र लिखना, और अगर गुजरात आओ तो हमसे जरूर मिलना । तुम्हारे जैसे नौजवान हम बहुत प्रिय हैं ।'

मोहन न सर झुकाकर सम्मान प्रकट किया ।

और देखो, एक बात का बराबर ध्यान रखो । हर गोरी चमडी का आदमी अग्रेज नही होता । भारत मे रहने वालो के मन म अग्रजा के लिए गुस्सा हो सकता है पूरे यूराप के लिए नही होना चाहिए । ठीक है न ।' स्मिथ साहब न अपनी मुस्कान बिखेरते हुए कहा तुमने अपनी जात 'मानव' मानी है । मानव को सबसे प्रेम हाना चाहिए । किसी से क्रोध नही करना चाहिए । अग्रेजो स भी नही ।"

"मैं आपस फिर क्षमा मागता हू कुछ गलत कह गया हू तो क्षमा कर दीजिए ।" मोहन ने हाथ जोडकर विनम्रता से कहा ।

"ठीक है   ठीक है।" स्मिथ साहब ने अपने सीधे हाथ से मोहन का कन्धा थपथपाया, और होटल के अन्दर चले गये।

मुग्गा ताई चलने फिरने लायक हो गयी थी। बुखार के बाद कमजोरी काफी आ गई। धीरे धीरे लाठी टेकती दुकान तक आ जाती। दुकान तो चलानी ही थी, आखिर खाने को दो रोटी भी तो चाहिए। अपने हाथ-पर चलाये बिना खाने को रोटी कौन देगा। मोहन ने बीमारी में काफी भाग दौड़ की। दोनों टाइम दवा देता। दूध गरम करके पिलाता। ताई बोलते बोलते रो पड़ती   अब नहीं बचूंगी   मेरे दिन पूरे हो गये।"

मोहन हसने लगता   ताई मांगने पर जो चीज नहीं मिलती, वह मौत ही है। तुम अपनी तरफ से कितना ही मरने की बात सोचो मौत तो जब आनी होगी तभी आयगी। बेकार में दुखी हो रही हो।"

मुग्गा ताई मोहन की ओर देखती रह जाती। कौन है यह जो इतना धीरज बंधा रहा है! अपने तो सब पराये हो गये। लड़कियो को पत्र लिखवाया था तो कोई भी देखने नहीं आई। एक ने दो-चार लाइनों का जवाब दे दिया दूसरी से तो वह भी नहीं हुआ। मोहन न होता तो एक घूट पानी को तरस जाती। शरीर में कुछ जान आई तो फिर दुकान पर बैठने लगी। ठीक कहता है मोहन जब तक शरीर में जान है तब तक हाथ पर चलाने होंगे।

ताई अपनी दुकान पर बैठी थी। सामने स्कूल बन्द पड़ा था। इस बार बड़े दिन की छुट्टियां लम्बी हो गयी। पूरे पन्द्रह दिन की। अभी भी स्कूल खुलने में दो दिन बाकी है। स्कूल खुला होता तो दुकान पर एक न एक लड़का दिखाई दे जाता। कुछ न कुछ बिक्री होती ही रहती। और कुछ नहीं तो दो चार लमनजूस और आमपापड़ के टुकड़े ही बिक जाते। अब तो मक्खी मारने के सिवा और काम ही क्या है।

ताई को खाली बैठा देखा तो मोहन भी कोठरी में से मूढ़ा निकाल लाया। कोठरी के आगे चबूतरे पर मूढ़ा रखकर बैठ गया। ताई से बात-चीत शुरू हो गई   स्कूल खुल जाय तो कुछ रौनक हो जाय।

"हा, स्कूल खुला रहता है तो आवा जाही लगी रहती है।"

"मालूम नही सविता का दिन कस कटता है। स्कूल बन्द है, और कोई काम करती नहीं। मुहल्ले मे भी किसी के यहा आना-जाना नही है। आजकल तो वह चन्द्रभान भी पढान नही आता।'

'ऐ ले यह तून खूब कही।" ताई न हाथ नचाकर कहा अभी एक घण्टे पहले तो वह कमरे मे घुसा है।

"अच्छा!" मोहन ने आश्चय से कहा, इसका मतलब है चन्द्रभान बाहर से लौट आया।"

गली से गुजरता हुआ एक आदमी कुछ लेने के लिए दुकान पर रुक गया। मोहन एकटक सविता के घर की तरफ ही देख रहा था। कुछ दर बाद ही सविता के घर का दरवाजा खुला और चन्द्रभान जीने पर आकर खडा हो गया। उसके पीछे सविता भी दिखाई दी। दोनो कुछ बात कर रह थे। मोहन ने देखा चन्द्रभान उसी की ओर उगली उठाकर बार बार कुछ इशारा करते हुए सविता को कुछ ममझा रहा था। जरूर यह उस दिन की लडाई की बात बता रहा होगा, जब उसन मारते मारते छोडा था। अब मौका मिला है तो सविता को भडकान पर लगा हुआ है।

ले, वह जीने पर खडा तो है चन्द्रभान। वह राड भी तो खडी है।' ताई न भी दोना को देख लिया था। घणा से ताई का मुह सिकुड गया।

"चन्द्रभान मेरी शिकायत कर रहा है सविता से।" मोहन न कहा।

'तरी शिकायत काहे की।" ताई ने पूछा।

'वह उस दिन मेरी और चन्द्रभान की कहा सुनी हुई थी न उसी को बताकर सविता का भडका रहा है। दो बार उगली से मेरी तरफ इशारा कर चुका है।"

"करने दे इशारा। सविता क्या कोई लफटट लगी है जो तुझे खा जायगी।" ताई का गुस्सा और बढ गया।

"देख लेना, यह चन्द्रभान एक दिन इस सविता को बेच क खा जायेगा।"

'यह राड है ही इसी लायक।" ताई का मुह अब और सिकुड गया 'अपने मरद को छोडकर सौ कोस चलकर यहा मरने आई है। कीडे पडेंगे।'

माहन न कोई जवाब नहीं दिया। उसे ताई की बातें अच्छी नही लगी। न जान क्या वह सविता की आलाचना सुन नहीं पाता। हालाकि सविता न अपनी ओर से उस कभी भी निकटता देन की काशिश नही की। बस राह चलत एक-दो बार मुस्कुराकर उससे हालचाल पूछ लिया। शायद यह मुस्कुराकर दखना ही माहन को भीतर तक रस म भिगा गया था।

चन्द्रभान गगमहल क फाटक स निकलकर अपन घर की ओर नही गया बल्कि गली म मुडकर माहन के सामन स हाकर गगा की तरफ चला गया। अभी चन्द मिनट ही गुजर थे कि चन्द्रभान वापस आता दिखाई दिया। इस बार माहन न भी अपन चहरे का सख्त कर लिया। मन म तय कर दिया कि अगर जरा भी चन्द्रभान न कुछ कहा तो बिना मार न छाडेगा। लकिन इसकी नौबत नही आई। चन्द्रभान इधर-उधर दखता हुआ सीधा चला गया।

दखा ताई यह मुझ चिढान क लिए ही गली म चक्कर लगा रहा ह। माहन न ताई स शिकायत की।

लगान दे चक्कर, तरा क्या जाता है। गली तो सरकारी है। इसम ता पागल कुत्ता भी घूमता रहता है कोई रोकता है उस।" ताई न चिढ कर कहा।

एक सप्ताह में ही मोहन के आगे यह स्पष्ट हो गया कि सविता उससे कुछ खिंची खिंची-सी है। गगमहल म आते-जाते एक-दो बार सविता मिल गई लेकिन मोहन को देखते ही सविता ने मुह घुमा लिया। उसके चेहरे पर कुछ नफरत और गुस्से का भाव उभर आया। पहल तो ऐसा कुछ नही था। यह सब उस पाजी चन्द्रभान की करतूत है। उसी ने सविता को भडका दिया। मोहल्ले वाला की करतूता से तो वसे ही चिढ पैदा हो रही थी अब तो मन और भी उचट गया। कटरा म रहने के लिए कोई कोठरी देखेगा। वहा से बाईडिंग हाउस भी नजदीक रहेगा और कालेज आने-जाने म जो बेकार का समय लगता है वह भी बच जायेगा।

मगर सुग्गा ताई ने यह सब सुना तो रोन लगी, बेटा, हमे छोड के न

जा। और अब हम है ही कितने दिन के। जरा सास रुकी बस खेल खतम हो जायगा। डाल के सूखे पत्ते हैं, न जाने कब झड जायें। तू सेवा न करता तो अभी बीमारी म ही चल देते। अब हमारे मरे पीछे यहा से जाना।'

'ताई, तुम तो बेकार की बात करती हो।" मोहन ने गुस्सा दिखाते हुए कहा।

"नही रे हम ठीक कह रहे हैं।" ताई बोली, 'जब तक प्राण है माया माह मे बधे है, तू यहा है तो लगता है अपना कोई है। अकेली जान तो कब की चल द।" ताई फिर रोने लगी।

"अच्छा अच्छा नही जाऊगा।' मोहन ने हाथ जोडकर माथे से लगाते हुए कहा 'जब तक तुम नही कहोगी कोठरी नही छोड़ूगा। बस अब चुप भी हो जाओ।"

शुक्रवार का कॉलेज म आखिरी पीरियड एक बजे समाप्त हो जाता है। बाइडिंग हाउस मे काम चार बजे ही शुरू हो जाता है। बीच का समय मोहन कॉलेज के पास अल्फेड पाक की लाइब्रेरी म किताबो के बीच बैठकर गुजारता। इस लाइब्रेरी का भी अपना एक आकषण है। अग्रजी जमाने की बनी हुई है। अग्रेजी शासन की शान शौकत और सुरुचि साफ झलकती है। काफी बडे पाक के बीच म लाइब्रेरी बनाई गयी। पाक म बडे ऊचे पेडो के बावजूद भी घास के लॉन के लिए खुली जगह रखी गई। फलो की क्यारियो के किनारे किनारे मेहदी की ऊची-ऊची बाड बहुत सुन्दर लगती। इसके पास ही पत्थर की बेंचें है। इस सब शान्त वातावरण ने लाइब्रेरी को और भी आकषक बना दिया। जिस ज़माने मे लाइब्रेरी बनवाई गई होगी, उस समय शहर की आबादी थोडी होगी, इसीलिए कमरे गिने-चुने बने। अब शहर की आबादी बढी तो कमरा की कमी का पूरा करने के लिए बारामदो को लकडी के तख्तो से बद करके रीडिंग रूम की शक्ल दे दी गई। मगर फिर भी इतने लोग हर समय लाइब्रेरी मे बैठे रहते है कि नये आने वाले को खाली कुर्सी मिलनी कठिन हो जाती है। ज्यादातर पढने वाले किताब इश्यू कराकर बाहर बाग म

आकर किसी पेड़ के नीचे, या महदी की फॅम क पास घास पर बठकर पढ़ते हैं। खुले वातावरण म पढ़न का एक अलग ही आनन्द है। मोहन भी इसी तरह घास म बठकर पढ़न का आदी हो गया था। आज भी उसन दो किताबें इश्यू करायी और लाइब्रेरी स बाहर आकर अपने बैठन क लिए जगह की खोज म इधर उधर नजर दौड़ाई। ज़रा हटकर एक पेड़ क पास महदी की ऊची फॅस के सहारे बठने की अच्छी जगह नजर आई। मोहन न उसी ओर पर बढ़ा दिय।

बगर किसी तरह की आवाज किय मोहन महदी क झाड क सहारे उगी घास पर बैठ गया। अभी किताब खोलकर पढ़ना शुरु ही किया था कि महदी की झाड के दूसरी ओर से एक महिला क हसन की आवाज आई। हसी कुछ जानी-पहचानी-सी लगी। कौन हो सकता है इस दोपहर म यहा। दो क्षण बाद ही सब स्पष्ट हो गया। महिला के साथ ही पुरुष स्वर भी जाना पहचाना निकला। यह तो चन्द्रभान और सविता है। पर सविता इस समय यहा पाक म कैसे आ गई। इस समय तो उसका स्कल होता ह। हो सकता आज भी इस्पेक्टर आफिस जाने के बहाने स सविता ने आध दिन की छुट्टी स्कूल से मार दी हो। यह पुराना बहाना है। इस्पेक्टर आफिस स्टेशन के पास है स्कल से पूरे तीन मील दूर। इस्पक्टर आफिस जान के बहाने आधे दिन की छुट्टी आसानी स मिल जाती है।

तुम तो कह रहे थे एम० ए० करत ही शादी कर लोगो। अब तो एम० ए० पास किय हुए काफी समय हो गया।" सविता न नाराजगी क स्वर म कहा।

ठीक है। एम० ए० पास कर लिया है मगर पक्की नौकरी जब तक न मिल जाय तब तक गहस्थी का बोझ कसे उठा सकता हू।" चन्द्रभान न समझात हुए कहा।

क्यो नौकरी तो तुम अब भी कर रह हो?'

यह भी कोई नौकरी है! यह तो निजी प्रकाशन सस्था म चार सौ रुपय का पाट टाइम जाब सा है। इससे तो बस जेब खच निकलता है। फिर यह भी तो कोई पक्की नौकरी नहीं है, जब चाहे मालिक निकाल द।

'मेरी भी तो नौकरी चल रही है। हम थोड़े म ही गुजारा कर

लगे।'

"तुमने तो एक मिनट म ही सारा हिसाब जोड दिया। तुम प्राइमरी स्कूल की टीचर हो। तुम्हारे वेतन म तो तुम्हारा और तुम्हारी मा का ही खच मुश्किल स चल पाता है। इसम और बोध कसे उठाया जा सकता है।"

एक क्षण के लिए मौन छा गया। फिर सविता न अटकत हुए कहा 'तब क्या जिन्दगी इसी तरह घिसटती रहेगी।"

'नही भई तुम ऐसी निराशा की बात कैसे कर रही हो। अच्छी नौकरी ढूढ रहा हू। थीसिस भी चल रही है। साल डढ साल म थीसिस पूरी होन पर लेक्चररशिप मिल जायेगी।

'मैंने तो सुना है अभी तुम्ह पी एच० डी० करने की इजाजत भी नही मिली है।' सविता न जरा रोष से कहा।

'तुम्हे तो पता नही कहा-कहा स झूठी खबरे मिल जाती हैं। अरे मै जो कह रहा हू, उस पर विश्वास करो। एक बार थीसिस पूरी हो जाय कालेज म नौकरी मिल जाय फिर सब ठीक हो जायगा।'

'होने को तो बहुत कुछ हो जायेगा पर अभी क्या हो रहा है।" सविता की आवाज म तीखापन उभर आया आखिर हम अपनी शादी कब तक टालते रहेंगे। समय बीता जा रहा है। इस तरह कसे काम चलेगा?'

"अब मैं तुम्ह कैसे समझाऊ।' चन्द्रभान ने कहा 'गृहस्थी जमाना कोई बच्चा का खेल है। जब तक पूरी आर्थिक सुरक्षा न हो जाय कोई कदम उठाना ठीक नही है। हमारी कोई और मदद तो करेगा नही। हम तो खुद ही अपने पैरो पर खडा होना ह। इसीलिए कहता हू जल्दी नही करनी चाहिए। थोडा धीरज धरो।"

सविता ने कोई जवाब नही दिया। सविता को चुप दखकर चन्द्रभान फिर बाला, 'और तुम भी जरा मन लगाकर अपनी पढाई पूरी कर डालो।'

मरा पढाई म मन नही लगता।" सविता न कहा।

मन तो लगाया जाता है, समझी। अगर तुम इण्टर पास

ता तुम्हे नौकरी म तरक्की न मिल जाये।"

' इण्टर कैसे पास करू। तुम ता न जान कौन सी पढाई करा रह हो।"

"अच्छा ऐसा व्यग करेगी।" चन्द्रभान न कहा। इसके बाद सविता जारो से चिहुक उठी। शायद चन्द्रभान ने सविता के चुटकी काट ली थी। अब दोना ही हस रहे थे।

और ज्यादा नही सुना जायेगा। वैसे भी अब यहा बैठना ठीक नही है। अगर सविता और चन्द्रभान ने दख लिया तो कहगे मैं उनका पीछा कर रहा था। मोहन न जल्दी स किताबें समेटी, चप्पल पहनी और दबे पाव लान पार करके लाइब्रेरी के सामन आ गया।

मोहन का किसी काम म मन नही लगता। सब तरफ से जी उचट-सा गया। बार-बार सविता का चेहरा सामन आ जाता। मोहन जानता था उसके किये कुछ नही हो सकता। सविता का यह निजी मामला है जिसके साथ चाह उठे बैठे। फिर वह तो कही स भी सविता की जिन्दगी को नही छू सकता। इस बात को साच साचकर परेशान होन स कोइ फायदा नही।

कटु सत्य को जान लेने के बाद भी मन कही नही टिकता। रात ठीक स नीद भी नही आई। सुबह से सर मे हल्का-सा दद हा रहा था। ऐसे मे कालेज जाया नही जा सकता। कही भी जान को मन नही हो रहा।

जनवरी के पहल सप्ताह की प्यारी धूप चारा ओर फली हुई थी। गली पार स्कूल लग गया था। अपन-अपने क्लास की लडकियो को लेकर अध्यापिकायें कमरा के सामने छोटे सहन म आकर बठ गयी। धूप म क्लास लगाने से पढाई भले ही न हा, धूप सेकने को ता खूब मिलती है। आपस म बातचीत भी चल रही है। चिडियो की चहचहाहट की तरह छोटी लडकियो की आवाज भी रह रहकर उभर उठती। गली मे एक-दो आदमी गुजरत रहते। मुग्गा ताइ की दुकान भी खुल गइ।

मोहन न अपनी काठरी क सामन चटाई बिछाकर बठन का इतजाम

कर लिया। जमीन पर बठकर सामने लकडी की चौकी रखकर लिखने की आदत है मोहन को। इस समय भी वह अपनी लिखाई म लगा था। अभी मुश्किल से एक पेज ही लिख पाया होगा कि सविता सामने सहन स उठकर उसके पास आकर रूखी आवाज मे बोली तुम आज कॉलिज नही गये।"

आज मेरे तीन पीरियड खाली है इसी से नही गया।' मोहन न बहाना बना दिया।

'मैं समझी शायद आज छुट्टी है। एक क्षण के लिए सविता रुकी फिर बोली 'देखो तुम समझदार हो। सारी बात समझते हो। हम लोग बाहर पढा रही हैं, इसलिए तुम्हे अन्दर बठना चाहिए। मेरी तो खैर कोई बात नही, लेकिन दूसरी अध्यापिकाओ क मन म बात आ सकती है कि तुम उन्हे हा दख रहे हो।'

मोहन सहसा सहम गया। सविता इतने छिछोरेपन पर उतर आयेगी इसकी आशा नही थी। कल जो कुछ अल्फ्रेड पाक म देखा उस अगर कह दे तो? खुद सारे कुकम करके अब उपदेश दे रही है। तिरियाचरित्तर की मा हद हाती है। मोहन का गुस्से से चहरा खिच गया। मगर उसने अपने पर काबू रखा सधे शब्दो म बोला, मैं जब भी कॉलिज नही जाता हू यहा बठकर काम करता हू। फिर आज क्या नइ बात हो गई।"

'मैं तुमसे बहस करने नही आई हू। सविता ने चिढकर कहा, 'तुम्हारी भलाई क लिए कहा। अब तुम मानो न मानो तुम्हारी मर्जी, हा कल को कुछ भला-बुरा हो जाये ता मत कहना।'

'अरे तू क्या भला बुरा करने आई है। मेरे से बता मेरे से। सुग्गा ताई ने अपनी छाती पर हाथ मार कर कहा अपनी कोठरी के आगे भी न बठ। तूने क्या सारे मुहल्ले का ठेका ले रखा है?

सुग्गा ताई की आवाज सुनकर सविता घबरा गई। इस अचानक हमले क लिए वह तैयार नही थी। मगर फिर गुस्सा दिखाते हुए बोली 'तुम बीच म न पडो ताई तुम्हारा कोई मतलब नही है बोलने का।

'मतलब कसे नही है रे।' ताई और ऊँचे स्वर म चिल्लायी, "तू दूसर को दोष दे और मैं चुप रहू। राड तू अपने को देख। मेरी जबान

न खुलवा नही तो तेरे को यही गली म नगा कर दूगी।"

ताई तुम चुप रहो। तुम मत वाला। माहन ने ताई का गकना चाहा।

अरे रहन दे दन्नू। ताइ उठकर खडी हा गयी। मोहन का हुक्म दत हुए कहा तू जा यहा से मैं आज इस रांड को सीधा करके मानूगी। रस्सी जल गई मगर ऐंठन नही गई।"

'ताई अपनी जबान सम्हाल न, नही ता ठीक नही हागा।' सविता *रुआसी सी हो आई थी।*

जा जा बुला ले अपने यार चन्द्रभान का। दखू मरा क्या कर लेगा।' ताई अपन आपे मे नही था, मैं थाना कचहरी सब करूगी। एक एक लडकी के घर जाकर तरे चरित्तर बखानूगी। देखू तू कैसे यहा नौकरी करती है।

स्कूल की दूसरी अध्यापिकाए उठकर आ गयी। लडकिया खडा हाकर इस काण्ड को बडे मनोयोग स देख रही थी। अच्छा खासा तमाशा हो गया। दो अध्यापिकाओ ने सविता को बाह पकडकर ऊपर सहन म ल जाकर खडा कर दिया, फिर कुछ साचकर सविता को उसके घर भज दिया। मोहन पहले ही कोठरी बन्द करके चला गया था। ताई भी अपनी दुकान पर बैठ गयी। हालाकि वह अब भी गुस्स स उबाल खा रही थी। मुह स कुछ बोल भी रही थी, मगर साथ ही दुकान पर आय ग्राहक को सौदा भी देती जा रही थी।

एक बार को तूफान रुक गया। वातावरण शान्त हो गया। लगा बात जसे आई गई हो गई।

मोहन क लिए दोहरा सकट हो गया। कोठरी म रहा नही जा सकता, और सडक पर बैठा और सोया नही जा सकता, सिफ चला जा सकता है। लेकिन चलने की भी एक सीमा होती है आखिर कहा तक चला जाये।

बस्ती से फटरा तक मोहन पैदल चलकर आ गया। सारे शरीर म

थकान भर गई। सोच-सोच कर सर पहले से ही भारी हो रहा है। कहीं न-कहीं थोडी देर बैठकर सुस्ताना होगा। थोडा आगे चौराहे पर एक खोखे म चाय की दुकान नजर आई। बाहर फुटपाथ पर पडी बेंच पर मोहन बठ गया और एक गिलास चाय का आडर दे दिया।

चाय पीते हुए मोहन क दिमाग म एक एक घटना घूमने लगी। सविता इतनी नीचताई पर भी उतर सकती है, यह कभी नही सोचा था। यह सब चन्द्रभान के सिखाये का नतीजा है। सविता की अपनी बुद्धि तो मारी गई है, तभी ता अपना भला बुरा कुछ समझ नही पाती। जो चन्द्रभान ने समझा दिया, उसी पर अन्धो की तरह चल पडती है। कल को जब चन्द्र-भान अगूठा दिखा देगा तो रोये नही चुकेगा। जाये जहन्नुम मे हम क्या। जो दूसरो पर कीचड उछालेगा उसे सबक तो कभी न कभी जरूर मिलगा। मोहन को सविता स नफरत हो गई।

मोहन न सोचा था कमरे म रह कर आराम करेगा। लकिन आराम तो दूर की बात, उल्टे सारा दिन काटने की समस्या सामने आ गई। तीन बज के बाद तो बाइण्डिग हाउस मे समय कट जायेगा। लकिन उसस पहले का समय जरूर सडक नापते हुए बिताना पडगा। मित्र सब अपने काम से घर क बाहर होगे। वैस भी किसी दोस्त के घर पर आधा पौने घण्टा ही काटा जा सकता है। इससे ज्यादा नही बठा जा सकता। अल्फ्रड पाक की लाइब्रेरी म समय अच्छा बीत जाता है मगर कल की घटना स तो उस आर जान का मन ही नही हो रहा है। समय तो काटना ही है चाहे सडक नापते हुए काटा जाय या कि किसी पाक की बेंच पर लेट कर बिताया जाये।

जाडो म रात बहुत जल्दी घनी हो जाती है। आठ बजते-बजते सडक सूनी हो गइ। मोहन की कोठरी के सामने वाली गली भी शान्त है। गगा की तरफ से आने वाली तज हवा की सरसराहट ही सुनी जा सकती है। कोठरी का ताला खोलते हुए मोहन ने तय किया कि सुबह तडके ही वह कोठरी बन्द करके चला जायेगा। रात को फिर देर से लौटेगा। दो चार दिन

इसी क्रम म बीत जायेंगे तो सब आज की घटना का अपने आप ही भूल जायेंगे। इस बीच कोई नई जगह रहने के लिए खोजनी होगी। अब यहा नही रहा जा सकता। सारा मोहल्ला हाथ धोकर पीछे पड गया है। रोज की इस किचकिच से पढाई भी नही हो पायेगी, और अगर पढाई न हुई तो फिर गाव छोडकर इस शहर म रहने स फायदा ही क्या है।

इस बार किसी से कुछ नही कहना है। जगह मिलत ही चुपचाप सामान लेकर चला जायेगा। प्रोफेसर रामसिंह से भी नही कहना है। उनको भी अच्छी तरह देख लिया। जब काम पडता है तो हस कर बात कर लेत है, नही तो उपेक्षा का भाव चेहरे पर रहता है। क्या रामसिंह सामने आकर उसका पक्ष नही ले सकते ? अच्छी तरह जानत हैं कि चन्द्रभान कितना नीच है फिर भी जब बात होती है तो उसी को दबाने की कोशिश करते है। बहुत हो लिया। अब और नही दबा जा सकता। इसस पहल कि कोई बडी बात हो जाये उसे यहा स चला ही जाना होगा।

लम्प जलाकर मोहन न कपडे बदले। डबलरोटी साथ लाया है। एक कप चाय के साथ इस गले के नीचे उतार कर पेट भरना होगा। दोनो टाइम का खाना तो कभी-कभी ही नसीब होता है।

अंकल आपको पापा बुला रहे है।

मोहन न चौंक कर देखा। सामने रामसिंह का लडका खडा है। इसका मतलब यह कि उस पर बराबर निगाह रखी जा रही है। जस ही कोठरी म रोशनी हुई बुलावा आ गया। मोहन को सहसा जवाब देते नही बना। इस समय वह चुपचाप सो जाना चाहता था। दिन भर की थकावट के बाद किसी से बहस करने की इच्छा नही थी। लेकिन प्रोफसर रामसिंह के पास तो जाना ही होगा।

मैं खाना खा लू। तुम चलो अभी आता हू। मोहन ने रामसिंह के लडके से कहा।

स्टोव जल गया चाय का पानी भी उबल गया। डबलरोटी के पीस भी प्लेट म रख लिए। लेकिन खाने की इच्छा मर गई थी। न मालूम रामसिंह किस तरह पेश आयें। पर आज वह भी चुप नही रहेगा। अगर सीधी बात की तो सीधा उत्तर, नही तो सारी बात साफ हो जायेगी।

इस कोठरी मे रहने की सहूलियत देकर अब और नही दबाया जा सकता।
जैसे-जैसे दो कप चाय के साथ एक चौथाई डबलरोटी को गले के नीचे उतार कर मोहन ने कोठरी बन्द की। ठण्ड स बचने के लिए पुरानी शाल को ओढ लिया। कोठरी म ताला लगाया और प्रोफेसर रामसिह का सामना करन के लिए चल दिया।

रामसिह उसी का इतजार कर रहे थे। उनके पलग के सामन रखे स्टूल पर मोहन बैठ गया। बात रामसिह ने ही शुरू की। गुस्सा उनकी आवाज से साफ झलक रहा था मोहन हमने तुम्हे अपने पास इसलिए बसाया कि तुम कुछ बन सको। भविष्य म तरक्की कर सको। तुम एक होनहार नौजवान हो तुम्हारा भविष्य है। लेकिन तुम जिस तरह स चल रहे हो उससे तो मरा भी इस मुहल्ले म रहना मुश्किल हो जायगा।'

मैंने यह कभी नही चाहा कि मेरी वजह से आपको किसी तरह की तकलीफ हो। अब आप कह रह है कि मेरे कारण परशानी हो रही है तो मैं यहा स चला जाऊगा। दस-पाच दिन की मोहलत दीजिए। रहन की कोई दूसरी जगह मिलते ही कोठरी खाली करके चला जाऊगा।

रामसिह मोहन की ओर देखते रह गय। इस तरह साफ जवाब सुनने की उन्हें उम्मीद नही थी। उन्होने तो सोचा था कि मोहन डरता डरता आयगा सुबह की घटना के लिए माफी मागगा गिडगिडायगा, पर यहा तो उल्टे मोहन कोठरी खाली करके जान की धमकी द रहा है। अगर मोहन चला गया तो घर के और बाहर के दस फालतू काम कौन करगा। प्रोफसर रामसिह का स्वर एकदम नीचे आ गया। समझाते हुए बोले 'देखो बेकार म गुस्सा खान स तो कोई फायदा है नही। अपन भविष्य का ख्याल करो और बात को गहराई स समझो। कोठरी तुम कल ही छोड सकते हो यहा स जा भी सकते हो लेकिन जहा जाओग वहा भी अगर कोई इसी तरह का झगडा उठ खडा हुआ तो क्या वहा स भी कही और भागोगे। इस तरह तो बार-बार जगह बदलन स तुम्हारी पढाई एकदम चौपट हो जायेगी। भविष्य म जो कुछ बनने का सोचा है सब धरा का धरा रह जायगा। मैं यहा तुम्हे इसलिए लाया हू कि जमकर पढाई करो पर तुम हो कि अपनी जान झगडे-टटे म फसाये हुए हो।

"आप भी कैसी बात कह रहे हैं प्रोफेसर साहब ! "मोहन आश्चय से रामसिंह की ओर देखता रह गया, 'झगडा मैंने तो शुरू किया नही था। मैं ता अपनी कोठरी के आगे बैठा पढ रहा था। सविता न आकर मेरे चरित्र पर आरोप लगाना शुरू कर दिया। मुझे जलील करने की कोशिश की। अब मैं अगर कहू कि मैंने परसो अल्फ्रेड पाक म दोपहर का सविता और चन्द्रभान को जिस हालत म देखा, और जो कुछ कहते सुना तो क्या होगा

वस यही आकर सारी बात साफ हो जाती है।' रामसिंह ने झुझलाकर हाथ उठाकर कहा मैं पूछता हू तुमने देखा ही क्या। दुनिया म हजार आदमी हजार तरह की बातें करत हैं। हमने क्या सबका ठेका लिया है। दो क बीच की बाता म रस लोगे तो तुम जरूर फसोगे।'

यह क्या फसगा ?" प्राफेसर रामसिंह की पत्नी बीच मे बोल पडी 'जो पार्का म बठकर दीदा लडते हैं वह फसेंगे।"

तुम चुप रहा जी। रामसिंह न अपनी पत्नी को डाटा, 'यहा हम किस्म को निपटान की सोच रहे है तुम नय-नये पख निकाले जा रहा हो।'

'प्राफेसर साहब, मैं तो अल्फ्रेड पाक म पढने गया था। एक महदी की बाड के पीछे पढ रहा था पीछे बेंच पर यह दाना बैठकर बातें कर रहे थे। जब मुझसे सुना नही गया तो चुपचाप चला आया। मैंन तो किसी से कुछ कहा नही न ही वात बढाई।" मोहन ने सफाई दी।

'हा हा ठीक किया। दूसरे के कामो से हमे कुछ नही लेना देना। जो जसा करेगा वैसा भरेगा। दो के झगडा म पडो तो थाना-कचेहरी तक दौडते रहो। सबमे अच्छा तो यह है कि किसी के झगडे की तरफ देखो ही नही।'

'मैं तो खुद ही झगडे से दूर रहता हू। मोहन ने फिर समझाना चाहा आज भी सविता ही बोलती रही। मैंने तो जबाब भी नही दिया। मैं ता अपनी कोठरी का ताला लगाकर चला गया। पूरा दिन सडको पर काट दिया। अब लौटा हू।' मोहन ने कहा।

मगर तुम्हारी तरफ से सुग्गा ताई तो मरने मारने पर उतारू हो

गयी। यह तो पार्टीबाजी हो गई। यह क्या ठीक है।"

"देखो जी, सुग्गा ताई को कुछ न कहो। ताई दिल की एकदम साफ है। वह गलत बात सह नही सक्ती।" प्रोफेसराइन फिर बीच म बोल पडी, "इन दोनो मा-बेटिया ने क्या सारा मुहल्ला खरीद लिया है जो कि धरती-आकाश एक किये रहती हैं। इन दोनो ने समझ क्या रखखा है।"

'कमाल करती हो।" रामसिंह ने पत्नी को टेढी आख से तरेरा, "शाम को देखा नही तुमने, किस तरह मैंने दोना को डाटा था। साफ-साफ कह ता दिया मनकी स अपनी औकात म रहें। अगर कही बात बढ गई तो लेन के देने पड जायेंगे। और इससे ज्यादा क्या कहा जा सकता है।"

'पर दोना हैं परले दर्जे की बेहया। आज हा हा कर गयी हैं कल को फिर वही करेंगी। इन पर कोई असर होता है।"

"असर कैसे नही होता, मजाक है क्या ?" रामसिंह ने अपनी पत्नी को झिडक दिया, 'देखा नही, जब प्वाइण्ट की बात समझाई तो कैसा दाना सा मुह उतर गया। सारा उबाल निकल गया। कायदा-कानून अपनी जगह है। ज्यादा खिलवाड करने से रोटियो के लाले पड जाते हैं।"

मोहन के जी म आया, पूछे क्या प्वाइण्ट की बात समझा दी मनकी और सविता को, लेकिन फिर पूछने की हिम्मत नही पडी।

"जाओ, तुम भी साओ जाकर।" रामसिंह ने पलग पर सीधे लेटते हुए कहा "अपने काम से काम रखखो और जमकर पढाई करो। मैंने सब ठीक कर दिया है, आगे कोई बात न हो इसका ध्यान रखना।"

मोहन उठकर खडा हो गया। सहसा रामसिंह को जैसे कोई बात याद आ गई हो, "अरे हा, असली बात कहनी तो रह ही गई।' रामसिंह उठकर बैठ गये, "सूचना विभाग मे मेरे दोस्त हैं एल्बट। वह अपने विभाग की तरफ से यहा माघ मेले मे 'प्रदेश विकास प्रदर्शनी' कैम्प म आये हुए हैं। उन्हें एक आदमी की पूरे दिन काम करने की आवश्यकता है। काम कुछ खास नही है, बस प्रदर्शनी म ड्यूटी देनी है। दस रूपया रोज देंगे। अभी दस दिन तक माघ का मेला और चलेगा, हो सकता है दो-चार दिन और बढ जाये। तुम काम करना चाहो तो मैं पत्र दे दूगा। कल सुबह म ही काम पकड लो।"

माहन सहसा कुछ कह नही सका। चुपचाप सर झुकाय खडा रहा।

इसम इतना साच विचार की क्या बात है। काम मिल रहा है कर डाला। दो पसे हाथ आ जायेंगे। सुबह शाम की चाय और दापहर का खाना भी सूचना विभाग की तरफ स रहेगा। कल सुबह हा पहुच जाओ।"

'ठीक है। चला जाऊगा।" माहन कमर स बाहर आ गया। पीछ पीछे रामसिह की पत्नी भी घर के दरवाजे तक आयी। दरवाजा बन्द करन स पहले बाली, 'तुम चिन्ता न करो। हमन सब ठीक कर दिया है। मनकी ऊच-ऊचे बात रही थी। थान म रपट लिखान की धमकी दे रही थी। तब हमने कहा रानी जी थान जरूर जाओ पर याद रखना वहा सब पाल-पट्टी खुल जायगी। गवाही के लिए चन्द्रभान का भी बुला लिया जायेगा। लडकिया क सरकारी स्कूल म नौकरी करती है सविता। थान का चक्कर पडेगा तो नौकरी भी जायगी। मिट्टी पिन्टी गुम हो गई। भूल गई थान जाना। प्राफेसराइन धीर स हसी।

माहन खामोश खडा था। उसक लिये कुछ बालन का था ही नही।

'पाक म क्या बात कर रहे थ दोनो।' प्राफसराइन न धीर स पूछा।

बातें क्या करेंगे बस इधर-उधर की हाक रहे थ।" माहन न टालना चाहा।

फिर भी कुछ ता कह रह होंगे।' प्रोफेसराइन न कुरेदकर फिर पूछा।

मोहन अजब धम सकट म फस गया। अगर चप रहता है ता प्राफ सराइन की नाराजगी मोल लेता है और कुछ कहता है तो प्रोफेसराइन उस गाती फिरेंगी। बात का बतगड बन जायेगा और नये झझट मे जान फस जायेगी। कुछ न कुछ तो बताना ही होगा, प्रोफेसराइन ऐस ता पाछा छाडन वाली हैं नही।

वह दाना शादी की बात कर रह थे।' माहन न धीरे से कहा।

अच्छा !! क्या शादी करन जा रहे है कब?' प्रोफसराइन की आखें आश्चय स फल गयी।

"नही नही सविता शादी के लिए जोर दे रही थी। कह रही थी जल्दी शादी करो। चन्द्रभान मान नही रहा था। कहता था पहल पक्की नौकरी हो जाये, फिर शादी की सोचेंग।"

"खाक सोचेगा कर ली उमन शादी।" प्रोफेसराइन मह चढाकर बाली, "वह तो इसे मरी का ऐसे ही दिलासा देता रहेगा बस।' एक क्षण क लिए ठहर कर, फिर प्रोफेसराइन न पूछा, 'और क्या कह रहे थे।"

'मैं तो उठकर चल दिया पता नही उसके बाद क्या कहा।" मोहन न सारा प्रमग एक वाक्य मे समेटत हुए कहा, 'अच्छा चलू काफी रात हो गई।' माहन तेजी स कदम उठाता हुआ गगमहल क बाहर आ गया।

दर रात तक नीद नही आई। कैसा चक्रव्यूह म फस गया है। जितना ही अपन को बचाना चाहता है उतना ही फसता जाता है। सोचत-सोचते मोहन के सर मे दद होन लगा। बार-बार सविता का चेहरा आखो के आगे आ जाता। इस चेहरे के पीछे छिपी कालिख का वह नही देख पाया था। चलो अच्छा ह सारी असलियत जल्दी ही सामने आ गई। कल से तो वह दिन भर माघ मेले मे रहेगा। न सविता को देखेगा और न ही मन खराब होगा।

गगा की रेती पर दूर-दर तक टेन्ट लग हुए हैं। कुछ साधु-सतो के, कुछ महन्तो और धार्मिक अखाडो के। व्यक्तिगत रूप से भी कुछ लोगो न अपन तम्बू तान दिये हैं। ऐस म पूर माघ के महीने मे गगा किनारे रह कर गगा स्नान कर पुण्य पाने का लोभ लिय धनी परिवार है और है वह सस्थाए जो अपन नगर और मुहल्ले के आदमियो को बटोर कर गगा स्नान कराने लायी हैं, इस काम मे जनता के कल्याण के साथ ही अच्छा धन कमाने का भी अवसर रहता है। शेष तम्बू सरकारी हैं, जिनम मेल की व्यवस्था करने वालो से लेकर आलतू फालतू सरकारी तन्त्र बिखरा हुआ है, जो अनेक सरकारी विभागो के नाम पर माहवारी मोटा वेतन पाता

पण्डा ने जो अपने तम्बू लगा रक्खे हैं उनकी तो बात ही अलग है।

इन्ही सबके बीच म, तम्बुआ म ही एक पूरा बाजार बसाया जाता है, जहा तरह-तरह की चीजें बेचने और अपनी चीजो का प्रचार करने वाले दुकानदार आ बसते ह। पूरे एक माह बाद इस बाजार की चहल पहल देखन लायक होती है खासतौर पर शाम को जब पूरा बाजार बिजली के लटटुआ से जगमगा जाता है। बहती गगा के किनार यह माघी का जगमगाता नगर अपना अलग ही रूप रखता है। सिफ गगा स्नान करने वाले ही नही तफरी करने वाला की भी खासी भीड लगी रहती है। खरीद फरोख्त के ख्याल स ही नही बस या ही शाम को घूमने वालो का अच्छा जमघट लग जाता है।

इधर कई साला से सरकार न सारा प्रबन्ध अपने हाथ म ले लिया है। रती पर ही लोह क बडे बडे तव के माफिक चपटे चौकोर टुकडे बिछाकर सडक बना दी जाती है। इसी के किनारे लाइन से खडे कर दिये गये हैं बिजली क खम्भे। पीने के पानी के लिये भी दूर नही जाना पडता। बस्ती से पीने के पानी की पाइप लाइन माघ मले म ले आई जाती है। जगह-जगह टाटीदार नल लगे हुए है। कूडा फेंकने के लिए कूडा घर है, और पेशाब घर भी थोडी थोडी दूर पर बनवा दिय जाते। अपनी आर से पूरा सरकारी इन्तजाम है। ओर क्यो न हो जहा लाखो आदमी एक महीन के लिए इक्टठा हा रहे हा, वहा तो सरकार को इन्तजाम करना ही है। अगर इन्त जाम नही होगा तो बदनामी होगी, अगर सरकार को बदनामी होगी तो फिर जो पार्टी सरकार चला रही है उसे वोट कौन देगा।

एम० एल० ए० और एम० पी० ही नही मिनिस्टर तक आ जाते है मले म। पता ही नही चलता कब मिनिस्टर आ रहे हैं। अचानक आ धमकत ह और फिर शुरू हो जाती है इन्क्वायरी। सूचना केन्द्र को तो खासतौर पर अपनी आलोचना का निशाना बनाते हैं। सही सूचना जनता को नही मिलेगी तो उसे पता कम लगेगा कि प्रान्त न कितनी तरक्की की है। सरकार क्या क्या खास काम कर रही है। कई मिनिस्टर तो इतने बदमाश होन हैं कि भेप बदल कर आ जाते हैं। भेप बदलने म आजकल लगता ही क्या है। बस अपने साथ फाइल लिये चलता सेक्रेटरी पिस्तौल

या पट्टा गले में डाल अगरक्षक, और कमर म सरकारी निशान की पटी बाधे अदली हटा दो, कोई पहचान ही नहीं सकता कि यह आदमी मिनिस्टर है। यही तीन चीजें ही तो आदमी को आदमी से मिनिस्टर बनाती हैं। और अब तो मिनिस्टर लोग नेता वाली ड्रेस भी नहीं पहनन। वही राय्र अफसर वाली बुशट पेन्ट, कोई कैसे पहचान कि यह मिनिस्टर हैं। शेडयूल्ड कास्ट की तो बात ही क्या है। मिनिस्टर छोड गवनर बन जायें, अगर नेता वाली ड्रेस यानी सफद खादी की कलफदार गाधी टोपी के साथ खादी का कुर्ता-धोती न पहनें तो कोइ कह ही नहीं सकता कि यह मिनिस्टर है। मिनिस्टर के चेहरे म तो रौब टपकना चाहिये पर इनके चेहरे से दीनता टपकती है। एकदम घिघियाने वाला रूप। इसीलिये शेड-यूल्ड कास्ट वाला मिनिस्टर तो पहचान म ही नहीं आता। अल्बट साहब न अपन गले में बधी टाई की नाट ठीक करते हुए कहा हर वक्त अलट रहा। वह तुम्हारे यहा रामायण म कहा गया है न जाने किस भेष म राम मिल जायें। यहा भी वही हालत है पता नहीं कब कौन आ धमक। निगाह तेज रखवागे तो बात बन जायेगी, नही तो मुझे जवाब देते देते सवरा हो जायगा। वैसे ता तुम्हारे लिये कोई खास काम है नहीं। गेट पर कुर्सी डाले बैठे रहो, चाहो ता किताब पढो, बस आख-कान से होशियार रहा। हा, सुबह आकर सफाई पर पूरा ध्यान दो, कहीं भी एक तिनका गन्दगी का नजर न आय।

ठीक कह रहे हैं एल्बट साहब। जब दस रुपय रोज लेने हैं ता अपनी ड्यूटी पूरी चौकसी स करनी होगी। चाय खाना साथ मे। और दस दिन के लिय रगमहल से जान छूट गई सो अलग। मोहन बहुत सतुष्ट था। प्रोफेसर रामसिंह से अब कोई शिकायत नहीं रही। दो बातें कह लेते हैं ता क्या हुआ। उसकी रोजी-रोटी का ख्याल भी तो रखते हैं।

अल्बट साहब तीन चार घटे के लिये ही आते। दोपहर म आकर आफिस के दिये खाने को खाते। खाने और चाय का बिल प्रदशनी म लग अन्नपूर्ण के स्टाल का ही होना चाहिय, ऐसा सरकारी हुक्म आया है। शायद इसीलिये अल्बर्ट साहब को मजबूरन दोपहर के दो घण्टे सूचना केन्द्र की प्रदशनी कक्ष मे बिताने पडते। शाम को दो-तीन घण्टे इसलिय

कक्ष म रहना पडता क्योकि उस समय मेले मे बहुत भीड हो जाती। आखिर कक्ष के इन्चाज तो वही हैं। उनकी गरहाजिरी की रिपोट हो जाये ता लेने क देने पड जायें। शेष समय मे अल्बट साहब कहा रहते हैं क्या करत हैं, मोहन को कुछ पता नही चलता। हो सकता है कही कोई अपना काम धन्धा करके कुछ कमाई करते हो। या नये-नये मेल-मुलाकात से होन वाले काम को बटारत हा।

प्रदशनी कक्ष मे खाली बठे बठे मोहन ऊब-सा जाता। अच्छी नौकरी मिली है। कोई काम नही, हाथ पर हाथ धरे बठे रहो। पूरे दिन किताब भी ता पढी नही जा सकती। ला के कोस की किताबें साथ जरूर लाता है मगर दा चार पेज से ज्यादा पढ नही पाता। ध्यान बटने के सौ बहाने हो जाते, किस किस को गिनाया जाय। सन्तोष यही था कि गगा किनारे माघी मेले मे बठकर गगमहल की पिछली सारी कटुता को थोडा बहुत भूलन का अवसर मिल गया है।

रात को अपनी कोठरी म जान स पहले सुग्गा ताई स जरूर मिल लेता। ताई उसकी राह देखत हुए नौ बजे तक जागती रहती, दिनभर माहन की सूरत न दिखाई देती, ताई इससे उदास जरूर हो जाती। मगर फिर साचता मोहन कमाई कर रहा है फिर उसका ख्याल है तभी तो रात के नौ बजे देखने आता है, ताई का दिल भर आता, "तू हमारा कितना ध्यान रखता है। भगवान तेरी उमर लम्बी करे।' ताई आशीर्वाद दती।

खादी भण्डार के कक्ष म बिक्री अच्छी हुई थी। इस खुशी म चार-चार लडडू लिफाफे म रख कर बाटे गये थे। मोहन क हिस्से म भी चार लडडू आये। दो लडडू मोहन ताई के लिय लाया था। लडडू देखकर ताई की आखें भर आयी। अपना सगा भी इतना ख्याल नही रखता जितना मोहन रखता है।

ताई का कुछ सामान दुकान के लिये मगवाना था। कहते हुए ताई सकुचा रही थी। पूरे दिन की नौकरी है मोहन की, कैसे लायेगा। मोहन न अल्बट साहब से दो घण्टे की छुट्टी ली। तेजी से साइकिल चलाता कटरा ग एक एक चीज लाकर ताई को दे दी। जब तक है तब तक ताई

को कोई कष्ट नही होने देगा, आगे का राम जाने।

दोपहर म अल्बट साहब से कभी-कभी थोडी बातचीत हो जाती। स्वभाव के अल्बट साहब अच्छे हैं। शुरू म तो दोनो को ही एक दूसरे से सकोच रहा। होना भी चाहिये, एक अफसर दूसरा चपरासी के बराबर। लेकिन धीरे धीरे सकोच दूर होता गया। आखिर को तो मोहन लॉ का विद्यार्थी है, देखने मे एकदम स्माट, अच्छे घर का लडका लगता है। अल्बट साहब से रामसिह ने मोहन का परिचय बस इतना ही दिया कि गरीब विद्यार्थी है, ला का स्टूडेन्ट। अपनी मेहनत से पढ रहा है। दस रुपये रोज मिलेंगे तो कुछ मदद हो जायेगी। इसस अधिक कुछ नही। अब अपने अच्छे व्यवहार से मोहन ने अल्बट साहब का दिल जीत लिया। कभी कभी मोहन से बात करने को मन होता, आज भी दोनो खाली थे तो बात शुरू हो गई, 'हिन्दुस्तान भी कैसा अजब देश है। अजब-अजब करिश्मे होते हैं यहा। अब इसी को देखो। माघ का यह मेला तो खैर हर साल आता है। इसलिये मान लिया भाई लोगो की आदत पड गई है हर साल आकर गगा नहाने की। लेकिन यहा जो कुम्भ होता है उसे तुमने देखा है वण्डर।। न कोई निमन्त्रण देता है, न कोई प्रचार करता है न ही कोई सरकारी घोषणा होती है, पर देखते ही देखते लाखो लोग इकटठा हो जाते है, है न कमाल। समझ म नही आता कि आगे के बारह, या चालीस सालो तक का हिसाब कैसे कर लिया जाता है। है तो जरूर कोई हिसाब किताब।"

"जी हा, कोई विद्या रही होगी, उसी से यह सब प्रथा पड गई।" मोहन ने अफसर की हा म हा मिलाई।

"होगी नही, है।" अल्बट ने जोर देकर कहा, "जरूर कोई विद्या है। इसकी खोज होनी चाहिए। आखिर कैसे आगे पीछे का सब जान लिया जाता है।"

'खोज तो हो रही है। ज्योतिष विद्या के नाम पर कई लोगो ने धन्धा चला रखा है, पब्लिक को मूर्ख बनाकर अच्छा पैसा पीट रहे हैं।" मोहन

का चेहरा सख्त हो गया था। सत्य जबान पर आ ही गया।

'ठीक है, कुछ लोग धोखाधडी भी कर सकते हैं, पर इसका यह मतलब नही कि ज्योतिष विद्या कोई चीज नही है। मैं तो अपना जानता हू। बहुत बीमार रहता था। एक ज्योतिषी ने बताया मूगा पत्थर पहना। हमने पहना अब काफी फर्क है। तुम इस सब पर विश्वास नही करते ?' ल्बट ने आश्चर्य से पूछा।

विश्वास कैसे करू। जब मैं करोडो अछूतो को देखता हू तो मेरा विश्वास हिल जाता है। इन करोडो अछूत लोगो का ज्योतिष विद्या भविष्य क्यो नही बताती। यह सदियो से जानवर की जिन्दगी क्या जीते आ रहे हैं ?

अल्बट मोहन की ओर देखते रह गये। उन्हे ख्वाब में भी यह ख्याल नही था कि मोहन से ऐसा उत्तर मिलेगा। सहज ढग से बात शुरू हुई थी। यह कैसा मोड आ गया, जहा एक-दूसरे के खिलाफ मोर्चा जम गया है। बात को सम्हालने की गरज से अल्बट ने कहा, "मैं तो इन्डीव्यूअल की बात कर रहा था तुम समाजशास्त्र मे चले गये। समाज एक दिन मे नही बना है, सदिया लग गई हैं समाज के निर्माण मे। जो कुछ समाज मे खराब है उसे बदला जा सकता है। आजाद हिन्दुस्तान मे सबको ऊपर आने का मौका दिया गया है। सबकी किस्मत मे तरक्की लिखी है। शेडयूल्ड कास्ट के लिये तो हर जगह खास कोटा रखा गया है। अभी वह इसका पूरी तरह उपयोग करना नही सीख पाये हैं इसका क्या किया जाय।' अल्बट एक क्षण के लिये रुके, फिर हसकर बोले "यग मैन मेरी राय मे तो ज्योतिष अब यह कहती है कि हरिजन भी बहुत तेजी से ऊपर उठेगा और सब पर छा जायगा।"

मोहन के अन्दर जैसे किसी ने आग लगा दी हो। इस प्रकार से जब भी कोई बहलाने फुसलाने की बात करता है तब उसका खून खौल उठता है "जी हा, आप ठीक कह रहे हैं। ज्योतिष कहती है कि हरिजनो का बहुत उत्थान होगा। तभी तो आजादी के दस साल से ऊपर हो गये हैं, हरिजन स्वर्ण जाति का मैल अपने सर पर ढो रहा है। गाव मे कोई छुआ पानी नही पीता। हर जगह दुतकारा जाता है। दो-चार आदमियो को

करिया मिल जाने से ही या शेडयूल्ड कास्ट का कोटा तय हो जाने से रोडो लोगो को समाज मे सम्मान का स्थान नही मिल जाता, और न ही ी ढग से जीने का हक ।

"सम्मान तो व्यक्ति खुद अपने कार्य से ले सकता है। मेरा तो यही मत ।" अल्बट साहब गम्भीर हो गये थे "मैं तो व्यावहारिक बात जानता हू। न्हें ऊपर उठने का पूरा अवसर मिला है क्या उन्होंने पूरी तरह सम्मान ने का श्रेय समझा है ? मैं ऐसे हरिजनो को जानता हू जिन्ह शेड्यूल्ड कास्ट टे के बल पर अफसर बनने का अवसर मिल गया। अच्छा वतन लता है, पूरी सुविधाए हैं। लेकिन रहत अब भी अपने पुराने ढग से हैं। ो गन्दी आदतें अपने से लेपेटे हुए हैं। साफ ढग से रहना भी न सीख पाये। ई तो इतने बेशर्म हैं कि अफसर और प्रोफेसर होने के बाद जो बगला सर र की ओर से रहने को मिला उसे किराये पर उठा दिया, ताकि आमदनी र बढ़ जाये। खुद अपने पुराने भगीटोला के मकान मे ही टिके हुए है, इसे ा कहोगे ?'

"इसे भी मैं सामाजिक प्रताडना ही कहूगा।" जब सारे समाज म आज की भूख जगा दी गई है, तब हरिजन से कैसे यह आशा की जा सकती कि वह पैसे के पीछे न भागे। दूसरे लोग पैसे कमाने के दसरे गुर जानते हरिजन अपनी स्थिति मे बने रहकर पैसा पीटना शुरू कर देता है। ताकि मैं इसका समर्थन नही कर रहा हू कि पिछडा तबका, गन्दा, असभ्य र अनपढ बना रहे। मगर बात फिर वही आ जाती है। इसके लिये जिम्मेदार तरह कौन है ? आज भी हरिजनो को एक घेरे मे घिरे रहने पर कौन बूर कर रहा है ?'

"स्वर्ण लोग यही कहना चाहते हो।' अल्बट ने प्रोटस्ट के स्वर म ', 'लेकिन यह जो हर हरिजन के या पिछडे वर्ग के घर मे नौ नौ दस बच्चो की पल्टन तैयार की जाती है। औरतें एक पेट एक गोद मे ा लिये रहती है, क्या इसके लिये भी स्वर्ण वर्ग जिम्मेदार है।'

मोहन सहसा चुप हो गया, कुछ समझ मे नही आया क्या जवाब दे। न को निरुत्तर देखकर अल्बट ने कहना शुरू किया, 'नफरत को अपना यार बनाकर कोई तबका तरक्की नही कर पाया है। इतिहास इस

का गवाह है। स्वण लोगा न दूसरो से नफरत की तो अपना नुकसान किया। अब हरिजनो को सरकार की कृपा स उठन का अवसर मिल रहा है तो वह नफरत के सहारे अपने को मजबूत करना चाहत हैं । गिन गिन कर स्वण लोगा स बदला लेने म प्रस नता अनुभव करत हैं। ऊपर उठकर भी अपनी आइडेन्टटी अलग शो करना चाहत हैं। यह गलत है। मौका मिला है, तो सारे समाज को साथ लेकर चलना चाहिए। वैस भी आज विज्ञान का युग है, आदमी आदमी क और नजदीक आ सकता है। मगर मैं यही पर यह भी कहूगा कि सिफ कम्यूनिज्म क नारे के तहत सबको एक डण्डे से हाको, यह ठीक नही है। आखिर को अरबी घाडे म और अपने देसी घोडे म आज भी फक है। दोना की नस्ल एक नही की जा सकती। और न ही दोना एक काम किक सकत हैं। भल कम्यूनिजम आधे ही नही सारे ससार म ही क्या न फल जाय। नस्ल का फक ता रहेगा ही '

कम्यूनिज्म का इतना सरलीकरण इसस पहल मोहन ने नही देखा था। अपनी बात कहने के लिय किसी इज्म को कितना तोडा मरोडा जा सकता है इस अल्बट साहब म सीखना चाहिए। इनसे बहस नही हो सकती। मोहन ने अब सीधा आक्रमण किया, आप तो ईसाई हैं आपके मन म ज्योतिष और गगा के प्रति इतना लगाव कसा है ? '

'यह क्या बात हुई' अल्बट झुझला गये। उन्हे एस प्रश्न की आशा नही थी। ज्योतिष एक विद्या है। उसम कोई भी विश्वास कर सकता है। हिटलर भी ज्योतिष को मानता था। शाहजहा का बडा लडका दारा शिकोह भी ज्योतिष को मानता था। रहा गगा का सवाल, तो इस नदी म ऐसे गुण हैं जो स्वास्थ्य के लिये बहुत फायदेमन्द है। इसके पानी मे कीडे नही पडते हैं। तुम्हे शायद मालूम नही औरगजेब भी गगा का पानी मगा कर पीता था। और फिर मेरा जन्म इसी देश मे हुआ है। यहा की आबोहवा म मैंने सास ली है, यहा की हर चीज से लगाव होना लाजमी बात है।" एक क्षण को अल्बट साहब रुके, फिर तजी से बोले, तुम्हे यह भी मैं बता द, मेरे फोर फादस बाई कास्ट ब्राह्मण थ। कान्यकुब्ज ब्राह्मण। गदर म प्रभु ईसू की शरण चल गय तब से हम ईसाई हैं। वसे अब भी हमारा रक्त पवित्र है। ईसाई तो बहुत म हरिजन भी बन गये लेकिन हम उनमे

से नही ह । हमारे परिवार मे तो आज भी बहुत देख सुनकर विवाह किया जाता है । हम उन्ही मे विवाह करते है जो ब्राह्मण स ईसाई हुए हैं ।"

"यह खोजना तो बहुत मुश्किल होगा कि कौन ब्राह्मण से ईसाई हुआ है ।' मोहन ने जिज्ञासा जाहिर की ।

"नही बिल्कुल नही ।" अल्बट ने सर हिलाते हुए कहा, "सारे हिन्दुस्तान मे ऐसे ईसाईयो की सख्या हजारो मे है जो ब्राह्मण से ईसाई हुए हैं । उन सबकी लिस्ट बाकायदा रक्खी जाती है । हमारा एक सगठन भी है जो इस सब बात का ख्याल रखता है कि कहा कौन ऐसा ईसाई है जिसके पूवज ब्राह्मण थे । उतना मत्र न करते तो हमारा ब्लड कब का करैप्ट हो गया होता ।"

अब आगे बात बढाना खतरनाक होगा । अगर अल्बट साहब को पता लग गया कि मोहन हरिजन है तो वह अपने को अपमानित महसूस करेंगे । अनजाने ही छले जाने की हीन भावना उनम उभरे आयेगी । शायद उससे बदला लेने पर उतर आयें । आखिर वो तो ब्रह्म ज्ञान रखने वाला का खून उनकी नसो मे दौड रहा है । बेकार मे दुश्मनी पदा करने से क्या लाभ । मोहन न बात बदलने की गरज स कहा, ' एक बजने को आ गया । आप खाना खाने नही जायेंगे ? '

"ओह मैं तो बातो म भूल ही गया ।" अल्बट साहब ने सामने मज पर रक्खे कागज बटोरते हुए कहा, "मैं खाना खाकर आता हू, फिर तुम चले जाना ।"

अल्बट साहब के जाने के बाद मोहन अपनी कुर्सी पर फिर बैठ गया । अभी अल्बट से हुई बातें दिमाग में घूमने लगीं । दो पीढ़ी गुजर गयो प्रभु ईसू मसीह के चरणो मे, लेकिन ब्राह्मणवाद के सस्कारा से मुक्ति नहीं मिली । अच्छी चतुराई है । धम परिवतन करके अग्रेजी राज्य म जो आर्थिक लाभ मिल सकता था वह ले लिया, साथ ही ब्राह्मण नस्ल को बचाकर अपनी श्रेष्ठता भी बनाये हुए है । अग्रेज तो धर्म परिवतन होने के बाद भी मुह नहीं लगात । किसी मेम से शादी भी नही हो सकती । इस सब की ओर कोई

नाराजगी नही*। बचाव तो बस कमजोर तबके मे है जिसे हरिजन कहते हैं। हरिजन को गाली देकर अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करने म बडप्पन मानते हैं। समय बीत जाने पर भी, और ऊची ऊची डिग्री वाली शिक्षा का विस्तार हो जाने पर भी कही कोई निस्तार नही।

दो दिन का माघी का मेला और है। परसो माघ का गगा स्नान है, उसके बाद यह गगा किनारे बसी दुनिया उजड जायगी। दस दिन अच्छे बीत गये। खाने नाश्ते का पैसा बचा। साथ ही सौ रुपए से ऊपर की आमदनी भी हो गई। एक पैट और कमीज बनवानी है। चप्पल भी टूट गई है। एक जोडी चप्पल भी लेनी है। दो एक चीज और भी। अचानक हुई इस आमदनी से बहुत राहत मिली है। पता नही भगवान है या नही और अगर है तो कहा है कुछ पता नही। लेकिन कहावत अपने म सही है कि 'भगवान जब देता है तो छप्पर फाड कर देता है।

खाना खाने के बाद आलस आ ही जाता है। अल्वट साहब चले गये। मोहन के लिए कोई काम नही था। इस समय प्रदर्शनी देखने कोई आने वाला नहीं, जो उठकर कक्ष म लगी एक एक चीज दिखाई जाय। इस समय तो कुर्सी पर बठे बठे ऊघने का ही काम शेष रह जाता है।

सहसा लडकियो के सम्मिलित रूप मे हसने और चिचियाकर बात करने से मोहन हडबडाकर कर उठ बठा। कक्ष के बाहर छोटी छोटी लडकिया झुड म खडी कक्ष मे घुसने के लिए एक दूसरे को धकिया रही थी। उनके साथ एक अध्यापिका ने आगे बढकर कहा, "हमे प्रदर्शनी देखनी है।"

'हा हा जरूर देखिए।' मोहन हटकर एक ओर खडा हो गया। लडकिया दो दो की लाइन म कक्ष म आने लगी।

कक्ष दो भागो मे बटा हुआ था। पहले भाग म प्रान्त के प्रसिद्ध स्थानो को बडे-बडे चार्टों म दिखाया गया। यही पर प्रसिद्ध राजनेताओ, साहित्यकारो, सामाजिक कार्यकर्ताओ की बडी बडी मूर्तिया रखी हुई थी। इसी के साथ प्रान्त के ऐतिहासिक पुरुषो की बडी बडी पेंटिंग टगी हुई थी। एक

कोने मे प्रान्त के स्वतन्त्रता सेनानियो को बडे बडे चित्रो मे सम्मानपूर्वक स्थान दिया गया था। यही पर ग्वालियर के पास युद्ध क्षेत्र से निकल कर नन्हे युवराज को पीठ पर बाधे सीधे हाथ मे तलवार लिये घोडे पर सवार रानी झासी की पैरिस प्लास्टर की बडी सी मूर्ति रखी गई।

पीछे के कक्ष मे स्वतन्त्रता के बाद हुई प्रान्त की प्रगति को दिखाया गया था। कहा-कहा बिजली घर बने है, कहा-कहा पुल बनाये गये कहा नये विश्वविद्यालय स्थापित किये गए कहा पर नये कल-कारखाने लगाये गये हैं, और कहा पर खेती की उन्नति के लिए काय किये गये हैं। इस कक्ष को आने वाले सरसरी निगाह से देखते। प्रगति का आम जीवन मे कुछ फायदा तो नजर आ नही रहा है, फिर प्रगति की प्रदशनी देखकर क्या करें। भीड पहले ही कक्ष मे अधिक रहती।

लडकियो के साथ उनकी अध्यापिकाए थी। एक दो अध्यापिकाओ की सूरत कुछ जानी पहचानी सी लगी। तीसरी अध्यापिका को देखकर मोहन चौक गया। तो क्या गगमहल का स्कूल आया हुआ है! अभी मोहन यह सोच ही रहा था कि लडकियो ने सबसे पीछे सविता नजर आयी। सविता ने उडती सी नजर मोहन पर डाली और मुह घुमा लिया। उपेक्षा और तिरस्कार उसकी आखो मे साफ दिखाई दे रहा था। प्रदशनी को इस तरह देख रही थी जसे कोई बडा अफसर मुआयने पर आया हुआ हो। मोहन ऊपर से नीचे तक हिल गया। यहा भी अपना ओछापन दिखाने से सविता बाज नही आयी। इस तरह व्यवहार कर रही है जैसे वह बहुत अदना सा इसान हो। कोई बात नही। सब समय की बात है। इस समय वह कुछ कह नही सकता और उसे कुछ कहना भी नही चाहिये। कुछ कहेगा तो उसी की जग हसाई होगी।

प्रदशनी म रक्खा प्रचार साहित्य काफी बच गया था। एक छोटी सी बुकलेट और एक पैम्फलेट प्रचार साहित्य के नाम पर यही दो चीजें जनता मे मुफ्त बाटने के लिये दी गयी थी। प्रदशनी देखने आते ही कितने लोग हैं। ज्यादातर को तो गगा नहाने और प्रसाद खरीदने से ही फुसत नही मिलती। प्रचार साहित्य किसे बाटा जाये। इसी तरह के स्कूल-कालेज या दूसरी सस्था के लोग जो आते उन्ही मे प्रचार साहित्य थोडा बहुत खप

जाता। अल्बट साहब ने सलाह दी, दो दिन म ज्यादा स ज्यादा लागा को प्रचार साहित्य बाट दिया जाये। बेकार म वापस ले जाने स क्या फायदा।

गेट के पास एक स्टूल पर बुक्लेट और पैम्फ्लट रखकर मोहन खडा हो गया बाहर जाने वाली हर एक लडकी क हाथ मे बुक्लेट और पम्फ्लट थमा दिया। लडकिया मुफ्त मे इतनी सी चीज पाकर ही खुश थी। चलो कुछ तो मिला। अध्यापिकाओ को भी प्रचार साहित्य दिया गया। लकिन आखिर म जब कुछ लडकिया रह गइ और उनके पीछे सविता को आते देखा तो मोहन बेचैन सा हो गया। सामन टगी एक तस्वीर को ठीक करने के बहाने हट गया। लडकिया स इशारे से कह दिया, खुद उठा लें। मोहन ने तिरछी नज़र से देखा सविता बुक्लैट और पम्फ्लट लिय बगर ही कक्ष से बाहर निकल गई।

रात को सुग्गा ताई के पास बठा मोहन पूरे दिन की बाता को दोहरा रहा था। प्रदशनी म सविता ने कैसा व्यवहार किया यह भी बताया। ताई कुढकर बोली, 'उस राड की बात न कर। वह है ही ऐसी। हर बखत दिमाग चढाये रखती है। राम जी देख रहे हैं। ऐसा घमण्ड सचेगा, बस तू देखता जा।

गगमहल म सब ठीक सा चल रहा है। तरे पीछे न कोई बाहर स आया न इधर से कोई परदेश गया। जो हैं सो अपने मे मगन।'

ठीक कह रही हैं सुग्गा ताइ। लडाई झगडा तो सब उसी के कारण था वह नही था तो सब अमन चन से बीता। चन्द्रभान के बारे मे कुछ नही बताया सुग्गा ताई ने। चन्द्रभान ने कोई नई फ्तिरत नहीं की, यह तो ताज्जुब की बात है।

'वह यहा है ही कहा। वह तो अपने शहर गया है फीरोजाबाद। घर पर कोई बडा काम आ गया है महीने डेढ महीने बाद लौटेगा।" सुग्गा ताई ने चन्द्रभान के बारे मे पूरी जानकारी दे दी।

माघी बीतते ही गगा के किनारे लगा मेला भी खतम हो गया। प्रद शनी के तम्बू भी उखड गये। अल्बट साहब ने मोहन को आखिरी दिन तक

के पैसे दे दिये । लेकिन जाते समय कोई खास खुश नही थे । बस काम को बात की ओर लखनऊ की ट्रेन पकड ली । रामसिंह से मिलन गगमहल भी नहा आये । हो सकता है उन्हे मोहन की असलियत मालूम हा गई हा । सौ दुश्मन हैं किसी ने भी धीरे से बता दिया हो मोहन हरिजन है । मोहन को इस सबकी परवाह नही है । उसका काम हो गया । पैसे मिलते ही पैन्ट और कमीज सिलने को दे दी । दूसरे दिन मे वाईडिंग हाउस पर फिर से काम शुरू कर दिया ।

चन्द्रभान को गये हुए पन्द्रह दिन स भी ऊपर हो गये । शाम का समय सविता का खाली हा गया । शाम होते ही सविता मा के साथ सब्जी खरीदने बाजार जाती। मोहन ने गौर किया अब सविता के चेहरे पर पहले जसी चमक नहीं दिखाई देती । चेहरा कुछ उतरा सा है । हसी भी गायब हा गई । किसी से बोलती भी नही है । लगता जैसे कोई चिन्ता अन्दर ही अन्दर खाये जा रही है ।

शाम का खाना बनाने का काम सविता की मा का है । यो तो सुबह भी वही खाना पकाती हैं, लेकिन कभी-कभी सविता भी बना लेती है । इस समय खाना बनान का मन नही हो रहा था । दो बार पूछा सविता स क्या खायगी । सविता कुछ नही बोली । आगन मे खाट डालकर लेट गई । इसी तरह स चुपचाप पड जाती है । मन करता है तो बोलती है नहीं तो नही बोलती । मा ने झालदार आलू बना दिये, रोटी भी सेंक दी । नीबू के अचार की एक फाक भी निकालकर तश्तरी म रख दी, लेकिन सविता अब भी नही उठी । बस लेटे लेटे ही कह दिया, 'तुम खालो, मैं बाद मे खा लूगी ।"

मनकी मन ही मन भुनभुना रही थी । अब और खाने के लिये नहीं कहेंगी । खाए तो खाए नही तो भाड म जाये । अरे इतन नखरे कौन उठायगा ? पहले रानी जी के लिये खाना पकाओ, फिर खिलाने के लिये मिन्नत करो । अब यह सब और नही चलेगा । आज अगर सुसराल म होती तो पता चल जाता । सारे कुनबे की रोटी थापनी पडती । जा ठीकरे बचत उन्ही स पेट भरना पडता । यहा है तो नखरे दिखा रही है ।

मनकी बुदबुदाती जा रही थी और रोटी मुह मे तोड-तोडकर रखती

जा रही थी। आखिर को पेट तो भरना ही है। पेट में रोटी नहीं जायेगी तो शरीर कैसे चलेगा। घर-बाहर का काम कौन करेगा ?

रात के नौ बज गये। सविता अभी भी खुले मे खाट पर लेटी थी। मनकी ने उसका बिस्तर लाकर वही खाट पर रख दिया। खुद कमरे म जाकर लेट गई। अब मन हो तो उठे, नही तो खुले म पडी ठण्ड खाती रहे। और नही समझाया जा सकता। कोई बच्ची तो है नहीं जो मुह म कौर दिया जाय। मरती है तो मरे।

देर रात गये सविता उठी। आधा गिलास पानी गल के नीचे उतार लिया। खाली पेट पानी पिया तो उल्टी सी होन लगी। खाने की तरफ देखने को मन नही हुआ। खाट टीन के नीचे कर ली। दो कम्बलो को मिलाकर ओढ लिया। आधी रात बाकी है, सो भी कट जायेगी।

इतवार का दिन तो और भी काटे नही कटता। घर मे दो प्राणी दोनो एक दूसरे स बात करन मे कतरायें, वक्त कस कट ! समय काटने के लिय ही मनकी गगा नहान चली गयी। सविता को कह गयी चाय बनाकर पी ले, मगर क्या आकर अपने लिये बना लूगी। सविता ने चैन की सास ली। चलो कुछ दर को तो शान्ति मिली। अकेले घर म तो फिर भी रहा जा सकता है। मगर इस बुढिया मा के साथ तो अब निबाह नहीं हो रहा। हर समय झाय झाय लगाये रखती है। पन्द्रह दिन से ऊपर हो गये चन्द्रभान को गय। एक पत्र तक नही लिखा। कहा कह रहे थे हर दूसरे दिन पत्र लिखेंगे न जान चन्द्रभान के मन मे क्या है,। ऊपर से दिलासा तो बहुत देता है पर अन्दर मन की बात कौन जाने। सविता को अजब सी बेचैनी होने लगी। ऐसा लगा जसे दम घुटा सा जा रहा है। एक कप चाय गले के नीचे उतारना मुश्किल हो गया।

नौ बजे मनकी गगा नहाकर लौटी। सविता खाट पर लेटी किताब पढ रही थी। मा आई है इस पर कोई ध्यान नहीं दिया। मनकी कुढ गई। कसा अधेर मचा रखा है। घर मे इस तरह रह रही है जसे मालकिन हो। रसोई म जूठे बतन पडे हैं। रोटी बनानी तो दूर की बात, बतन तक नही धो सकती। क्या कहे। सब करमों की बात है। आज लडका होता तो बहू घर म आ जाती। दो रोटी का सहारा होता। यह पडा पडी खाती है और

आखें उल्टे दिखाती है। काम करने को कहो तो लडन को पडती है। जरा-सी नौकरी क्या कर ली बस मिजाज चढ गये। मरा चन्द्रभान भी तो काबू म नहीं आता, नहीं तो उसी के साथ फेरे डलवा दे, जान छूटे।

मनकी न पहले चाय बनाकर पी। सविता से नही पूछा। जूठे बतना का दखकर ही समझ गई, सविता न चाय पी ली है, फिर पूछन से क्या फायदा। लगे हाथो स्टोव पर दाल चढा दी, आटा भी माड लिया। जब उस ही सब करना है तो फिर देरी करने से क्या फायदा।

ग्यारह बजत-बजते खाना भी बन गया। मनकी आज कथा सुनने जायगी। मुहल्ले की नुक्कड पर शिवालय म इतवार को दोपहर म कथा होती है। आज मनकी भी सुनने जायेगी। मन बदल जायेगा।

खाना खाने के लिए सविता को दो-तीन बार आवाज दी। सविता एस लटी रही, जैस उसने सुना ही नही। जब मनकी चीखी तो सविता उठकर बैठ गई, "मुझे भूख नही है, जब भूख होगी खा लगी।" सविता न आखें तरेर कर कहा।

ता आखें क्यो दिखाती है?" मनकी चिल्लाई, "एक तो खाना बनाओ ऊपर म खाने के टाइम नखरे सहो।"

कौन कहता है नखरे सहन को, मन सहो।" सविता की आवाज भी तज हो गई।

सहू कस न, पिछले जनम के पाप जो उदय हुए हैं।' मनकी ने हाथ उठाकर कहा, "तेरे बदन मे तो गरमी भर गई है, हर बखत ताव खाती रहती है।"

"मेरे अन्दर गर्मी भर गई, मैं गरम दिखाई देती हू।" सविता तडप कर खाट से उठकर खडी हो गई।

"हा हा तेरे दिमाग पे गरमी चढ गई है। पर मुझे यह सब न दिखा यह उस चन्द्रभान को ही दिखा, वही सहगा तेरे नखरे।"

'क्या कहा ? चन्द्रभान का नाम लिया। कौन लाया यहा चन्द्रभान को किसने मुह लगाया उसे मैंने या तूने।" सविता एक कदम आ बढा।

तूने अपनी जान छुडाने के लिये मुझे उस वाहमन से जो ि

कहती है मुझे गरमी चढ गई है ले मैं वताती हू तुझे गरमी सविना न आगे बढकर रसोई की चौखट के पास बैठी मनकी के एक जोर की लात मारी। मनकी धरती पर लुढक गई। जल्दी से उठने की कोशिश की, तब तक सविना की दूसरी, तीसरी लात उसकी कमर पर पड चुकी थी यहा तक की दरवाजे की चौखट मे मनकी का सर टकरा गया, माथा फटने स खून निकल आया।

सविता न खून देखा तो अपनी जगह जड सी हो गई। मनकी रोत हुए चिल्लाई 'मार कलमुही और मार। तुझे मार खाने के लिए ही तो पैदा किया था। निकाल दे अपने शरीर की सारी गरमी। घोट दे मरा गला।"

सविता अपनी जगह से हिली। लपककर चप्पल पहनी, और दरवाजा खोलकर बाहर निकल गई।

गगमहल से बाहर सविता लगभग भागती हुई निकल आई। फिर अपने आप ही उसक कदम बाजार की तरफ बढ गये। बाजार खतम हुआ तो सडक का मोड आ गया। अब कहा जाये। सामन शिवालय म औरतें बैठी कथा सुन रही थी। सविता भी चप्पल उतारकर वहीं औरता के बीच बैठ गई।

मनकी को होश आया तो देखा उसके पास वकीलनी और रार्मासह की पत्नी खडी थी।

'यह क्या हो गया तुम्हें।' वकीलनी ने चिता से पूछा।

मनकी ने आखें फाडकर देखा। सविता दिखाई नही दी। कराहते हुए बोली 'चक्कर आ गया था गिर पडी।"

'सविता कहा गई है? रार्मासह की पत्नी ने पूछा।

'सब्जी लाने को कह रही थी। बाजार गइ होगी।' मनकी ने उठन की कोशिश की लेकिन उठ न सकी। वकीलनी ने सहारा देकर उठाकर खाट पर लिटा दिया। रार्मासह की पत्नी कपडे की पट्टी पानी मे भिगोकर ले आयी। माथे पर लगा खून साफ किया। एक कपडे के टुकडे को मिटटी के तल म भिगोकर घाव पर रख दिया। उस पर पट्टी बाध दी। 'मिटटी का तेल सौ दवाआ की एक दवा है। घाव पर लगाने स पकने का खतरा

नही रहना।' रामसिंह की पत्नी ने वकीलनी को समझाया।

मनकी ने ऐसा दिखाया जैसे कुछ हुआ ही नही। उठकर चलने की कोशिश की लेकिन शरीर ने साथ नही दिया तो फिर लेट गयी। वकीलनी बोली, "मनकी बुरा न मानना। मुझे तो नीचे से सविता के जोरा स बालन की आवाज सुनाई दी। मैं समझी वही लड़ रही है।"

मनकी का चेहरा उतर गया। फिर भी बात सम्हालते हुए कहा, ' सब्जी लान की जिद कर रही थी। मैंने कहा जो है घर मे सो बना ले, लेकिन मानी नहा दौडी बाजार चली गई। दोपहर मे भला कही सब्जी लाई जाती है। क्या कहू बहन जी, सब अपनी मर्जी के मालिक हैं, कोई किसी की नही सुनता।"

"मर्जी से जीने का यह मतलब तो नही है बडा की कोई इज्जत ही न रह। हमे तो यह अच्छा नही लगता, तुम चाहे जा कहा। मैं तो कहू हू थाडा कसकर रक्खो सविता का, इस तरह हर वखत बहस करना ठीक नही।' वकीलनी ने अपनी बात पर जोर देते हुए कहा।

हा जी, ठीक बात है। औलाद इसलिये तो नही होती हर समय बहस करे। सविता तुमसे नही सम्हलती तो हम समझायेंगे। घर म तो बडा की राय मे ही रहा जायगा।" रामसिंह की पत्नी ने भी वकीलनी का समथन किया।

मनकी ने कुछ नही कहा, चुपचाप लेटी रही। कहन को अब बचा ही क्या था। कुछ ज्यादा बोलेगी तो और पोलपट्टी खुलेगी। क्या करें बडी मुसीबत म जान फसी है। यह रान खोलें ता शरम, वह रान खोल ता शम। ईश्वर ही उबारेगा सकट स।

'एक गिलास गरम दूध पी लो, ताकत आ जायगी।" वकीलनी न कहा।

अब खाना ही खाऊगी।" मनकी न कहा, 'खाना खान ता जा ही रही थी मरा चक्कर आ गया। सविता आ जाय तो खाना खाऊ। न कहीं जा कर बैठ गई।"

वकीलनी और रामसिंह की पत्नी आपस म खुसुर ...
गयीं। दोना इसी नतीजे पर पहुची थी कि मा बेटी म मारपीट हुई

के माथे पर लगी चोट तो देख ही ली थी। अब सविता को देखना बाकी था। सविता को देखने पर ही यह तय हो जायेगा कि सच्चाई क्या है। दोनों औरतें मुस्तैदी से अपने अपने दरवाजे पर खडी हो गयी। जैसे ही सविता अपने घर में जायगी वैसे ही उसे घेर लेंगी। सवाल जबाव भी करेंगी। आखिर को मुहल्ले का मामला है। ऐसे तो नही छोडा जा सकता। यह मारपीट नहीं चलेगी मुहल्ले में। शरीफो का मुहल्ला है, कोई कुजडों का मुहल्ला नही है।

सविता तो दिखाई नही दी, हा कुछ समय बाद मनकी को अपने घर में ताला लगाकर बाहर जाते जरूर देखा। दोनो महिलाओं में बडी बेचैनी फैल गई। यह तो कोई बात न हुई। रहस्य ही बना रहा। घर का सारा काम धन्धा छोडकर वकीलनी और रामसिंह की पत्नी अपने घर के दरवाजा पर डटी रही। जब तक सारी बात मालूम नही कर लेंगी, तब तक हटेंगी नही।

आधे घण्टे बाद मनकी सविता को लेकर लौटी। सविता का चेहरा गुस्से से तमतमा रहा था। मनकी काखती कराहती चल रही थी। बगर किसी तरफ देखे दोनो मा बेटी सीधे अपने घर की तरफ चली गयी। मनकी ने जीना चढकर ताला खोला और अन्दर चली गई। मा के पीछे सविता भी घर के अन्दर चली गई। नाटक का एक दृश्य समाप्त हो गया। पर्दा गिर चुका था। वकीलनी और रामसिंह की पत्नी चेहरा लटकाये अपने अपने घर के दरवाजे पर खडी थी। सोचा था कुछ चखचख होगी, बीच बचाव करने का मौका मिलेगा। लेकिन यहा तो मा बेटी मे अपने आप ही समझौता हो गया। 'बेहया हैं दोनो पहले लडती हैं फिर एक हो जाती हैं।' रामसिंह की पत्नी की बात से वकीलनी पूरी तरह सहमत थी।

मोहन ने फिर बाइण्डिंग हाउस मे काम करना शुरू कर दिया। खर्चा चलाने के लिए बधके काम करना जरूरी है। बाइण्डिंग हाउस मे पैसा कम जरूर मिलता है लेकिन गुजारा जैसे-तैसे चल ही जाता है। साथ ही किसी तरह की टोका टाकी भी नही है। अपना काम करो और पैसा ले

लो। कभी-कभी दस बीस रुपये की जरूरत होती है तो एडवांस भी दे देता है बाइण्डिग हाउस का मालिक। मोहन भी इज्जत से बात करता है। जो अपना माने उसका आदर करना ही चाहिए। छोटा-मोटा इधर-उधर का कोई काम अगर मालिक बता देता है तो मोहन इकार नही करता। खुशी खुशी कर देता है।

आज भी जब मालिक ने मोहन को बुलाकर कहा कि उसे प्रकाशक के यहा से बाइंडिग के लिये किताबे लानी हैं तो मोहन ने सिर हिला कर हामी भर ली। उसे इस बात का आश्चय जरूर हुआ कि हमेशा की तरह चद्रभान किताबो को रिक्शे पर लाद कर क्या नही लाये। यह काम तो वह काफी समय से करते आ रह हैं, फिर आज क्या बात हो गई। क्या नौकरी छोड दी ? मन नही माना तो पूछ ही लिया।

"चद्रभान किताबें लाते थे। क्या उसन नौकरी छोड दी ?"

"चद्रमान ने नौकरी नही छोडी। वह यहा है नही, घर गया ह। उसकी शादी होने वाली है।" मालिक ने जवाब दिया।

"क्या !!" आश्चय से मोहन मालिक को देखता रह गया "आप क्या कह रहे हैं, चद्रमान की शादी हो रही है ?"

"हा, प्रकाशक शुक्ला जी बता रहे थ। इसी महीने शादी है।" मालिक ने कहा, ' तुम क्यो आखें फाड रहे हो ? तुम्हे क्या बारात मे जाना था ?

"अजी मुझे कौन बारात मे ले जाता है। आप भी मजाक करत है।" मोहन को अब भी विश्वास नही हो रहा था, "मगर यह अचानक शादी की बात कस हो गई।"

' क्यो इसमे ताज्जुब की क्या बात है। हर आदमी की शादी होती है। चद्रभान की भी शादी हो रही है।"

"शादी कहा हो रही है ?" मोहन ने पूछा।

'यह सब हमे नहीं मालूम। यह सब शुक्ला जी को मालूम होगा। मालिक ने एक लाइन में ही अपना पल्ला झाड लिया।

मोहन की कुछ समझ म नही आ रहा था। यह तो बहुत बडा धोखा हो रहा है सविता के साथ। पहले ही पता था चद्रभान एक नम्बर का पाजी है, अब पता लगेगा सविता को भी। बहुत इतराती थी। बगैर सोचे

समझे प्यार की पींगे बढाये जा रही थी । अब कही मुह दिखाने लायक नही रही। हमे क्या, जसा किया है वसा ही फल मिलेगा। अच्छा हुआ, बहुत जल्दी कलइ खुल गई।

शुक्ला जी स सारी बात मालूम हो जायगी। जरा घुमा फिराकर बात करनी होगी, तभी भेद मिलगा। सविता को भी जनाना होगा। ईश्वर भी कसा न्यायकारी है। चन्द्रभान न उत्साह मे आकर बहुत अट शट बात की थी। अब पूछूगा रानी जी स, क्या हालचाल है ?

रिक्शे पर बाइण्ड की हुइ किताबें लाद कर मोहन चल दिया। इसी रिक्शे पर प्रकाशन गृह स बाइण्ड करन के लिए किताबें लानी हैं। जितनी दर म किताबें रिक्श म लदेगी, उतनी देर म शुक्ला जी से अच्छी तरह बात कर लगा।

चन्द्रभान की शादी की बात को शुक्ला जी ने बहुत सहज रूप म लिया खास बात हो भी क्या सकती है। प्रकाशन गृह क एक कमचारी की शादी हो रही है, सो निमन्त्रण मिला है, बस। बस ऐसे निमन्त्रण तो आते ही रहते हैं। फुसत कहा है शादी म जाने की। फिर यह शादी तो शहर से बाहर हो रही है। वहा तक जान म बिजनेस चौपट हो जायगा। दो चार दिन के लिए प्रकाशन गह को खाली नही छोडा जा सकता।

'हमार प्रोफेसर साहब तो चन्द्रभान की शादी म जान की पूरी तैयारी किय बैठे है, पर क्या करें अभी तक निमन्त्रण पत्र ही नही आया। वैसे चन्द्रभान जी चलत समय बहुत जोर दे गये थ आने को, प्रोफेसर साहब को तो जाना ही होगा।'

हा हा जरूर जायें, प्रोफेसरो के यही तो मजे हैं। खूब छुट्टी रहती है। जहा चाह आये जायें। हम ता भाई जा नही सकते। कोई बुरा माने, चाहे भला। घर छोडना आसान नही है।"

'आपकी बात ठीक है।' मोहन ने शुक्ला जी की बात से सहमति जताई, फिर कुछ सोचकर बोला आप कहे तो निमन्त्रण पत्र ले जाऊ। प्रोफेसर साहब को दिखाकर वापस कर दूगा।' हमारे यहा तो डाक की बडी गडबडी रहती है। चन्द्रभान जी न भेजा तो जरूर होगा, पर डाक म इधर उधर हो गया होगा।

'ले जाओ, इसमें क्या बात है।" शुक्ला जी ने चन्द्रभान की शादी का निमन्त्रण पत्र मेज पर से उठाकर मोहन को देते हुए कहा, 'यह सब तो दिखाव के लिए होता है। असल में तो मुंह से कह कर ही बुलाया दिया जाता है। जिससे आन के लिये कह दिया, वही पक्का है। निमन्त्रण कार्ड तो नखरा छपाये जाते हैं। सब थोड़ी बारात में जाते हैं।''

मोहन ने जल्दी से निमन्त्रण कार्ड लेकर जेब में रख लिया। बहुत मुश्किल से काम की चीज हाथ आई है। इसको देखे बिना तो मोहन की बात पर कोई यकीन ही नहीं करेगा। मोहन को तो गगमहल में सबने नकटू बना रखा है। सच भी बोलता है तो लोग मजाक उड़ा देते हैं। अब शादी का कार्ड देखेंगे तो आंखें फटी रह जायेंगी। इस कैसे झूठा बता देंगे।

मोहन को गगमहल पहुंचने की जल्दी पड़ी हुई थी। मन करता था दौड़ता हुआ सीधा गगमहल पहुंच जाये और सबको चन्द्रभान की शादी का कार्ड दिखाकर चौंका दे। कैसा मजा आयेगा, जब सब आश्चर्य से कार्ड को देखेंगे। लेकिन नहीं, पहले जिस काम से आया है उसे पूरा करना होगा। काम किए बिना गगमहल नहीं जाया जा सकता।

मोहन प्रकाशन गृह से पुरानी किताबें बाइण्डिंग के लिए रिक्शे पर लदवा कर बाईण्डिंग हाउस ले आया। जो दो-एक फुटकर काम बाइण्डिंग हाउस के करने के वह भी कर दिये। इसके बाद अपना कंधे पर लटकाने वाला झोला उठा लिया। बाइण्डिंग हाउस के मालिक ने देखा तो टोक दिया, "अरे अभी से कहां चल दिये, काम नहीं करना है?"

"अब कल करूंगा। आज रुक नहीं सकता।" मोहन ने लाचारी जाहिर की।

"काम नहीं करोगे, तो काम पूरा कैसे होगा।"

"कल दो घण्टे पहले आ जाऊंगा, सारा काम निपटा दूंगा म र अब और कुछ सुनने को तैयार नहीं था। चप्पल पहनी हाउस के बाहर आ गया।

सबसे पहले मोहन ने सुग्गा ताई को चन्द्रभान के शुभ विवाह का निमन्त्रण पत्र लिखाया। सुग्गा ताई कार्ड पर सबसे ऊपर छपी गणेशजी की मूर्ति को देखती रही, कुछ पढ़कर भी तो बता बारात कहा जायगी। मेरे को तो पढ़ना लिखना आता नहीं।"

"इटावा के पास एक कस्बे में बारात जायेगी।" मोहन ने एक एक शब्द पर जोर देकर कहा।

"अब तो खुश हो लाडला बेटा चन्द्रभान शादी रचा रहा है। घर गृहस्थी बसायेगा।" मोहन ने व्यंग से कहा।

"अरे खुश हैं हम बहुत खुश हैं। सुग्गा ताई ने हाथ नचाकर कहा, "चलो पाप कटा। गगमहल में रासलीला बहुत हो गई जान छूटी मरी राड सविता दिखाई दे तो उसके मुह में यह कारड ठूँस दू। अब ले ले मजा। उड गया न पक्षी फुर्र से। बहुत इतराती फिरती थी।"

ताई, बहुत जल्दी सबक मिल गया। मैं तो पहले ही कहता था यह चन्द्रभान जरूर कुछ न-कुछ गुल खिलायेगा, अब देखो चूना लगाकर चलता बना।

"अच्छा है पाप का घडा भर गया। जो मा बेटी बहुत इतराती थी। सब नखरे झड गये। तेरे को यह कारड मिला कहा से।" ताई ने पूछा।

'चन्द्रभान जहा नौकरी करता है, वही आज काम से गया था। वहा पता चला। मैं यह कार्ड दिखाने को ले आया। कार्ड देख के तो कोई कुछ कह नही पायगा। मेरी बात पर तो किसी को यकीन आता नही।"

ठीक किया इसे मनकी को दिखा दे। उसकी छाती में ठण्डक पड जायगी।'

मनकी को तो सबसे बाद में दिखाऊंगा। पहले गगमहल के बड़े-बड़े लोगो को तो दिखा दू। नही तो कहेंगे, हमे तो कुछ पता ही नही। हमने तो शादी का कार्ड देखा ही नही।" मोहन ने मुह बना कर कहा, फिर जोरो से हस पडा।

पुजारी जी शाम की आरती की तैयारी कर रहे थे। मोहन सीढ़ियो में परे ही चिल्लाया, "पुजारी जी बधाई हो, शादी की मिठाई खाने का वखत आ गया।"

पुजारी जी कोठरी के बाहर निकल आये। दोनो हाथ कमर पर टिका कर अकडकर खडे हो गय "अपनी शादी की मिठाई अपनी बिरादरी वाला को खिला, हमे तेरी शादी की मिठाई खाकर अपना धरम नष्ट नही करना है। आरती के समय हम हसी ठठठा अच्छा नहा लगता।

"घबराओ मत पुजारी जी, मैं अपनी शादी की मिठाई नही खिलाऊगा मरी शादी नही हो रही है।" माहन पुजारी जी की बात से चिढ गया।

'फिर किसकी शादी करा रहा है ?'

'मैं कौन होता हू किसी की शादी करान वाला। चन्द्रभान अपनी शादी खुद कर रहे है। वही मिठाई खिलायेंगे। वह तो ब्राह्मण हैं। उनकी शादी की मिठाई तो खानी ही होगी।"

सविता के कमर की खिडकी के दानो पल्ले एकदम खुल गये। खिडकी मे मे मनकी का चेहरा दिखाई देने लगा। मोहन ने अपनी आवाज और तेज कर दी, "नमस्ते मनकी बुआ, चन्द्रभान जी की शादी हो रही है। इसी महीने की पच्चीस तारीख को विवाह है। यह काड है विवाह का।" मोहन ने सीधे हाथ को ऊपर उठाकर काड दिखाते हुए कहा।

मनकी ने जोरो से खिडकी बन्द कर दी। मोहन एक क्षण तक खिडकी की ओर देखता रहा फिर धीरे से हस दिया।

"यह क्या काड दिखा रहा है मोहन। अपन घर के छज्जे पर रामसिंह की पत्नी निकल आयी।

'जी चन्द्रभान की शादी का काड है। इसी महीन की पच्चीस तारीख को शादी हो रही है।

'ऊपर आओ । वहा मे क्या चिल्ला रहे हा ?"

अब ऊपर जाना ही होगा। यही ता मोहन भी चाहता था। नीचे बात फैल गई है। अब ऊपर बात फैलानी है।

प्रोफेसराइन के साथ ही वकीलन ने भी काड खूब अच्छी तरह जाचा परखा। काड पर छपी एक-एक लाइन को कई कई बार पढा। यकीन ही नही आ रहा था, पर हाथ कगन को आरसी की क्या जरूरत है। जब शादी का काड सामने है तो फिर यकीन करना ही हागा।

"गजब हो गया, इतना पाप भरा था इस चन्द्रभान के मन म। चुप-

चाप सारा पडयन्त्र कर डाला। किसी को हवा भी नही लगने दी।' वकीलन न माथे पर हाथ मारकर कहा।

'हवा क्यो लगन देता ?" प्रोफेसराइन बोली "जब धोखाधडी का काम करना है तब फिर छिपा कर ही किया जायेगा। अब इन मा बेटी का क्या होगा ? बहुत फूली फूली फिर रही थी। एक मिनट मे फसला हो गया।'

'इनका क्या है। चन्द्रभान चला गया, अब कोई दूसरा स्वांग रचा लेंगी। इनका भी कोई धरम है। आज यहा बैठी हैं, कल कही और जा बसेंगी।" प्रोफेसराइन न मुह बनाकर कहा।

रात क आठ बज चुके थे। मोहन ने आज खाना नही बनाया। बाजार से खा आया था। शाम को रगमहल मे जा काड दिखाकर उसने सबको चकित कर दिया था उसस बहुत प्रसन्न था। अब कोठरी का ताला खोलते हुए उसने एक नजर सविता क घर की ओर डाली। घर अन्धेरे म डूबा हुआ था। लगता है शाम से ही सो गयी मा-बेटी। अब सो जाना ही चाहिये खेल तो सारा खतम हो गया।

लम्प जलान स कोठरी म उजाला हो गया। अभी सान का मन नही हुआ। मेज पर बेतरतीब फैली किताबा कापियो को ठीक किया। जेब से सिगरेट निकालकर मुह मे लगा ली। मोहन सिगरेट भी पीता है लेकिन कुछ खास मौको पर कभी कभी। इनम भी जब वह बहुत खुश होता है ता एक दो सिगरट जरूर पीता है। आज की खुशी का तो कहना ही क्या। मार अपमान सारे निरादर का बदला एक साथ मिल गया। मन करता था इसी समय सविता क घर जाकर पूछे कहो अब क्या विचार है चन्द्रभान के बार म। अब चन्द्रभान के सिखाये म किस गालिया दोगी।

सिगरट का लम्बा कश लेकर मोहन न आखें मूद लीं। कुर्सी पर बैठे-बैठ पर जरा आगे तक फना लिय। सिर पीछे दीवार स टेक दिया। बहुत सकून मिल रहा था।

अचानक दरवाजा खुलन की चरमराहट हुई। आख खोलकर देखा

ता सामन सविता खडी थी। मोहन चौंक कर उठ खडा हुआ। क्या यह सच है। क्या सविता उसके कमरे मे आई है इतनी रात को ! मोहन जो कुछ देख रहा था उस पर उसे विश्वास नही हो रहा था।

'मुझे वह काड दोगे, सुबह लौटा दूगी।' सविता न दीवार की ओर देखन हुए कहा।

हा हा क्या नही। ल जाइये काड। खूब अच्छी तरह देखिय। पाच दिन बाद ही तो शादी है चन्द्रभान की।" मोहन न कार्ड देते हुए चोट कर दी। सविता न कुछ नहीं कहा। हाथ बढाकर काड ले लिया। फिर जस आई थी वैस ही लौट गई।

माहन अपनी जगह बैठा रहा। उसने दूसरी सिगरेट सुलगा ली। सविता का चेहरा आखा क सामने आ गया। लगता था बहुत राई है। राना ही चाहिए। जो लोग अपनी बुद्धि दूसरो के हाथो गिरवी रख देते हैं उनके भाग्य मे रोना ही रह जाता है। अभी क्या, आगे-आगे रोयेगी।

रात देर तक नींद नही आई, बस सविता का चेहरा आखो के आगे घूमता रहा। सुबह भी जल्दी आख खुल गई। स्टोव जलाकर चाय बनाई। एक कप सुगा ताई के लिए भी बनाकर रख दी। जब आयेगी तो गरम करके दे देगा। पिछले कई महीनो से यह क्रम चला आ रहा है। एक कप चाय पाकर सुगा ताई के बदन म जान आ जाती है। बहुत आशीश देती है माहन को।

चाय पीते हुए मोहन रह-रहकर सविता के घर की तरफ ही देख लेता था। अभी भी दरवाजा बन्द है, हालाकि सुबह के आठ बजने को आ गये हैं। सविता ने सुबह काड वापस करने के लिए कहा था। अगर काड नही देती है तो मोहन खुद काड माग लेगा। इसम सकोच की कोई बात नही है। काड तो वही लाया है। उसे काड शुक्ला जी को वापस भी तो करना है। फिर माग लेन म हर्ज ही क्या है। नौ बजे स्कूल मे तो सविता आयेगी ही, तभी माग लेगा।

लेकिन काड मागने की नौबत नहीं आई। सविता नौ बजे न पहुंच ही खुद मोहन की कोठरी के सामने आ गई। काड देते हुए धीरे से बोला, रात जल्दी सो न जाना। मुझे तुमसे जरूरी काम है।

मोहन कोई उत्तर दे इससे पहले ही सविता चली गई। एक गान म ही लगता था जैसे सविता को किसी ने निचोड दिया हो। उसके चेहरे की कांति ही चली गई। शरीर भी गिरा गिरा सा हो रहा है। हो सकता है रात भर सोई न हो।

रात म आने की बात कही है सविता ने। क्या काम हो सकता है सविता को। बहुत सोचने पर भी मोहन की समझ मे कुछ न आया। अब क्या चाहती है सविता। नाटक का अन्त तो हो ही चुका है। चलो देखा जायेगा। कल की चोट करने वाली सविता आज अगर मोहन से कोई बात कहना चाहती है तो यह मोहन की ही जीत है। सविता की बात तो सुनना ही चाहिए।

सुग्गा ताई को कुछ सामान कटरा से मगाना था। लेकिन मोहन ने इकार कर दिया। सुग्गा ताई के छोटे छोटे सामान की लिस्ट बहुत लम्बी होती है। किसी और दिन ला देगा। आज बिलकुल मूड नही है। किसी काम म मन ही नही लग रहा। आज तो लाइब्रेरी म जाकर वक्त गुजारेगा। फिर सुग्गा ताई का सामान लाने का मतलब है शाम तक वापस कोठरी मे आ जाना। जबकि मोहन तो रात से पहले कोठरी मे आना ही नही चाहता।

ग्यारह बजे कॉलेज म पहला पीरियड है। मोहन ठीक समय कालेज पहुच गया। मगर न जाने क्या हुआ। बाहर बारामदे म सीढियो पर बैठा रहा। क्लास म जाने का मन नही हुआ। कुछ समझ म नही आ रहा था। किसी काम म मन ही नही लगता। लाइब्रेरी की तरफ कदम बढाये फिर सहसा लाइब्रेरी के गेट पर ही मुड गया। अन्दर जाकर क्या होगा। वही मोटी-मोटी ला की किताबें, जिनसे माथा पच्ची कम-से-कम आज तो नही हो सकती।

पर समय तो बिताना ही होगा। लाइब्रेरी से पैलेस सिनेमा बहुत पास है। अभी दोपहर का शो शुरू होने वाला होगा। जेब मे पैसे भी है।

तीन घण्टे तो आसानी से कट ही जाएगे। उसके बाद का समय बाइडिंग हाउस म बीत जायेगा। यही ठीक है। मोहन न पैलेस सिनेमा की राह पकड ली।

गली मे पैर रखते ही मोहन को गंगा की तरफ से आती तेज हवा ने कपा दिया। फरवरी का महीना उतार पर है, मगर सर्दी अब भी कम नही हो रही। मोहन न मफलर गले मे कस कर लपेट लिया।

कोठरी का ताला खोलकर मोहन ने लम्प जलाया। कोठरी मे दो दिन से झाडू नही लग पाई, सारा सामान अस्त-व्यस्त था। सबसे बडी बात यह कि सुबह नल से पानी भरना भी भूल गया। घडा खाली था। बगैर पानी कैसे काम चलेगा। अभी नौ नही बजे है। शायद नल आता हो। मोहन न घडा उठाया और थोडी दूर पर लगे नल से पानी लेने चल दिया।

नल आ रहा था। घडा भर कर मोहन ने बाल्टी भी भर ली। सुबह अगर पानी नही भर पाया तो भी काम चलेगा। सुबह तो नल पर भीड इतनी होती है कि पानी लेने के लिए लाइन म खडा होना पडता। यह काम बहुत जलालत का है। दूसरे लोग अपना-अपना घडा मोहन से बचा-कर रखते है, कही मोहन के घडे से छू गया तो सब अपवित्र हो जायेगा। सरकारी नल स पानी लेने से तो कोई नही रोक सकता, लेकिन दूसरे को हिकारत की नजर से देखने पर तो कोई रोक नही है। अधिकाश लोग इसी हथियार का इस्तेमाल करके मोहन को अपमानित कर देते हैं। मोहन इसी टुच्चेपन से बचने के लिए रात को पानी भर लेता है। न कोई रोकने वाला, न टोकने वाला। दो चार कपडे धोने होते हैं, इन्हें भी रात मे ही धोना ठीक रहता है।

गली म एक-दो आदमी भूले भटके निकल जाते थे, नही तो सब तरफ शान्ति थी। नौ बजे ही सुनसान हो गया। गगमहल म कही किसी खिडकी म रोशनी की झलक मिलती बस बाकी सब अधेरे म डूबा हुआ था। सविता के घर के चारो तरफ तो इतना अधेरा छाया था कि आख

गडान पर ही घर के दरवाजे का आभास होता। लगता है सब सा गय। लकिन ऐसा कसे हो सकता है सविता ने ता रात म आने के लिए कहा है। रात का मतलब बारह बजे के बाद से तो हो नही सकता। आना होगा तो थोडी देर म आ जायेगी। दस बजे तक ता इतजार करना ही चाहिए।

मोहन न स्टोव जलाकर चाय का पानी चढा दिया। खाना तो होटल से खा ही आया था। अब एक कप चाय गले के नीचे उतरगी ता बदन म गरमी आ जायेगी। नल से पानी लाने मे बदन म कपकपाहट भर गई। समय भी तो बिताना है।

चाय पीकर मोहन ने मेज पर रखी घडी पर नजर डाली। साढे नौ बज गये। अब क्या आयगी सविता। मोहन ने जम्मुहाई लेकर बदन का ढीला किया। आज का पूरा दिन बेकार चला गया। एक शब्द नही पढ पाया। ऐसे कैसे काम चलेगा। थोडा बहुत कोस को दोहराते रहना चाहिए।

माहन ने किताब खोली ही थी कि दरवाजे पर पैरो की आवाज हुई। सविता धीरे से दरवाजा खोलकर अन्दर आ गई। मोहन चौककर कुर्सी से उठ खडा हुआ। कुछ कहना चाहा लेकिन मुह से आवाज ही नही निकली। पास बडे बेंत के मूढे को खीच कर सविता खुद ही बठ गइ। मोहन भी अपनी कुर्सी पर बैठ गया।

दोनो ही चुप थे। मोहन एकटक सविता के चेहरे की ओर ही दख रहा था। दो दिन मे ही सविता की क्या हालत हो गई। एकदम झटक गई है। चेहरा तो पहचाना ही नही जा रहा।

सविता ने ही बात शुरू की। अटकते हुए बाली "मोहन तुमस कुछ कहने का मुझ अधिकार नही है। मैंने तुम्हारा बहुत अपमान किया है। बहुत दुख दिया तुम्हे। मैं बहुत पापिन हू मैं मैं '

सविता आगे कुछ बोल नही पाई। उसकी आखो से आसू बहन लगे थे। रोते रोते हिचकिया बध गयी। दुख का आवेग इतना अधिक था कि अपने का सम्हाल पाना कठिन हो गया।

माहन एकदम घबरा गया। यह क्या कर रही है सविता। अगर

काई देख ले तो गजब हो जायेगा। न जाने क्या कहानी बन जायेगी। समझाता हुआ बोला, "यह आप क्या कर रही ह। राइये मत, कोई दख लेगा तो आफ्त आ जायेगी।"

'अब मुझ पर क्या आफत आयेगी। जो आनी थी आ चुकी।" सविता न रोते हुए कहा।

'मेरा तो कुछ ख्याल कीजिए। मुझे तो जवाब देते देते मुश्किल हो जायेगी। इतनी रात को मेरे साथ कोठरी मे आपका रहना ठीक नही है।"

सविता की रुलाई एकदम रुक गई। ठीक कह रहा है मोहन। मोहन को बदनाम करने का उसे कोई हक नही है। धोती के पल्ले से आखें सुखा कर बोली, 'तुम मेरा एक काम कर दोगे, बस यह आखिरी बार तकलीफ दे रही हू फिर कभी कुछ नही कहूगी।"

"आप भी मजाक करती हैं सविता जी,' मोहन मुस्कुराया, 'मैं तो यहा आप सबकी सेवा के लिए ही तो हू। आप सब हुकुम दीजिए। मैं अपनी ड्यूटी बजा दूगा।'

सविता की आखो से फिर आसू बहने लगे, रोते हुए बोली, 'मुझे माफ कर दो माहन। मैंने तुम्हे बहुत दुख दिया। उस नीच चन्द्रभान न मुझे तुम्हारे खिलाफ भडका दिया। मैंने सबके साथ बहुत बुरा व्यवहार किया। तुम्हारे साथ जो किया उसी की सज़ा पा रही हू।"

"जो होना था सो हो गया। अब दुखी न हो।" मोहन ने गहरी सास ली, 'मैंने कई बार आपको सावधान करने की कोशिश की पर आप तो ऐसे बहाव म बह रही थी कि किसी के कहे का कोई असर ही नही होता। खर आप काम बताइए। मुझे क्या करना है।"

मुझे इटावा वाली गाडी पर बैठा दो। मैंन इटावा जाकर उस कमीन चन्द्रभान को ठीक करना है।" सविता की गुस्से से मुट्ठिया बध गयी।

मोहन को हसी आ गई 'आप भी बडी भोली है साविता जी। दो दिन बाद चन्द्रभान की शादी है और आप उसे ठीक करना चाहती है। अब इटावा जाकर क्या होगा।"

'बहुत कुछ हो सकता है। कम स-कम एक और लडकी की जिन्दगी

बचाई जा सकती है। मेरी जिन्दगी मे तो चन्द्रभान ने जहर घोल ही दिया है। उस बेचारी अबोध लडकी ने क्या कसूर किया है जो कसाई के हाथो ब्याही जा रही है।'

आप चाहे शादी भले ही रुकवा दें। पर अब चन्द्रभान आपके नजदीक नही आयेगा। इतना जान लीजिए।"

मै उस पर थूकती हू। मैं उसकी सूरत भी देखना नही चाहती। मैं उस कुत्ते को मार कर फासी पर चढ जाना चाहती हू। हालाकि मैं जानती हू यह मैं कर नही पाऊगी लेकिन लेकिन " सविता की आखो मे फिर आसू आ गये। जल्दी से सविता ने धोती के पल्ले से अपनी आखें फिर सुखा ली सविता कुछ बोले इससे पहले मोहन ने कहा, 'आपको बहुत देर हो गई है। कही आपकी मा आ गई तो गजब हो जायेगा।'

उसकी चिन्ता न करो। मेरी मा को रात मे अफीम खाने की आदत है। सुबह से पहले नही उठेगी। मुझे अब किसी का डर नही है। हा तुम्हे मेरे कारण बदनामी का डर हो तो मैं चली जाती हू।'

आप भी कमाल करती है। मुझे काहे का डर। ज्यादा से-ज्यादा यह कोठरी छोडनी पडेगी। कही और रह लूगा। मैं तो आपके कारण कह रहा था।"

'मेरी अब और क्या बदनामी होगी। जो होनी थी हो ली। मैं अब सब कुछ सहन को तयार हू। असल मे मेरी मा बहुत दुष्ट है। इसी के कारण मेरी यह दशा हुई है। आज तुम्हे मैं सब बता देना चाहती हू। मेरी इसी मा के कारण मेरी शादी चन्दौसी मे एक बदमाश अधेड के साथ हो गइ। पैसे के लालच के कारण इस मेरी मा ने जान-बूझकर पाप कर डाला। वह आदमी मुझे किसी और के हाथो बेच देना चाहता था। मैं भाग कर घर पहुची। रुपया वापस करना मा के बस की बात नही थी, सो यह लेकर यहा आ गई। मैं यहा जसे-तैसे दिन काट लेती, लेकिन इसने मुझे चन्द्रभान से फसा दिया। शुरू मे मुझे चन्द्रभान बिलकुल अच्छा नही लगता था। बेहयाई की बातें करता था, उल्टी सीधी डीग हाकता था। मैं उसे मुह न लगाती। लेकिन क्या कहू अपनी मा को, इस कमीनी ने मुझे कही का न रखा। जान-बूझकर मुझे चन्द्रभान के साथ घर में अकेला

छोड़कर बाहर चली जाती थी फिर एक ऐसा बहाव आया जिसमें मैं बहती चली गई।" सविता फिर रोने लगी।

मोहन एकटक रोती हुई सविता को देख रहा था। क्या कहे कुछ समझ में नहीं आ रहा था। सविता ने सारी बात कह दी थी अब शायद रात के सिवाय और कुछ नहीं बचा है।

'चुप हो जाइये। पिछली बातों को याद करने से क्या फायदा। जो बीत गया उसे भूल कर कल की सोचिए। आगे की जिन्दगी को बनाने की कोशिश कीजिए।"

"मुझे अब और जीने की इच्छा नहीं है। लेकिन जब तक मैं चन्द्रभान को सजा नहीं दे लेती तब तक मैं चैन से मर भी नहीं सकती। इसीलिए मैं इटावा जाना चाहती हूं।" सविता ने हाथ जोड़कर बहुत कातरता से मोहन की ओर देखते हुए कहा, "मेरी मदद करो मोहन मुझे इटावा जाने वाली गाड़ी में बठा दो। तुम मेरी मदद कर सकते हो। और किससे कहूं।"

धीरज से काम लीजिए। जल्दबाजी में कोई कदम उठाना ठीक नहीं।' मोहन ने फिर समझाने की कोशिश की, "इटावा जाने के लिए पैसा भी तो चाहिए। किराया भाड़ा है। फिर परदेश में जाकर न मालूम क्या जरूरत पड़ जाये। यह भी तो सोचिए।"

सविता एक क्षण के लिए चुप हो गई। मोहन की बात ने बहुत-कुछ सोचने पर मजबूर कर दिया। उसके पास तो दस पाच रुपये ही होंगे। मां को पता चले तो यह भी छीन ले। घर के खर्च के नाम पर तनख्वाह तो पहली को ही झपट लेती है। फिर पैसे का इन्तजाम कैसे हो।

अचानक सविता के सीधे हाथ की उंगलियां गले पर चली गयीं। गले में डेढ़ तोले की सोने की चैन पड़ी है। इसे बेचा जा सकता है। सारा रुपयों का संकट दूर हो जायेगा, "मैं कल रुपयों का इन्तजाम कर लूंगी। दोपहर को मसूरी चली जाऊंगी। चार बजे के करीब लौटूंगी। मुझे देखते रहना। आते हुए हाथ ऊपर उठाऊंगी तो समझ लेना रुपये का इंतजाम हो गया।'

मोहन चुप था। अब और क्या कह सकता है। सविता की जिद के

आगे उसने हथियार डाल दिये। या यो कहा जाये कि अदर स कहा कोइ छिपी इच्छा काम कर रही थी कि चद्रभान को सजा मिलनी ही चाहिए। यही मौका है चद्रभान के माथ मूल-सूद सहित सारा हिसाब साफ कर दिया जाये।

'फिर परसो शाम की गाडी पकड लूगी।' सविता ने उठते हुए कहा, "दोपहर मैं इस्पेक्टर आफिस जाने का बहाना करके घर से निकलूगी। सीधे स्टेशन पहुच जाऊगी। तुम वही मुझे मिल जाना। फस्ट क्लास की खिडकी के बाहर खडे होना मैं वही मिल जाऊगी।"

एक बार फिर सोच लो अभी समय

जो सोचना था वह सोच लिया।" सविता न मोहन की बात शुरू होन से पहले ही काट दी मैं अगर इटावा न पहुची तो पागल हो जाऊगी। तुम क्या चाहत हो मैं पागल होकर यहा की सडको पर सर के बाल नोचती घूमू। मुझे बदला लेना है। मैं इटावा जरूर जाऊगी।" सविता तजी स कोठरी के बाहर चली गई।

मोहन अपनी जगह बठा रहा। सविता पागल हो जान की बात कह रही है पर वह तो इस समय भी किसी पागल से कम नही है। एक पागल का साथ देना क्या ठीक है। यह सब क्या हो रहा है मोहन की कुछ समझ म नही आ रहा था। सविता का साथ तो देना ही होगा। यह शायद मोहन की मजबूरी है। न जाने अदर से कौन-सी आवाज़ सविता के हर कदम के साथ चलन को बाध्य कर रही है।

मोहन उठकर कोठरी के बाहर आकर चबूतरे पर खडा हो गया। रात गहरा गई थी। कभी कभी दूर से कुत्तो के भौकने की आवाज़ आ जाती। गली मे आती तज ठडी हवा न राहत दी। इतनी दर कोठरी म बठन के बाद अब खुली ठडी हवा म सास लेने स मन कुछ स्थिर होन लगा।

सुग्गा ताई ने अपनी दुकान खालते ही सामान लान की याद फिर दिला दी। मोहन कहीं जाना नहीं चाहता था। कही जान का मन ही

नही हो रहा था, लेकिन सुग्गा ताई का तो काम करना ही होगा। मुग्गा ताई को यह भी तो नही बताया जा सकता है कि वह किस मानसिक द्वन्द्व म फस गया है। सविता की मदद न कर यह भी मन नही करता और सविता मे ज्यादा रुचि लेने का अथ है जलती आग म हाथ दना। सविता सबस छिपा कर ही इटावा जायेगी। बात खुलन पर यह भी ता पूछा जायेगा कि स्टेशन तक किसने पहुचाया तब क्या होगा। रामसिंह बहुत बिगडेंगे कुछ समझ मे नही आता क्या किया जाये। सोचते सोचत मोहन के सर मे दद होने लगा।

चन्द्रभान का ख्याल आते ही माहन मे फिर तेजी आ गई। सविता का इटावा जाना ही चाहिए। उस दुष्ट चन्द्रभान को भी पता चले बदमाशी करन का क्या मजा होता है। कैसा मजा आयेगा जब शादी से एक दिन पहले उसकी करतूतो का भाडा उसकी ससुराल मे ही फूटेगा। सविता को देखकर तो लडकी वाले शादी से साफ इकार कर देंगे। जिन्दा मक्खी कौन निगल सकता है। कोई बाप अपनी लडकी का जान-बूझकर कुए म नही ढकेलेगा।

लेकिन इतना सब सोचने से फायदा ही क्या। अभी तो रुपये-पैसे का इतजाम होना बाकी है। सविता इतनी जल्दी पैसा का इतजाम कैसे करेगी। अगर पसा न हुआ तो इटावा जाना हो ही नही सकता। शाम तक देखना होगा। उसके बाद ही कोई फसला किया जा सकता है।

मोहन के मन की परेशानी को सुग्गा ताई नही समझ सकती थी। उनसे कुछ कहा भी नही जा सकता। किसी से भी कुछ नही कहा जा सकता। सुग्गा ताई बार बार सामान लान की याद दिला रही थी। 'देख बेटा, सारी दुकान खाली हो गइ है सामान ला द तो काम चले।' सुग्गा ताई इस एक वाक्य को सुबह से कई बार दोहरा चुकी थी। अन्त म झुझला कर मोहन ने पैंसिल-कागज लिया और लिस्ट बनान बैठ गया।

दस मिनट म सामान की लिस्ट तैयार हो गई। अब किसी स साइकिल मागनी होगी। कटरा स कधे पर सामान नही ढोया जा सकता। सामान लान के लिए तो साइकिल का होना बहुत जरूरी है। रामसिंह ता अपनी साइकिल पर कालेज गय होंगे फिर किसस साइकिल ली जाय।

सुग्गा ताई ने इस समस्या का भी हल कर दिया। पिछले मकान के ठाकुर साहब के घर से साइकिल दिला दी। मोहन ने चलने से पहले एक बार साइकिल का निरीक्षण किया। ब्रेक, चेन, घंटी सभी ठीक है। एक घंटा जाने में और एक घंटा आने में लग जायगा। कुछ समय सामान लेने में भी लगेगा। एक बजे से पहले नहीं लौट पायगा। ठीक है सविता ने दोपहर बाद झूसी से आने को कहा है। उस समय तो वह अपनी कोठरी में ही होगा।

एक बजे से पहले ही मोहन कटरा से सामान लेकर वापस आ गया। सुग्गा ताई सामान पाकर बहुत खुश हुई। महीने भर के लिए दुकान भर गई। तेजी से साइकिल चलाने के कारण मोहन बीतते जाड़े में भी पसीने से भीग गया था। खाना बनाने के झंझट से मुक्ति पाने के लिए डबलरोटी लेता आया था। चाय के साथ उसी से पेट भर लेगा।

चाय पी लेने के बाद मोहन कुर्सी निकाल कर बाहर चबूतरे पर किताब लेकर बैठ गया। हाथ में किताब लेनी जरूरी है, नहीं तो सुग्गा ताई बेकार में कोई न कोई बात छेड़ देगी। फिर उनकी बातों का जवाब देते रहो। किताब खुली रहेगी तो सुग्गा ताई कुछ नहीं कहेगी। इतना वह भी जानती है कि पढ़ाई के बीच में बोलना नहीं चाहिए।

मोहन बार-बार गली की तरफ देख लेता। अभी तीन ही बजे हैं। इतनी जल्दी झूसी से सविता लौट नहीं सकती। आने जाने में ही काफी टाइम लगता है। सहसा मोहन के मन में क्यों ले आया, ऐसा झूसी में कौन है जो सविता को तुरंत रुपये दे देगा। फिर अपने पर हँसी आ गई। बेकार में माथा पच्ची कर रहा है। होगा कोई। मुझे इससे क्या। यह तो सविता के सोचने की बात है किससे रुपये ले किससे न ले।

आधा घंटा और बीत गया। मोहन के मन में अजब सी बेचैनी होने लगी। पुस्तक खोले हुए जरूर है लेकिन किताब के अक्षरों पर आँख ही न ठहरती। कोठरी के बाहर मोहन ने कभी भी सिगरेट नहीं पी है, लेकिन इस समय उसने सिगरेट सुलगा ली। कुछ तो राहत मिलेगी। हो

सकता है सिगरेट पीने से ही ध्यान बटे।

पन्द्रह मिनट और बीत गये। सहसा मोहन ने देखा, सविता गली में चली आ रही है। अजब हालत हो गई है। सर के बाल बिखरे हुए हैं। धूप में चलने से मुंह तमतमा रहा है। पैरों पर धूल जमी हुई है, और हर कदम ऐसे उठाती है जैसे लड़खड़ाकर अभी गिर पड़ेगी।

सविता ने मोहन को देखा तो अपना सीधा हाथ उठा दिया। इसका मतलब है कि रुपयों का इंतजाम हो गया। अब तो सविता इटावा जरूर जायेगी। चन्द्रभान को सबक सिखाये बिना नहीं मानेगी। मोहन की नसों में खून तेजी से दौड़ने लगा। एक अजब सा रोमांच हो आया। उसे लगा सविता को अब तक वह पूरी तरह समझ नहीं सका। बहुत खुद्दार औरत है स्वाभिमानी। तभी ने इतना सब कर रही है। दिल की बुरी नहीं है, बुरी सोहबत में जरूर फंस गई। पर किससे गलती नहीं होती। सही इंसान तो वह है जो अपनी गलती मान ले और पूरी ताकत से भ्रष्ट करने वाले से टकराये। सविता यही कर रही है, इसमें उसकी पूरी मदद करनी चाहिए। चाहे इस काम के लिए कितनी बड़ी सजा क्यों न झेलनी पड़े। सजा भी क्या होगी यही न इस कोठरी से जाना पड़ेगा। तो मोहन ही कौन यहां रहना चाहता है। कोठरी में क्या उसकी नाल गड़ी है जो कोठरी से मोह पाले। जहां किराया देगा वहीं रह लेगा। रामसिंह भी क्या कर लेंगे। अपने स्वार्थ के लिए ही तो यहां टिका रखा है। नौकरों की तरह काम लेते हैं। जब वह यहां से चला जायेगा तब मालूम पड़ेगा बच्चू को, छोटे छोटे काम के लिए बाजार दौड़ना कैसा लगता है।

सविता अपने घर चली गई। अब तो हो सकता है रात में ही आये। या आने की भी क्या जरूरत है। सारी बात तो तय हो ही चुकी है। कल शाम की गाड़ी से इटावा चलना है।

शाम को चाय पीने की आदत है। मोहन ने स्टोव जलाकर चाय बनाई। चाय से शरीर में नई जान आ गई। शरीर कुछ टूट सा रहा था। रात भी ठीक से सो न सका, आज सुबह से भी भाग दौड़ ही रही अब थकावट से आंखें मुंदी जा रही थीं। मोहन कोठरी का दरवाजा अन्दर से बन्द करके खाट पर लेट गया। कब आंख लग गई यह पता ही नहीं चला।

कोठरी के दरवाजे पर दो चार जोर की ठक-ठक हुई। लगा जैसे कोई पत्थर मार रहा हो। मोहन हड़बड़ा कर उठ बैठा कोठरी का दरवाजा खोल कर बाहर आया तो देखा शाम का अंधेरा चारो तरफ फैल गया था। गली अब भी सुनसान था। मोहन की समझ म न आया दरवाज पर खट की आवाज कैसे हुई। तभी एक कंकड़ उसके पास आकर गिरा। मोहन ने चौंक कर देखा थोड़ी दूर पर सविता दीवार से लगी खड़ी थी। हाथ के इशारे से उसे बुला रही थी।

मोहन ने जल्दी से चप्पल पहनी, कोठरी म ताला लगाया। लपक कर सविता के पास पहुच गया। सविता ने चारो ओर देखा, गली सूनसान थी। चलते हुए कहा क्या सो गय थ।

'हा जरा आख लग गइ थी। मोहन ने जवाब दिया।

रुपय का इतजाम हो गया है यह लो कल टिकट लेकर रखना।" सविता ने एक बड़ा-सा नोट मोहन की मुट्ठी म ठूस दिया 'गाड़ी क बजे जानी है।'

'शाम चार बजे।"

मैं स्टेशन पर मिलूगी फर्स्ट क्लास की खिड़की के पास। अब जाओ कोई देख न ले होशियार रहना।" सविता तेजी स आगे बढ़ गई। उसके हाथ म झोला था। शायद सब्जी लेने के बहाने घर स निकली थी।

मोहन वापस अपनी कोठरी म आ गया। कोठरी म पहुच कर मोहन ने देखा सविता ने पचास का नोट उसे दिया था।

स्टेशन की भीड़ म किसी को खोजने म समय लगता है लेकिन जब पहले स ही जगह तय हो तो कोई परेशानी नही होती। मोहन एक घंटे पहले ही फर्स्ट क्लास की खिड़की के पास खड़ा हो गया था। सविता आधा घंटे पहले आई। बहुत घबराई हुई थी। हकलाते हुए बोली "टिकट ले लिया। चलो गाड़ी मे बैठा दो।'

'अभी नही अभी कोई परिचित मिल सकता है। गाड़ी चलने मे

जब पान्च मिनट रह जायेंगे तभी गाडी मे बैठना ठीक होगा। पैसे जर है वठन की जगह मिल ही जायगी।"

सविता को लिए हुए मोहन प्लेटफाम म आगे की तरफ चला गया। मालगाडी मे लदन के लिए बडी-बडी पेटी प्लेटफाम पर रक्खी हुई था। उन्ही की आड मे दोना खडे हो गए। मोहन बार बार कलाइ पर बधी घडी देखता जाता। जब गाडी छूटने मे पाच मिनट रह गये ता दोना आग के डिब्बे मे चढकर बैठ गये। सविता की घबराहट कम नही हुई थी मुह से बोल ही नही निकल रहा था। जब गाडी चली तो जान म जान आई। डिब्बे मे सवारिया ज्यादा नही थी। एक कोन मे बैठने की जगह मिल गई।

'तुम क्या अगले स्टेशन पर उतरोगे ?" सविता ने पूछा।

मोहन के चेहरे पर मुस्कराहट उभर आई, 'मैन दो टिकट खरीद ह। साथ चल रहा हू। अकेले आप इतनी दूर कैसे जायेंगी। किसी का साथ होना जरूरी है। वहा भी आपके साथ न मालूम कैसा व्यवहार हो। जब आपको यहा तक पहुचाया है तो सकुशल वापस लाना भी तो मेरा फज है।"

सविता एकटक मोहन की ओर देखती रह गई। उसकी आखें पहले डबडबायी, फिर आखो से आसू निकल कर बहन लगे। सविता न धोती का पल्ला मुह पर रख कर रुलाई रोकन की कोशिश की लेकिन मोहन देख रहा था, सविता की हिचकिया बध गयी थी।

"शायद मैंने कुछ गलत कह दिया, माफ कर दीजिए।"

"इतनी आत्मीयता मत दिखाओ मोहन, मैं सह न पाऊगी।' सविता न अटकत हुए कहा, ' मैं किसी लायक नहीं रही।"

"यही तो मुश्किल है। आप अपन को खुद कभी समझ नही पायी। आप भविष्य म बहुत कुछ कर सकती हैं। जीवन वही नही है जो आप जी चुकी हैं। आगे भी तो जीवन जीना है। उस हसकर जीने का साहस बटोरिय।'

' मैं अब जीना नही चाहती। मुझ जीन की इच्छा नही है।' सविता न हिचकिया लेत हुए कहा।

कमाल है एक तरफ इतना साहस कि इतनी दूर जाकर चन्द्रभान को सबक सिखाना चाहती हैं दूसरी तरफ इतनी निराशा कि जान म भी ऊब हो गइ । ऐसे कैसे काम चलेगा ।"

मैं क्या करू माहन मेरी कुछ समझ म नही आता ।"

' हिम्मत से काम लीजिए । सब ठीक हो जायगा । ' माहन न कहा ' हम जिस काम के लिए जा रहे हैं उसम रोना धोना नही चलेगा । अगर इसी तरह आपने लडकी वाले क घर पर रोना शुरू किया तो बात एकदम बिगड जायगी । आसू पोछ डालिये ।"

सविता पर माहन की बात का तुरत असर हुआ । उसन आखें पोछ ली और खिडकी से बाहर देखन लगी । गाडी एक छोट से स्टशन पर रुक गई । शायद क्रासिंग होगा । मोहन न कधे से लटकान वाले अपन थल मे स गिलास निकाला और पानी लेने चला गया ।

पानी पीकर सविता की तबियत सम्हल गई । दो-चार छीटे सविता ने मुह पर भी मारे । चेहरे पर रौनक-सी आ गई एक बात कहू मोहन मुझे आप न कहा करो अच्छा नही लगता ।"

माहन मुस्कराकर सविता की ओर देखता रह गया । कुछ कहते नही बना ।

नौ बजे गाडी कानपुर पहुच गई । माहन खान के लिए पूडी ले आया सविता न इकार कर दिया मेरी खान की इच्छा नही है ।

तब फिर मुझे भी भूखा रहना पडेगा । मोहन ने थोडा गुस्से स कहा, मेरी समझ म नही आता तुम हर बात को सहज होकर क्यो नही लेती । भूखा रहकर क्या ज्यादा लडाई लड लोगी ।'

मोहन की डाट का असर हुआ । सविता न खाना शुरू कर दिया ।

कानपुर से गाडी आगे चली तो मोहन न ऊपर की एक बथ पर लेटने के लिए जगह बना ली । अभी तीन घटे से ऊपर का सफर और है । इटावा से तीन स्टेशन महुल जो कस्बा आता है उसी म जाना है । थोडा आराम कर लेना चाहिए । सविता उसी तरह सिकुडी सिमटी खिडकी के पास बैठी रही।

गाडी कुछ लेट हो गई। एक बजे के करीब स्टेशन आया। मोहन और सविता गाडी से उतर पडे। आधी रात का समय। सवारी कम ही स्टेशन पर उतरी। चारो तरफ खामोशी छाई हुई थी। गनीमत यह थी कि स्टेशन पर लाइट थी। तीसरे दर्जे का वेटिंग रूम भी खाली-सा था। कुछ लोग बेंचो पर पैर पसारे लेटे हुए थे। कुछ जमीन पर बिस्तर बिछाये सो रहे थे। यह सब शायद सुबह जाने वाली सवारियां हैं। एक बेंच खाली हो गई। मोहन ने जल्दी से उस पर कब्जा जमा लिया। सुबह तक तो यही रहना है।

प्लेटफार्म पर बडा-सा टी स्टाल बना हुआ है। रात भर खुला रहता है। मोहन दो कप चाय बनवा लाया। सविता ने पहले चाय पीने से मना किया, फिर मोहन के जोर देने पर चाय पी ली। 'यही बेंच पर लेट जाओ। ऐसे कब तक बैठी रहोगी?' मोहन चाय के प्याले वापस करने चला गया। मोहन को लौटने मे कुछ देरी हो गई। सविता घबरा सी गई। न जाने क्या दिल जोरो से धडकने लगा। यहा तक चली तो आइ है। अब राम ही मालिक है। कभी-कभी मन मे पछतावा भी होने लगता। बेकार मे हो यहा तक आई है। जिसने ठगना था वह तो ठग चुका अब उसे सजा दिलाकर क्या मिलेगा। हां, अगर एक बेकसूर लडकी की जान बच जाये तो जरूर मन को संतोष होगा, नही तो सब बेकार है। अपनी ही गलती पर जिन्दगी भर का रोना रह गया है।

मोहन अभी तक नही आया है। सविता एकदम घबरा गई। मोहन ही इस समय सहारा है। न मालूम कहा चला गया। सविता बेंच से उठकर वेटिंग रूम के गेट तक आई। झाक कर देखा। मोहन टी स्टाल पर खडा बातें कर रहा था। ऐसी भी क्या बात है जो इतनी देर लगा दी। सविता फिर वापस आकर बेंच पर बैठ गइ।

मोहन लौट आया। सविता रूआसी सी होकर बोली, "कहा रह गये थे। मुझे बहुत डर लग रहा था।"

"अरे वाह, इसमे डरने की क्या बात है। यही तो था।" मोहन ने कहा, "जरा चाय वाले से कस्बे के बारे मे मालूम कर रहा था। लडकी वाला के घर से थोडी दूर पर बाजार के बाहर एक धर्मशाला है। वही चल

कर सामान रख देंगे, फिर लडकी वालो के यहा चलेंगे।"

सविता ने काई जवाब नही दिया। अपने झोले म स एक चादर निकाल कर ओढ ली, और बेंच पर सिकुड कर लेट गई।

मोहन ने कुछ सोचा, उसन भी अपने कधे पर लटकान वाले झोले म स चादर निकाली और वही जमीन पर बिछा कर लेट गया। हल्की शाल साथ थी ही उसे ही ओढ लिया।

भोर पहर मेल ट्रेन धडधडाती हुई गुजरी तो स्टेशन शोर मे डूब गया। मोहन की आख खुल गई। सविता भी उठ कर बैठ गई। सुबह का उजाला चारो ओर फैल गया था। चिडिया चहचहा रही थी। रात न जान कब आख लग गई। कुछ होश ही नही रहा।

मोहन ने अगडाई लेकर बदन को सीधा किया।

मुह हाथ धो ला। एक कप चाय पीते हैं। फिर धमशाला चलेंगे।'

'मेरी इच्छा नही हो रही है। जी मिचला रहा है। मैं चाय नही पियूगी।' सविता ने उत्तर दिया।

मोहन सविता की ओर देख रहा था। सविता के चेहरे पर घबराहट साफ दिखाई दे रही थी।

'देखो इस तरह घबरान स काम नही चलेगा। हम यहा लडकी वालो का समझाने आये हैं। कोई लडने-झगडने नही आये हैं, फिर डर काहे का। चाय पियो मन को मजबूत करो, समझी।" मोहन ने बहुत विश्वास के साथ समझाया।

सविता उठकर नल के पास चली गई। जब तक सविना ने मुह-हाथ धाया, मोहन चाय ले आया था। चाय पीने के बाद मोहन ने सिगरेट सुलगा ली। जब दिमाग मे परेशानी हो तो सिगरेट बहुत राहत देती है। मोहन जारो से सिगरेट के कश ले रहा था।

चादरें झाड कर थैल म ठूस ली गयी। दोनो धमशाला जाने के लिये तैयार हो गय। पहले धमशाला जाकर सामान वहा रख देंगे, फिर लडकी वालो क यहा जायेंगे।

आठ बजते-बजते माहन और सविता लडकी वालो के दरवाजे पर पहुच गय। शादी का घर। सुबह से ही गहमा-गहमी मची हुई थी। बारात आ चुकी थी। रात को फेरे पडने है। एक मिनट की फुसत किसी को नहीं है। कोई किसी की बात नही सुन रहा था। बडी मुश्किल से मोहन ने लडकी के पिता को बाहर बुलाया।

अधेड उम्र क कमजार स एक व्यक्ति आखा पर चश्मा चढाये बाहर आ गय। यह पण्डित मीताराम है। लडकी के पिता। हाथ जाड कर खडे हा गय।

'कहिय, क्या सेवा है।"

"हम आपसे अकेले म बात करनी है। जरा एकान्त मे चलन की कृपा करेंगे।" मोहन ने कहा।

लडकी के पिता की समझ म कुछ नही आया। ऐसी क्या बात है जो अकेले म कहना चाहत हैं।

' हम आपकी ही भलाई की बात करना चाहते हैं। हमारी बात सुन लीजिए, फिर आप जसा चाह करें।"

लडकी के बाप न कुछ सोचा फिर धीरे-स कहा, "ठीक है आइये।"

बाहर के दरवाजे के पास से ही जीना ऊपर जाता है। ऊपर की मजिल म दो कमर बने हुए हैं। एक मे सामान भरा हुआ है, दूसरा उठने-बठने के काम आता है। कमरे म एक पलग पडा हुआ है, जिस पर तीन बच्चे उछल कूद मचा रहे थे। पण्डित जी ने तीनो बच्चो को नीचे भगा दिया, मोहन और सविता को पलग पर बैठने का इशारा किया, खुद एक कुर्सी खीच कर बैठ गये।

माहन ने ही बात शुरू की। थाडी सी भूमिका बनाकर साफ कह दिया कि किस तरह चन्द्रभान ने सविता के साथ शादी का वायदा किया और अब धोखा देकर आपकी लडकी से विवाह रचाना चाहता है। आगे की बात सविता से कहने क लिए कहकर माहन चुप हो गया।

लेकिन यह क्या, सविता ता कुछ बोल ही नही पा रही है। बालना चाहा तो आसू बहन लगे। रोत रोत हिचकिया बध गयी। मोहन को गुस्सा आ गया, अजब औरत है। वहा स तो बडी दमखम स यहा तक आ

के भाग म बदा है वह भोगेगी । अगर दु ख ही हमारी लडकी के भाग मे है, ता कोइ क्या कर सकता है। अब कुछ नही हो सकता। घर पर आई बारात को नही लौटाया जा सकता। क्या सीताराम लडकी तुम्हारी है तुम फमला करो।"

' भइया जैसी मेरी बटी, वैसी आपकी। आप बडे भाई हो आप ही जा ठीक समझो करो। मैं क्या कहू। मेरे तो भाग ही फूटे है। नही तो फरा स पहले ऐसा विघ्न क्स पडता।" सीताराम की आखा म आसू आ गय।

ठीक है जी। आप दाना ने जो कहना था कह लिया। हमने सुनना था सुन लिया। अब आप जैस आये हो वैसे ही चले जाओ। यह शादी नही रुक सकती। हम लडकी का सारी जिन्दगी घर मे कुवारी नही रख सकत।" बडे भाई न निणय सुना दिया।

और यह भी समझ ला अगर आप दोनो ने जरा भी शोर मचाने की कोशिश की या झगडा करने की सोची तो हमसे बुरा कोई न होगा।" नौजवान सा आदमी ताव खाकर बोला, अभी हमारे घर की औरतो को पता नही चला है। उन्ह पता चल जाये तो कोहराम मच जायेगा। यहा आन स पहले आप दाना को कुछ सोचना चाहिए था। ऐसे शादी-ब्याह नही रुक्त हैं। चन्द्रभान न आपके साथ धोखा किया है। उसके लिए आप उसस निपटो, हमे क्यो बीच म सानत हो।"

सविता की जिन्दगी चन्द्रभान ने खराब कर दी अब आपकी लडकी की जिन्दगी खराब न हो इसीलिए हम यहा आये हैं आपको" मोहन अपनी बात पूरी नही कर पाया, बीच मे ही बडे भाई बोले, "ठीक है। मान लिया। पर अब कुछ नही हो सकता। हमने कहा न, अगर बारात आन म पहल पता चलता ता भी हम कुछ सोच सक्ते थे। पर अब कुछ नही हो सकता। अब आप लाग जैस आये हो वैस ही चुपचाप लौट जाओ। हमारी भलाई इसी म है। बडे पण्डित जी ने हाथ जोड लिए।

बात खतम हो गइ। मोहन और सविता उठकरखडे हो गये। बडे पण्डित जी सविता के सर पर हाथ रख कर बाले, ' तुम भी हमारी बेटी की तरह ही हो। चन्द्रभान न जो किया बुरा किया। पर बेटी हम मजबूर

हैं कुछ कर नही सकते। घर आई बारात नही लौटा सकते।"

सविता फिर रोन लगी। रोते रोते मोहन के पीछे-पीछे जीना उतर आई। दरवाजे पर दो-चार आदमी आखें फाडे दानो को दख रह थ। लेकिन मोहन सविता का हाथ पकडे लगभग घसीटते हुए जल्दी स-जल्दी लडकी वालो के घर से दूर हो जाना चाहता था। मोहन और सविता जब जीना उतर रहे थे तो कमरे से नौजवान की ऊची आवाज सुनाई दी थी, 'कमीनी नीच औरत तिरिया चरित्र दिखा रही ह।" इससे आग कुछ सुनाई नही दिया। इससे ज्यादा कुछ सुना भी नही जा सकता। जब साफ जवाब मिल गया है तब फिर जल्दी से जल्दी इस कस्बे से दूर हो जान मे ही भलाई है। सडक पर आते ही मोहन ने रिक्शा पकड लिया। सडक के दो मोड के बाद ही दोनो धमशाला आ गये।

धमशाला के एक कोने म सविता मुह ढाप के पड गई। मोहन न कुछ नही कहा। वह भी एक तरफ पडे तख्त पर बैठ गया, झाले मे से किताब निकाल कर पढनी चाही लेकिन मन तो कही और ही लगा हुआ था। हम बीसवी शती के उत्तराध म चल रहे हैं। मगर कही से भी समाज एक इच भी आगे नही बढा है। वही का वही जड पडा हुआ है। जान-बूझ कर लडकी की जिन्दगी खराब की जा रही है। सारा घर भर एक ही रट लगाये हुए था बारात आ गई है बारात आ गई है।' बारात आने से क्या हाता है। जिन्दगी बडी है या बारात का आना। वही जातीय रूढिवादी मान्य ताए वही सकीण विचार। लडकी को लडके के सामने छाटा और असहाय मानना। सदिया से चला आया अ धविश्वास बराबर अपनी जगह कायम है। कही कुछ नही बदला।

इतनी भागदौड बेकार ही रही। चलो सविता ने भी यहा आकर सब देख लिया। मन की भडास भी निकल गई। बहुत शोर मचा रही थी यह कर दूगी वह कर दूगी कुछ भी तो नही हुआ। बोला तक नही गया। बस एक ही काम आता है रोना। बात-बात पर आसू बहाना। घर म दहाडना और बात है लेकिन सामने आकर अपने हक के लिए लडना बहुत बड

दूगा मैं तुझे कच्चा चबा जाऊगी। नीच बदमाश

चन्द्रभान एक क्षण के लिए सकते म आ गया। आखें फाडे सविता को दखता रहा। फिर सम्भलकर चिल्लाया, "अरे यह कौन चुडैल आ गई, हटाओ इस यहा से।" उसन अपन पैर से सविता के सीने म ठोकर मारी, हट यहा स नीच औरत।"

मोहन भागता हुआ सविता के पास आ गया था।" चन्द्रभान के पैर की चोट से लडखडाई हुई सविता को सम्भालत हुए बोला 'जबान सम्भालकर बात करो चन्द्रभान वरना ठीक न होगा।"

अच्छा तो यार भी साथ है। अरे देखते क्या हो मारो इस साले लफगे को।"

मैं लफगा हू।" मोहन ने आग बढकर चन्द्रभान की बाह पकड ली। एक ही झटके म चन्द्रभान का घोडे से नीचे खीच लिया। चन्द्रभान रकाब म पर फस होने के कारण जमीन पर गिर गया। इसी बीच बारातियो मे म किसी एक न माटी छडी से मोहन के सर पर वार किया। छडी पूर जोर क साथ मोहन क माथे पर लगी। उसका सर चकरा गया। चन्द्रभान की बाह उसके हाथ स छूट गई। इसके बाद मोहन पर बरातियो के घूस और लात पडन लग।

सविता मोहन से लिपट गई। बाराती औरत पर हाथ उठाने से झिझक गय। फिर भी दो चार घूसे सविता के भी लगे। ठाकुर साहब न भी मोहन को अपनी बाहो के घेरे मे ले लिया था। आसपास के दुकानदार भी आ गये। वह भी बीच-बचाव करन लगे। किसी ने चिल्लाकर कहा, 'पुलिस बुलाओ पुलिस। इन बदमाशो को पुलिस म दे दो।"

'हा-हा पुलिस बुलाओ, मैं भी पुलिस को बताऊगी, यह कितना नीच है। इसन मेरा धर्म ईमान बिगाडा। मुझसे शादी का वायदा किया। अब एक दूसरी लडकी की इज्जत बिगाडना चाहता है।'

चन्द्रभान अब तब सम्भल चुका था। जमीन पर गिरे अपन मोर को उठाकर सर पर रखकर घोडी पर चढत हुए बोला, 'नही-नही, पुलिस-वुलिस कुछ नही। बारात आगे बढाओ। इन सालो को बाद म देख लेंगे।'

ठाकुर साहब ने जल्दी से अलमारी म स अपना दवाओ का बक्सा निकाला। मिलीटरी के दिना से ही वह कम्पाण्डरी का थोडा बहुत काम करते आ रहे थे। किसी भी समय मदद करने को तयार रहत थ। मोहन से तो थाडा लगाव भी हो गया था। अभी कुछ देर पहले तो यह नौजवान कसा हस बोल रहा था। अब अधमरा-सा पडा है। ठाकुर साहब न बाहर चाय की दुकान से गम पानी मगवाया। मुह पर लगे खून को धोया। माथे पर दवा लगाकर पट्टी बाध दी। पर म भी पट्टी बाधी। एक गिलास दूध म हल्दी घोलकर मोहन को जबरदस्ती पिला दी। इससे ताकत आ जायेगी। मोहन किसी तरह उठकर बैठ गया। अभी भी सारा बदन दद कर रहा था। सविता भी कपडे बदलकर पास आ गई थी।

"अब तुम दोनो तुरन्त इस कस्बे से चले जाओ। मैं यहा की हालात जानता हू। वे सब तुमसे बदला जरूर लेंगे। हो सकता है पुलिस के किसी केस मे फसा दें। परदेस म लेने के देने पड जायेंगे। वैसे तुम्हे यहा इस तरह आना नही चाहिए था।"

"मैं तो कुछ भी कहना नही चाहती थी मैं " ठाकुर साहब न सविता की बात काटकर कहा, "मैं सब समझ गया हू बेटी। आज की दुनिया बहुत मक्कार है। रोज ही किसी-न किसी की जिन्दगी तबाह हो रही ह। जो हुआ उसे भूल जाओ। और इन्हे लेकर तुरत इस कस्बे से दूर हो जाओ। वह आदमी गुण्डा लगता है। दखा नही कैसा बिफर रहा था। वह जरूर बदला लेगा, हो सकता है झुण्ड के झुण्ड आदमी तुम्हे मारन आत ही हो। तब हम भी नही बचा पायेगे। भलाई इसी मे है जो गाडी मिले उसी से यहा से दूर चले जाओ।" ठाकुर साहब न हाथ म बधी घडी पर नजर डाली, 'सात बजने वाले है। सवा सात की एक गाडी कानपुर से आगरा जाने के लिए आती है, उसी म बठ जाओ। मैं रिक्शा बुलाता हू।"

ठाकुर साहब ने बाहर आकर सडक पर जात एक रिक्शे को रोका। सहारा देकर मोहन को रिक्शे पर बठा दिया। सविता भी रिक्शे पर बठ गई।

'मैं भी तुम्हारे साथ स्टेशन चलता, लेकिन यहा भी देखना है। यहा

इस झमेले म बारात के साथ चल रहा बाजा ब द हो गय
एक बाराती ने चिल्लाकर कहा, 'अरे बाजा क्या बन्द कर दिया,
बजाओ । बाजा फिर जारो स बजन लगा "राजा की
बारात, रंगीली होगी रात मगन मैं नाचूगी, हो हो हो "
तेजी स आगे बढ़ चली। लेकिन दो चार बाराती अब भी ताव खा
और घूम घूम के मोहन और सविता का देख रह थे। बारात
बुजुग कुछ समझ नही पाये थे। इस हगामे से डर गय थ। अचरज
मुडकर वह भी देख रह थे। लेकिन बेहद डरे होने के कारण तजी
बढन की कोशिश कर रहे थे। दो-एक ऐसे बाराती भी थ जो मार
कारण डरे हुए रोत बच्चो को गाद म लेकर चुप कराने की कोशि
रहे थे। बारात बराबर आगे बढती जा रही थी।

मोहन ने सीधा खडा होना चाहा लेकिन खडा न हो सका
फट गया था उससे खून बहकर मुह पर होता हुआ बुशट पर टप
था। बुशट खीचतान म बिलकुल फट गई थी। घूसा लगने से ऊप
होट भी फटकर सूज गया था। मारपीट मे किसी बाराती के मजब
की टोह मोहन के सीधे पर के घुटने के नीचे पड गई थी। वहा भी
फटकर खून निकल आया था। इसी चोट के कारण सीधा पर जमी
पूरी तरह नही रखा जा रहा था। पीठ तो अकड ही गई थी। न
कितने घूसे एक साथ पीठ पर पड गय थे। ठाकुर साहब न एक
मोहन को सहारा दकर धमशाला मे लाकर, तख्त पर लिटा दिया।

सविता अब भी रो रही थी। मोहन की हालत देखकर घबर
मारे उसके मुह से आवाज नही निकल रही थी। उसकी धोती भी
तान म दो जगह से फट गई थी। ब्लाउज भी बाह पर स फट गया

तुम बेटी अपने कपडा का ध्यान करो। अगर दूसरा कपडा
बदल लो। मैं तब तक इसकी पट्टी करता हू।" ठाकुर साहब न स
कहा।

"और हा उसकी दूसरी कमीज हो तो वह भी दे देना।"

सविता ने झोले म स लाकर मोहन की दूसरी कमीज दे दी
भी एक कमरे की ओट म जाकर कपडे बदलने लगी।

ठाकुर साहब न जल्दी से अलमारी म से अपना दवाओ का बक्सा निकाला। मिलीटरी के दिना स ही वह कम्पाण्डरी का थोडा-बहुत काम करत आ रहे थे। किसी भी समय मदद करन को तैयार रहत थ। मोहन से तो थोडा लगाव भी हो गया था। अभी कुछ देर पहले तो यह नौजवान कसा हस बोल रहा था। अब अधमरा सा पडा है। ठाकुर साहब न बाहर चाय की दुकान से गम पानी मगवाया। मुह पर लग खून को धाया। माथ पर दवा लगाकर पट्टी बाध दी। पर म भी पट्टी बाधी। एक गिलास दूध म हल्दी घोलकर मोहन को जबरदस्ती पिला दी। इसस ताकत आ जायेगी। मोहन किसी तरह उठकर बैठ गया। अभी भी सारा बदन दद कर रहा था। सविता भी कपडे बदलकर पास आ गइ थी।

"अब तुम दोनो तुरन्त इस कस्बे स चले जाओ। मैं यहा की हालात जानता हू। वे सब तुमसे बदला जरूर लेंगे। हो सकता है पुलिस के किसी केस म फसा दें। परदेस म लेने के देन पड जायेंगे। वसे तुम्ह यहा इस तरह आना नही चाहिए था।"

'मैं तो कुछ भी कहना नही चाहती थी मैं " ठाकुर साहब ने सविता की बात काटकर कहा, "मैं सब समझ गया हू बेटी। आज की दुनिया बहुत मक्कार है। रोज ही किसी-न किसी की जिन्दगी तबाह हो रही ह। जो हुआ उस भूल जाओ। और इन्ह लेकर तुरन्त इस कस्बे स दूर हो जाओ। वह आदमी गुण्डा लगता है। दखा नही कैसा बिफर रहा था। वह जरूर बदला लेगा, हो सकता है झुण्ड क झुण्ड आदमी तुम्ह मारन आते हो। तब हम भी नही बचा पायेंगे। भलाई इसी मे है जो गाडी मिल उसी स यहा से दूर चले जाओ।" ठाकुर साहब न हाथ म बधी घडी पर नजर डाली "सात बजने वाले है। सवा सात का एक गाडी कानपुर स आगरा जान के लिए आती है, उसी म बठ जाओ। मैं रिक्शा बुलाता हू।'

ठाकुर साहब ने बाहर आकर सडक पर जात एक रिक्शे को रोका। सहारा दकर मोहन को रिक्शे पर बठा दिया। सविता भी रिक्शे पर बठ गई।

मैं भी तुम्हारे साथ स्टेशन चलता, लकिन यहा भी दखना है। यहा

काई आयगा तो मैं सम्भाल लूगा।" ठाकुर साहब न कहा, "और हा, एक पत्र डाल दना अपनी कुशलता का, मुझे चिन्ता रहेगी।'

रिक्शा तेजी स स्टशन की तरफ चल दिया।

ठाकुर साहव ने ठीक ही कहा था। सवा सात वजे आगरा जान वाली ट्रेन आ गइ। टिकट सविता न ल लिया था। मोहन सविता क कन्धे का सहारा लिए ट्रेन म चढ गया। सविता भी आकर माहन क पास वैठ गइ।

पाच मिनट बाद ट्रेन न सीटी देकर प्लेटफाम छोड दिया। सविता ने चन की सास ली। अभी भी उसकी छाती जोरा स धडक रही थी। सारा वदन काप रहा था। लगता था शार मचात हमला करन लोग आ जायग।

माहन आखें बन्द किय सर एक आर टिकाय गुमसुम-सा वठा था। सविता की कुछ पूछन की हिम्मत नहीं हा रही थी। गाडी के झटके क साथ हिलन स माहन के मुह से एक हल्की सी आह निकल जाती थी। कुछ दर वाद माहन ने आखे खाल दा। गाडी क बाहर अधेरा छाया हुआ था। माहन खिडकी के बाहर फन अधरे को देखने लगा।

अब कसी तबियत है ' सविता न पूछा।

ठीक है, थाडा दद है वह भी ठीक हो जायगा।' मोहन न जवाब दिया।

मर कारण तुम्हारे ऊपर यह मुसीबत आई है।" सविता की आखो म फिर आसू आ गय।

माहन थोडा सम्भलकर बठ गया मै ठीक हो जाऊ तुम यही चाहती हो न। मोहन ने जार देकर पूछा।

सविता न सर हिलाकर अपनी सहमति जाहिर की।

तब फिर तुम यह रोना बन्द करा। मुझे रोन से सख्त नफरत है, समझा। मोहन न गुस्स स कहा न मालूम तुम औरतो के अन्दर कितना पानी हाता है जो आखा क रास्त वहता ही रहता है। कल से रो रही हो।

अभी पेट नही भरा । अजीब मुसीबत है ।"

सविता ने जल्दी-जल्दी आखे पोछ डाली। अब वह दूसरी ओर देख रही थी।

तीन स्टेशन और निकल गये। इटावा आ रहा है। सविता ने चप्पल पहन ली। अपने झोले के साथ ही मोहन का झोला भी ले लिया। मोहन अब अपने को काफी स्वस्थ महसूस कर रहा था। वह अपने सीधे पर को पूरी तरह जमीन पर टिका कर चलने की कोशिश कर रहा था।

इटावा स्टेशन आते ही दोनों गाडी से उतर पडे। प्लेटफार्म पर थोडी थोडी दूर पर बैठने के लिए बेंचें पडी थी। एक खाली बेंच देखकर मोहन और सविता बैठ गये।

जब तक गाडी खडी रही प्लेटफार्म पर आदमियों के चलने फिरने का शोर होता रहा। गाडी के जाते ही प्लेटफार्म सूना हो गया। दूसरी गाडी आने मे देरी है। तब तक के लिए प्लेटफार्म खाली रहेगा।

सविता सर नीचा किये कुछ सोच रही थी। मोहन सामने फैले अंधेरे मे कुछ खोजने की कोशिश कर रहा था। एक अजब सी बेचैनी उसके अंदर भर गई थी। शायद कुछ कहना चाहता था, लेकिन कह नही पा रहा था।

सविता ने ही बात शुरू की, अटकते हुए बोली, "मोहन, मेरी एक बात मानोगे। मुझे मेरे हाल पर छोड दो। तुम लौट जाओ। मेरे कारण तुम्हे बहुत कष्ट मिला है।"

मोहन चौक गया। चुभती नजरो से उसने सविता को देखा। यह क्या कह रही है सविता।

"अच्छा मैं वापस चला जाऊ और तुम्हे तुम्हारे हाल पर छोड दू।' मोहन की आवाज मे कटुता उभर आई थी, 'फिर तुम क्या करोगी ?"

'प्राण दे दूगी। कही जाकर डूब मरूगी। और मैं कर ही क्या सकती हू।" सविता जोरो से रो पडी, "अब लौट कर कहा जाऊ ? अब मेरी जिन्दगी मे बाकी ही क्या बचा है ?"

'तुम्हे अगर यही सब करना था तो इतनी दूर आने की क्या जरूरत थी। रंगमहल के पास गंगा बहती है। वही डूब मरती।"

काई आयगा तो मैं सम्भाल लूगा।" ठाकुर साहब न कहा, "और हा, एक पत्र डाल दना अपनी कुशलता का, मुझे चिता रहगी।"

रिक्शा तेजी स स्टशन की तरफ चल दिया।

ठाकुर साहब न ठीक ही कहा था। सवा सात वजे आगरा जान वाली ट्रेन आ गइ। टिकट सविता न ल लिया था। मोहन सविता क कधे का सहारा लिए ट्रेन म चढ गया। सविता भी आकर माहन क पास बैठ गइ।

पाच मिनट बाद ट्रेन न सीटी दकर प्लेटफाम छोड दिया। सविता ने चन का सास ली। अभी भी उसकी छाती जोरा स धडक रही थी। सारा बदन काप रहा था। लगता था शार मचाते हमला करन लाग आ जायग।

माहन आखें बन्द किय सर एक आर टिकाय गुमसुम-सा बठा था। सविता का कुछ पूछन का हिम्मत नहीं हा रही थी। गाडी के झटके के साथ हिलन स माहन के मुह से एक हल्की सी आह निकल जाती थी। कुछ दर बाद माहन न आखे खाल दी। गाडी क बाहर अधेरा छाया हुआ था। माहन खिडकी के बाहर फल अधेरे को देखन लगा।

अब कसी तबियत है ?" सविता न पूछा।

ठीक है थाडा दद है वह भी ठीक हो जायगा।" मोहन न जवाब दिया।

मर कारण तुम्हार ऊपर यह मुसीबत आई है।" सविता की आखो म फिर आसू आ गय।

माहन थोडा सम्भलकर बठ गया मैं ठीक हो जाऊ तुम यही चाहती हा न। मोहन ने जोर दकर पूछा।

सविता न सर हिलाकर अपनी सहमति जाहिर की।

तब फिर तुम यह रोना बन्द करो। मुझे रोने स सख्त नफरत है, समझा।' मोहन न गुस्स से कहा न मालूम तुम औरतो के अन्दर कितना पानी हाता ह जो आखा क रास्त बहता ही रहता है। कल से रो रहा हो।

अभी पेट नही भरा । अजीब मुसीबत है ।"

सविता न जल्दी-जल्दी आखे पोछ डाली । अब वह दूसरी ओर देख रही थी ।

तीन स्टेशन और निकल गये । इटावा आ रहा है । सविता न चप्पल पहन ली । अपन झोले के साथ ही मोहन का झाला भी ले लिया । माहन अब अपने का काफी स्वस्थ महसूस कर रहा था । वह अपन सीधे पर का पूरी तरह जमीन पर टिका कर चलन की कोशिश कर रहा था ।

इटावा स्टशन आते ही दोनो गाडी स उतर पडे । प्लेटफाम पर थाडी थोडी दूर पर बैठन के लिए बेचे पडी थी । एक खाली बेच दखकर माहन और सविता बठ गये ।

जब तक गाडी खडी रही प्लटफाम पर आदमिया के चलन फिरन का शोर होता रहा । गाडी के जाते ही प्लेटफाम सूना हा गया । दूसरी गाडी आने म देरी ह । तब तक के लिए प्लटफाम खाली रहेगा ।

सविता सर नीचा किये कुछ सोच रही थी । मोहन सामन फले अन्धेर म कुछ खोजने की कोशिश कर रहा था । एक अजब सी बेचनी उसक अन्दर भर गई थी । शायद कुछ कहना चाहता था, लेकिन कह नही पा रहा था ।

सविता ने ही बात शुरू की, अटकते हुए बोली, ' मोहन, मरी एक बात मानोगे । मुझे मेरे हाल पर छोड दो । तुम लौट जाओ । मेर कारण तुम्हे बहुत कष्ट मिला है। "

मोहन चौक गया । चुभती नजरो स उसन सविता को दखा । यह क्या कह रही है सविता ।

' अच्छा मैं वापस चला जाऊ और तुम्हे तुम्हारे हाल पर छोड दू । मोहन की आवाज मे कटुता उभर आई थी, ' फिर तुम क्या करोगी ?"

' प्राण दे दूगी । कही जाकर डूब मरूगी । और मैं कर ही क्या सकती हू ।" सविता जोरो से रो पडी, अब लौट कर कहा जाऊ ? अब मेरी जिन्दगी म बाकी ही क्या बचा है ?"

' तुम्हे अगर यही सब करना था तो इतनी दूर आने की क्या जरूरत थी । गगमहल के पास गगा बहती है । वही डूब मरती ।"

'मुझे और कुछ न कहो मोहन। मैंने बहुत सहा, अब और नहीं सहा जाता।' सविता ने हिचकियां लेते हुए कहा, मेरा जीवन समाप्त हो गया अब कुछ बाकी नहीं बचा। मैं अब मुक्ति चाहती हूं।"

सविता तुम कायर ही नहीं स्वार्थी भी हो। बस अपने बारे में ही सोचती रहती हो। अपने बारे में ही फैसला कर लेती हो। इतनी मार खाई आखिर किसलिये? तुम्हें यही सब करना था तो मेरी यह दुर्गति क्या कराई?

सविता ने कुछ कहना चाहा लेकिन उनके मुंह से आवाज ही नहीं निकली।

इसमें भी तुम्हारा दोष नहीं है। मैंने जन्म ही ऐसी जात में लिया है, जहां में जुड़ने के कारण मुझे लेकर कोई कुछ भी कल्पना नहीं कर सकता। और मुझ में भी इतना साहस कभी नहीं हुआ जो कुछ कह पाता। अब तुमने मरने की बात सोच ली। सब कुछ खतम कर दिया। अब अगर मैं कहूं जो जीवन बाकी बचा है वह मुझे दे दो, तो " मोहन ने अपने हाथों में सविता का हाथ थाम लिया 'सविता, तुम नहीं जानती मेरे मन में तुम्हारे लिए क्या है। मैंने तुमको बराबर चाहा है। तुम्हें पाने के सपने देखे हैं। मगर कभी कुछ कह नहीं पाया।"

सविता सिहर उठी। मोहन के हाथों के स्पर्श ने उसे हिला दिया नहीं यह नहीं हो सकता। मैं तुम्हारे लायक नहीं हूं। तुम जानते हो मुझे कुत्तों ने नोचा है। मेरा सारा शरीर अपवित्र कर दिया। मैं किसी के लायक नहीं रही मैं "

'पिछली बात भूल जाओ। न मैं कुछ जानता हूं, और न तुम कुछ जानो। हम आज से नया जीवन शुरू करेंगे। अभी से नई जिन्दगी पा लेंगे।" मोहन ने कस कर सविता का हाथ अपने हाथों में दबा लिया, सविता, मैंने तुम्हें छुप छुप कर प्यार किया है। तुम्हारी एक झलक पाने के लिये मैं अपनी कोठरी से तुम्हारे घर की ओर देखता रहता था। तुमसे एक बात करने के लिये मौका ढूंढ़ता था। मैं तुम्हें मरने नहीं दूंगा। मैंने भी बहुत सहा है। अब और नहीं सह सकता। एक बार हां कहो सविता।"

नहीं यह नहीं हो सकता। तुम्हारे आगे पूरा जीवन पड़ा है। मैं

उसम और जहर नही घोल सकती । मेरा नाम न लो मोहन, दुनिया तुम्हे जीने नही दगी ।"

"दुनिया तो मुझे अब भी जीने नही दे रही है। चारो तरफ मुझे नफरत ही मिली है । दुनिया की बात मत करो। अपनी बात कहो। क्या तुम्हारे मन म मेरे लिए अब भी नफरत ही

'बस करो मोहन मुझे और अपमानित मत करो।" सविता ने अपनी उगलिया मोहन के होठो पर रख दी।

मोहन ने सविता को अपने निकट खीच लिया 'तुम्हे अब मुझसे कोई नही छीन सकता। मैं यहा स तुम्हे अपने घर ले चलूगा। हमारा छोटा-सा गाव है, छोटा-सा घर है। हम वही रहेंगे। एक बार हा कह दो सविता।"

सविता अब और अधिक अपने का नही राक सकी। राते हुए उसने अपन को मोहन के हाथा म सौप दिया।

प्लेटफाम पर दूर-दूर बिजली के खम्बो मे लगे बल्ब हल्की रोशनी फन रहे थे। प्लेटफाम अब भी सूना था। एक दा यात्री इधर-उधर आ जा रहे थ। थोडी देर मे गाडी आयगी सविता और मोहन को लेकर एक नई दिशा की आर चल देगी।

☐☐

हमारे द्वारा प्रकाशित
अन्य श्रेष्ठ उपन्यास

मोहतरमा	शुभा वर्मा	30 00
हर आदमी का डर	कुलदीप बग्गा	20 00
मारवाड का नाहर	प्रतापसिंह तरुण	25 00
चलता हुआ लावा	रमेश बक्षी	12 00
खुलेआम	"	12 00
किस्से ऊपर किस्सा	"	15 00
चाकलेट	पाडेय बेचन शर्मा 'उग्र'	15 00
कुमारिकाये	कृष्णा अग्निहोत्री	30 00
पतझड की आवाजे	निरुपमा सेवती	15 00
प्रतिकार	सुदर्शन चोपडा	15 00
खुले हुए दरीचे	नफीस आफरीदी	10 00
टूटा हुआ इद्रधनुष	मजुल भगत	8 00
लालबाई (बगला स अनू० I व II)	रमापद चौधरी	35 00
दुर्गेशनदिनी	बकिम चटर्जी	15 00
खुदा की बस्ती	शौकत सिद्दीकी	40 00
निवस्त्र	जितेन्द्र कुमार	10 00
प्यासा सागर	कृपाल वर्मा	25 00
स्वप्न दश	योगेश गुप्त	18 00
शहर वही है	सुरेश सेठ	25 00
बात एक औरत की	कृष्णा अग्निहोत्री	25 00

धर्मेंद्र गुप्त

प्र॰ ाशित कृतियाँ

- नग ुर हँसता है (उपन्यास)
- नोन तेल लकड़ी ,,
- गवाह है शेखूपुरा ,,
- खुश ` और पत्तियाँ ,,
- चद्र पास हीन कहानियाँ (कहानी सग्रह)
- कथा-ान ,,
- तीस पात्रो का ससार ,,
- दस्तकें और आवाज ,,
- याचक तथा अ य कहानियाँ ,,
- सूत्रधार (नाटय सकलन) (सपा०)
- समकालीन जीवन सदभ और प्रेमचद ,,
- सघषशील लेखन की भूमिका रहबर ,

सप्रति विषयवस्तु त्रमासिक पत्रिका का सपादन।

सपक 'अक्षरवाडी', 274, राजधानी एन्क्लेव,
रोड नवर-44, शकूर बस्ती, दिल्ली-110034